वैश्विक संवाद GLOBAL DIALOGUE

3.2

14 भाषाओं में एक वर्ष में 5 अंक

समाजशास्त्र एक पेशे के रुप में

आन्द्रे बेतेइ
जैक्लिन कॉक

मध्य–पूर्व में राजनीति

मुस्तफा अतिर
सारी हनाफी
फैरास हम्मामी

पुर्तगाल में संकट के प्रति प्रतिक्रियाएं

जो सोएरो
डोरा फोन्सेका
मारिया लुईजा क्वारेस्मा

- > ताईवानी समाजशास्त्र के तिहरे मोड़
- > लघु राष्ट्र समाजशास्त्र
- > चिली में नैतिक मुद्दे
- > चिली में पर्यावरणीय राजनीति
- > सान्टियागो के केन्द्र में प्रवासियों का कब्जा
- > समाजशास्त्र का अन्तर्राष्ट्रीयकरण
- > क्या अमेरिकन समाजशास्त्र का ह्रास हो रहा है?
- > विखडंन से परे बाल्कान्स
- > अन्तरअनुशासनात्मकता
- > समाजशास्त्र तथा सामाजिक रुपान्तरण
- > वैश्विक सामाजिक आन्दोलन
- > यूएन में युवा भागीदारी
- > चित्र–लेख: वास्तविक बैडिक

सूचना पत्र

GD अंक 3 / क्रमांक 2 / फरवरी 2013
www.isa-sociology.org/global-dialogue/

International Sociological Association

> सम्पादकीय

एक असमान विश्व से सामना

मैं यह सम्पादकीय रामल्ला से लिख रहा हूँ जो कि पश्चिमी तट पर फिलिस्तीनी प्राधिकरण का प्रशासनिक केन्द्र है – एक ऐसा अपवाद वाला स्थान जो कि प्रभुत्व के नये आयाम खोलता है जो कि समाजशास्त्र के उत्पादन की परिस्थितियों को प्रभावित करता है तथा किसी भी मायने में इसके अध्ययन के उद्धेश्यों से कम नहीं है। यदि गाजा बोम्बिंग की तेज गति तथा डरावनी हिंसा का अनुभव करता है तो पश्चिमी तट मन्द हिंसा का अनुभव करता है – जिसे कि हम वैश्विक संवाद के इस अंक में जैकी कॉक की निर्मिति में – भौगोलिक बंटवारों, नाकों के बहुलिकरण, अतिक्रमण करती हुई दीवार जो कि फिलिस्तीनीयों को उनकी ही भूमि से निष्कासित करती है, एक दूसरे से अलग करती है, और यह सब षडयत्रं करते हैं एकतरफा इजरायली बस्तियों के विस्तार को बढावा देने में, के रुप में देखती हैं ।

पश्चिमी तट में जीवन अनिश्चितता एवं असुरक्षा से परिभाषित होता है और किसी भी मायनें में कम से कम विश्वविद्यालय में जीवन के रुप में तो नहीं है। लेकिन फिलिस्तीनी अपनी प्रतिरक्षा में उतने ही सक्षम हैं जितना कि इजरायली राज्य उनके प्रति नृशंस होने में। उदाहरण के लिए, अबु दिस (Abu Dis) स्थित अल–कुद्स (Al-Quds) विश्वविद्यालय ने एक विशिष्ठ प्रयोग जिसका कि नाम खेमो में परिसर (Campus in Camps) है – एक ऐसी परियोजना का प्रायोजन किया है जो कि शरणार्थी खेमों में नई विवेचनात्मक शिक्षा लायेगी। अलेजान्ड्रो पैटी, सैन्डी हिलाल और मुनीर फाशेह जिनका कि यह मौलिक विचार है, तथा चार खेमों के पन्द्रह युवा पुरुष तथा महिलाओं ने एक ऐसे ''सामुहिक शब्दकोष'' (collective dictionary) को विस्तार पूर्वक समाज विज्ञान की आधारभूत अवधारणाओं जैसे नागरिकता, सहभागिता, कल्याण, सम्पोषकता, ज्ञान, सम्बन्धों, सामान्यता आदि की समस्याओं को प्रस्तुत किया है, और जिन्हे स्थानीय तात्पर्यों के साथ मिलाया है। फ्रायरियन शिक्षा की इस गहन प्रक्रिया का रुपान्तरण किया है जिसमें कि अब खेमें को उत्पीडन के स्थान के रुप में नहीं देखा जाता बल्कि एक ऐसी राजनैतिक जगह के रुप में जिसे कि 1948 से निर्मित एवं पुर्ननिर्मित किया गया है।

जैसा कि वैश्विक संवाद के इस अंक में फैरास हम्मामी ने वर्णित किया है, अपवाद की स्थिती प्रभुत्वकर्ताओं को भी प्रभावित करती है। इजरायली राज्य स्वंय अपने विश्वविद्यालयों में भी मतभिन्नता का दमन करता है। हालांकि इजरायल ही इस क्षेत्र में तानाशाही शासन का एकमात्र उदाहरण नहीं है। मुस्तफा अतीर बतलाते हैं कि गद्धाफी के शासन के अर्न्तगत समाजशास्त्र करने का क्या तात्पर्य था और नये शासन के सम्मुख नयी चुनौतीयां जो यह प्रस्तुत करता है। इसी क्षेत्र में आगे बढते हुए चिली के समाजशास्त्री ओरियाना बर्नास्कोनी, अलेजान्ड्रो पैल्फिनी तथा कैरोलिना स्टेफोनी प्रजातान्त्रिक संक्रांति की सीमाओं तथा विरोधाभासों का वर्णन करते हुए बतलाते हैं कि किस प्रकार यह नैतिक मुद्धों, पर्यावरण तथा प्रवासन को प्रभावित करते हैं। प्रजातान्त्रिकरण का विषय माइकल सियाओ द्वारा ताईवानी समाजशास्त्र के तिहरे उत्थान के वर्णन के बारे में हमें सूचित करता है जो कि अमेरिकन सिद्धान्त एवं पद्धतियों के आयातीकरण से प्रारम्भ होकर अधिनायकवादी केएमटी पार्टी–राज्य की आलोचना की तरफ मुडता है और फिर समाजशास्त्रियों द्वारा प्रजातान्त्रिक आन्दोलन से जुडने के रुप में एक अतिवादी मोड ले लेता है। इस आशावादी दृष्टिकोण का विरोध करते हुए सु–जेन हुआंग छोटे देशों में सीमित शोध समुदायों द्वारा उत्पादित समाजशास्त्र पर शंका प्रकट करती है।

तथापि, इस प्रकार की रुकावटें समाजशास्त्रीय हस्तक्षेपों की नवाचारी तकनीकों को नहीं रोकतीं। जैसा कि हम जो सोएरो तथा डोरा फोन्सेका से ज्ञात करते हैं पुर्तगाली समाजशास्त्रियों ने मितव्ययी उपायों के विरुद्ध नवाचारी संघठनों का विकास कर लिया है। ये युवा समाजशात्री उन असमंजसों के प्रति कम चिन्तित हैं जिन्हें करण्ट सोशियोलोजी की सम्पादक एलोइजा मार्टिन ने इतने अर्थपूर्ण ढंग से वर्णित किया है। ये असमंजस हैं पेशेवर दुनियां जो कि उत्तर के प्रतिमानों से शासित होती है के परिचालन से। वो कहीं से भी लिये हुए ऐसे समाजशास्त्र को स्वीकार करने और पुर्ननिर्मित करने के लिए तैयार हैं जो कि तृतीय–दौर के बाजारीकरण और इसके राजनैतिक उपकरणों की विध्वंसकता को चुनौती देता हो।

> वैश्विक संवाद को आईएसए वैबसाइट पर 14 भाषाओं में देखा जा सकता है।
> प्रस्तुतियां (Submissions) burawoy@berkeley.edu पर प्रेषित की जा सकती हैं।

*भारत के अति विशिष्ठ समाज वैज्ञानिक **आन्द्रे बेतेइ** समाजशास्त्र एवं मानवशास्त्र के मध्य उलझे हुए सम्बन्धों पर विचारविमर्श कर रहे हैं और बतला रहे है कि किस प्रकार समाजशास्त्रियों को आलोचनात्मक स्वायत्तता बनाए रखनी चाहिये जब वो नीतिगत एवं सार्वजनिक क्षेत्रों में पदार्पण करें।*

*नारीवादी, पर्यावरणविद तथा समीक्षात्मक विचारक, **जैक्लिन कॉक** आज के दक्षिणी अफ्रीका में सर्वव्यापक मंद एवं विनाशक हिंसा की तरफ हमारा ध्यान आकर्षित करती हैं जो कि समाजशास्त्रीय विश्लेषण के लिए एक केन्द्रिय एवं आवश्यक विषय है।*

*सारी हनाफी के साथ एक साक्षात्कार में लीबिया के समाजशास्त्री **मुस्तफा अतिर** बता रहे हैं कि गद्दाफी के दमनात्मक शासन में एक समाजशास्त्री होने का क्या मतलब था तथा आज के लीबियन समाजशास्त्रियों के सम्मुख क्या चुनौतियां हैं।*

> Editorial

Editor:
Michael Burawoy.

Managing Editors:
Lola Busuttil, August Bagà.

Associate Editors:
Margaret Abraham, Tina Uys, Raquel Sosa, Jennifer Platt, Robert Van Krieken.

Consulting Editors:
Izabela Barlinska, Louis Chauvel, Dilek Cindoğlu, Tom Dwyer, Jan Fritz, Sari Hanafi, Jaime Jiménez, Habibul Khondker, Simon Mapadimeng, Ishwar Modi, Nikita Pokrovsky, Emma Porio, Yoshimichi Sato, Vineeta Sinha, Benjamín Tejerina, Chin-Chun Yi, Elena Zdravomyslova.

Regional Editors

Arab World:
Sari Hanafi, Mounir Saidani.

Brazil:
Gustavo Taniguti, Juliana Tonche, Pedro Mancini, Célia da Graça Arribas, Andreza Galli, Renata Barreto Preturlan, Rossana Marinho.

Colombia:
María José Álvarez Rivadulla, Sebastián Villamizar Santamaría, Andrés Castro Araújo.

India:
Ishwar Modi, Rajiv Gupta, Rashmi Jain, Uday Singh.

Iran:
Reyhaneh Javadi, Najmeh Taheri, Hamidreza Rafatnejad, Saghar Bozorgi, Zohreh Sorooshfar, Faezeh Khajehzadeh.

Japan:
Kazuhisa Nishihara, Mari Shiba, Kousuke Himeno, Tomohiro Takami, Yutaka Iwadate, Kazuhiro Ikeda, Yu Fukuda, Michiko Sambe, Takako Sato, Shohei Ogawa, Tomoyuki Ide, Yuko Hotta, Yusuke Kosaka.

Poland:
Mikołaj Mierzejewski, Karolina Mikołajewska, Jakub Rozenbaum, Krzysztof Gubański, Emilia Hudzińska, Julia Legat, Adam Müller, Tomasz Piątek, Anna Piekutowska, Anna Rzeźnik, Konrad Siemaszko, Justyna Witkowska, Zofia Włodarczyk.

Romania:
Cosima Rughinis, Ileana Cinziana Surdu.

Russia:
Elena Zdravomyslova, Anna Kadnikova, Elena Nikiforova, Asja Voronkova, Ekaterina Moskaleva, Julia Martinavichene.

Taiwan:
Jing-Mao Ho.

Turkey:
Aytül Kasapoğlu, Nilay Çabuk Kaya, Günnur Ertong, Yonca Odabaş, Zeynep Baykal, Gizem Güner.

Media Consultants:
Annie Lin, José Reguera.

Editorial Consultant:
Abigail Andrews.

> इस अंक में In This Issue

सम्पादकीय: एक असमान विश्व से सामना **2**

समाजशास्त्र का पेशा – एक व्यावहारिक दृष्टिकोण
आन्द्रे बेतेइ, भारत **4**

समाजशास्त्र का पेशा – मंद हिंसा की अनावृति
जैक्लिन कॉक, दक्षिण अफ्रीका **6**

> मध्य–पूर्व में राजनीति

तानाशाही के दौरान तथा उपरान्त लीबियन समाजशास्त्र
मुस्तफा अतिर, लीबिया से एक साक्षात्कार **8**

इजरायली विश्वविद्यालयों मे राजनैतिक संकट
फैरास हम्मामी, स्वीडन **11**

> पुर्तगाल में संकट के प्रति प्रतिक्रियाएं

दलितों का थिएटर–जन समाजशास्त्र का एक रुप ?
जो सोएरो, पुर्तगाल **13**

अनिश्चित परन्तु अलचीला
डोरा फोन्सेका, पुर्तगाल **15**

बलुआ दलदल में समाजशास्त्र
मारिया लुईजा क्वारेस्मा, पुर्तगाल **17**

> ताईवानी समाजशास्त्र

ताईवानी समाजशास्त्र के तिहरे मोड़
सिन–हुआंग माईकल सिआओ, ताईवान **19**

लघु राष्ट्र समाजशास्त्र की दुर्दशा
सु–जेन हुआंग, ताईवान **21**

> चिली के समक्ष प्रजातान्त्रिक चुनौती

चिली में नैतिक मुद्दे एवं वैयक्तिक स्वतन्त्रताएं
ओरियाना बर्नास्कोनी, चिली **23**

चिली में पर्यावरणीय राजनीति की सीमाएं
एलेजान्ड्रो पैल्फिनी, चिली **24**

सान्टियागो द चिली के केन्द्र में प्रवासियों का कब्जा
कैरोलिना स्टेफोनी, चिली **26**

> राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय

समाजशास्त्र के अन्तर्राष्ट्रीयकरण की चुनौती
एलोइजा मार्टिन, ब्राजील **28**

क्या अमेरिकन समाजशास्त्र का ह्रास हो रहा है ?
ब्रेनवेन लिचटेनस्टिएन, यूएसए **30**

> सम्मेलन

विखडंन से परे बाल्कान्स
स्वेतला कोलेवा, बुल्गारिया **32**

अन्तरअनुशासनीयता
क्लैरेन्स एम बातान, फिलीपीन्स **34**

समाजशास्त्र तथा सामाजिक रुपान्तरण
लैस्ली लोपेज, फिलीपीन्स **36**

वैश्विक आन्दोलन, राष्ट्रीय शिकायतें
बैंजामिन टैजेरिना, स्पेन **37**

> विशेष स्तम्भ

संयुक्त राष्ट्र में युवा भागीदारी
जोआनी रोड्रीग्युज, यूएसए **38**

चित्र–लेख: वास्तविक बैडिक
एरिन स्नाइडर, यूएसए **39**

> समाजशास्त्र का पेशा एक व्यावहारिक दृष्टिकोण

आन्द्रे बेतेइ, दिल्ली विश्वविद्यालय, भारत

आन्द्रे बेतेइ को एक उपयुक्त तर्क की पृष्ठपभूमि के साथ भारत का सर्वाधिक विद्धान पुरूष कहा जाता है। अपने अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रकाशन 'जाति, वर्ग एवं शक्ति (कास्ट, क्लास एण्ड पावर)' के साथ बेतेई ने बैबरवादी पद्धति शास्त्र को एक मानवशास्त्रीय गॉव अध्ययन में केन्द्रीय स्थान दिया। बेतेइ ने असमानता के लगभग प्रत्येक पक्ष एवं सम्बद्ध जनपक्षों जो व्यापक परिदृष्य लिये हुए हैं, कुछ न कुछ अवश्य लिखा है। उनके लेखन को प्रत्येक स्तर पर न केवल सराहा गया है अपितु उसे व्यापक स्वीकृति मिली है। उन्हें अनेक पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है। बेतेई, भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एस एस आर) के अध्यक्ष रहे हैं। बेतेइ ने जाति आधारित आरक्षण में वृद्धि के मुद्दे पर प्रधानमंत्री के राष्ट्र ज्ञान आयोग से अपना त्याग पत्र दिया। वे एक सार्वजनिक समाजशास्त्री हैं और साथ ही वे कठोर पेशेवर प्रतिबद्धताओं के धनी हैं। सभी प्रमुख समाचार पत्रों में उनके लेख प्रकाशित होते रहते हैं साथ ही जनमत एवं जननीति जब भी विवादास्पद रूप लेती हैं, बेतेई अपने विचारों को व्यक्त करते हैं जो कि समाजशास्त्रीय ज्ञान के साथ सार्वजनिक होती है।

आन्द्रें बेतेइ का हाल ही में दिल्ली में लिया गया चित्र।

समाजशास्त्र को एक पेशे (वोकेशन) के रूप में ग्रहण करने के लिए आवश्यक है कि वह इकाई एक विशिष्ट बौद्धिक विषय के रूप में समाजशास्त्र को अपनाये और इस विशिष्टता की निरन्तरता को बनाये रखे। इसके साथ ही यदि हम समाजशास्त्र को केवल एक जीवन–वृत्ति (करियर) न मानकर पेशे के रूप में विकसित करने के इच्छुक हैं तो विषय के तकनीकी उपकरणों पर स्वयं को केन्द्रित करना ही पर्याप्त नहीं है हालांकि यह पक्ष महत्वपूर्ण है और इसे हल्के ढ़ंग से नहीं लिया जा सकता। एक बौद्धिक विषय के रूप में समाजशास्त्र का विकास अवधारणाओं, पद्धतियों एवं सिद्धान्तों के व्यापक समग्र से हुआ है हालांकि यह समग्र संगठित रूप से अन्तः सम्बद्ध ता को व्यक्त नहीं करता। यह समूचा ढीला ढाला/असंगठित व्यापक समग्र समाजशास्त्र को व्यवहार में लाने वाले प्रत्येक समाजशास्त्री के लिए एक मूल्यवान स्त्रोत है।

समाजशास्त्र को सामान्य समझ से पृथक करना आवश्यक है। सामान्य समझ अपने क्षेत्र व दृष्टिकोण में सीमित होती है साथ ही यह ऐसे अनेक अनुमानों को सम्मिलित करती है जिनका परीक्षण नहीं किया गया है। ऐसे अनुमानों को आधार बना कर दिन प्रतिदिन की प्रघटनाओं का विवेचन व विश्लेषण किया जाता है। समाजशास्त्र सामान्य समझ के विरूद्ध नहीं जाता। परन्तु यह समाज की क्रियाशीलता व सक्रियता को समझने के लिए व्यापक एवं गहन दृष्टि को अपनाते हुए अनेक सीमाओं के परे जाता है। समाजशास्त्र की विषय वस्तु इस प्रकार की है कि उसे सामान्य समझ से जुड़े अनुमानों एवं मूल्यांकन से पृथक करना अत्यन्त कठिन है शायद यह अंश भौतिकी (पार्टिकल फिजिक्स) एवं मालीक्यूलर जीव विज्ञान के साथ पृथक करने से ज्यादा कठिन है। साथ ही सामयिक मुद्दे समाजशास्त्र के परिवेश के लिए अत्यन्त उपयोगी जुड़ाव रखते हैं हालांकि इन सामयिक मुद्दों पर समाजशास्त्री के दृष्टिकोण एक पत्रकार के दृष्टिकोण से भिन्न होते हैं।

एक बौद्धिक विषय के रूप में समाजशास्त्र को तीन विशेषताओं के संदर्भ में अवलोकित करना चाहिए (i) यह एक आनुभविक विज्ञान है (ii) यह एक व्यवस्थित विज्ञान है (iii) यह एक तुलनात्मक विज्ञान है।

>>

एक आनुभविक विज्ञान के रूप में समाजशास्त्र में मूल्य निर्णयों एवं वास्तविकता के निर्णय एवं 'क्या होना चाहिए' के प्रश्न तथा 'क्या है' के प्रश्नों के मध्य विभेद करने की आवश्यकता है। यह निश्चित है कि समाज के अध्ययन में प्रतिमानों एवं मूल्यों का अध्ययन आवश्यक है परन्तु समाजशास्त्री मूल्यों का अध्ययन विवेचनात्मक दृष्टि से करते हैं, वे आदर्शात्मक दृष्टि से इसका अध्ययन नहीं करते। आगे हम यह भी कह सकते हैं कि समाजशास्त्री सामाजिक प्रक्रियाओं के मध्य की अन्तः सम्बद्धता का व्यवस्थित रूप से परीक्षण करते हैं। यह परीक्षण बिना इस पक्ष को ध्यान में रखकर किया जाता है कि क्या यह अन्तः सम्बद्ध ता मूलतः सहयोगी है अथवा मूलतः असहयोगी है (अथवा सद्भावना एवं गैर सद्भावना मूलक है)। एक तुलनात्मक विज्ञान के रूप में समाजशास्त्र सभी मानव समाजों का अध्ययन एवं अन्वेषण करता है तथा अवलोकन को पर्याप्त स्थान देता है। समाजशास्त्री अपने समाज एवं अन्य समाजों का इस संदर्भ में अध्ययन करते हैं।

तुलनात्मक पद्धति के साथ मेरी प्रतिबद्धता ने मुझे समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानव शास्त्र के मध्य की एकता का सशक्त पक्षधर बनाया है। अधिकांश भारतीय, भारतीय समाज एवं संस्कृति का अध्ययन करते हैं परन्तु भारत इतना विशाल है तथा यहाँ की जनसंख्या में इतनी विविधता है कि सामाजिक क्रमों की समस्त प्रणालियों का एक ही देश के अन्तर्गत अध्ययन किया जा सकता है। भारत में स्वाभाविक प्रवृत्ति है जिसके अनुसार समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानवशास्त्र के मध्य की एकता को स्वीकार कर अध्ययन को संचालित करते हैं। जबकि पश्चिम में ''विकसित/आधुनिक'' समाजों के अध्ययन को समाजशास्त्र विषय में तथा पूर्व–साक्षर, जनजातीय अथवा कृषक समुदायों के अध्ययन को सामाजिक मानवशास्त्र से सम्बद्ध कर दोनों विषयों के मध्य पृथक्करण किया जाता है।

तुलनात्मक पद्धति के प्रति मेरी प्रतिबद्धता मुझे इस दृष्टिकोण के प्रति संशयात्मक बनाती है कि भारतीयों को भारत का समाजशास्त्र विशिष्ट रूप में विकसित करना चाहिए ताकि पश्चिम के अन्वेषण एवं विश्लेषण की बाधाओं से स्वयं को मुक्त किया जा सके। यह मत अधिकांश भारतीय समाजशास्त्री स्वीकारते हैं व इसका समर्थन करते हैं। समाजशास्त्र का सामान्य परिदृश्य/प्रारूप भले ही यूरोप एवं अमेरिका में उत्पन्न हुआ हो, यह भी सम्भव हैं कि इन समाजों से उभरे विचारों एवं अनुमानों/पूर्व धारणाओं के कारण पूर्वाग्रह भी अस्तित्व में आये हों पर इस तर्क को नहीं स्वीकारा जा सकता कि उत्पन्न परिदृश्य/प्रारूप इतना कठोर एवं गैर लचीला है कि इसमें परिवर्तन नहीं किया जा सकता। वास्तव में यह प्रारूप/परिदृश्य अनवरत रूप से बदलता रहा है एवं मैंने स्वयं असमानता के विषय में जो भी लिखा है, वह इस अपेक्षा के साथ लिखा है कि भारत में तथा भारत के बाहर विद्यार्थी इसका अध्ययन करेंगें।

एक महत्वपूर्ण अकादमिक संस्थान में लम्बे समय तक स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को पढ़ाते हुए मुझे एवं मेरे सहयोगियों को भारत में इस कारण संघर्ष करना पड़ा कि कैसे ''समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों'' एवं ''भारत का समाजशास्त्र'' के मध्य सद्भावना/सहयोगमूलक अन्तः समबद्धता उभरे। ''सिद्धान्तो'' को पढ़ाते समय विद्यार्थियों को मार्क्स, वेबर, दुरखाइम, पार्सन्स, मर्टन इत्यादि के विचारों को प्रेषित किया जाता है जबकि भारतीय समाज के अध्ययन में गांव, जाति एवं संयुक्त परिवार इत्यादि केन्द्रिय अवयव हैं। अतः स्वाभाविक है कि विद्यार्थियों को इन दोनों विषय वस्तुओं के मध्य समन्वय बैठानें में कठिनाई होती है। अपनी शिक्षण अवधि के दौरान मैंने एक उपागम को विकसित किया जिसे मैं ''समाजशास्त्रीय तार्किकता'' की संज्ञा देता हूँ। एक बौद्धिक विषय के रूप में समाजशास्त्र की परिभाषायी विशेषताओं का विश्लेषण करने के उपरान्त मैं अनेक विशिष्ट मुद्दों (टापिक्स्) की चर्चा करता हूँ। सामान्यतः मैं राजनीति से स्वयं को प्रारम्भ करता हूँ और 'समाजशास्त्र के लिए राजनीति एक विषय के रूप में'' व्याख्यान को विस्तार देता हूँ। हम सब जानते हैं कि राजनीति विभिन्न प्रकृति के अनेक लोगों के लिए रूचिकर है। पर मैं यह चर्चा करता हूँ कि ऐसा क्या विशिष्ट है जिसके कारण राजनीति की समझ के लिए समाजशास्त्र की समझ आवश्यक है। यही सवाल धर्म के विषय में किया जा सकता है। आस्थावादियों एवं दार्शनिकों के लिए धर्म सदैव एक लम्बे समय से एक गम्भीर बौद्धिक मुद्दा रहा है। यह मुद्दा समाजशास्त्र की उत्पत्ति के पूर्व से रहा है और धर्म एक बौद्धिक विषय का रूप ले चुका था। क्या समाजशास्त्र ने धर्म की समझ के लिए कुछ नवीन पक्षों को प्रस्तुत किया? हम इस प्रकृति के सवाल परिवार, नातेदारी, विवाह एवं अन्य अनेक मुद्दों के विषय में भी कर सकते हैं।

समाजशास्त्रीय तार्किकता के विचार का प्रयोग मैंने समाजशास्त्रीय अन्वेषणों की परख एवं उन अध्ययनों के लिए किया जिन्हें व्यापक जनता तक प्रेषित किया जा सके। मेरा मत है कि समाजशास्त्री को अपने व्यवसाय हेतु लिखना चाहिए पर केवल अपने व्यवसाय के लिए नहीं लिखना चाहिए। उसका यह भी दायित्व है कि वह जनता के बीच में व्यापक रूप से पहुँचे। अतः विषय की शोध पत्रिकाओं में आलेखों के अतिरिक्त मैंने भारत के कुछ प्रमुख समाचार पत्रों में सम्पदाकीय पृष्ठों पर महत्वपूर्ण लेख लिखे। द टाइम्स ऑफ इण्डिया, द हिन्दु, द टेलीग्राफ की इस संदर्भ में चर्चा की जा सकती है। मैंने इन दैनिक समाचार पत्रों का कभी–कभी ही प्रयोग किया है। परन्तु मैं एक पत्रकार की भॉति लेख लिखने की प्रणाली की उपेक्षा करता हूँ। पत्रकार एक दिन से अगले दिनों की घटनाओं पर व्यवस्थित टिप्पणी करते हैं जो विस्तृत होती है पर वे ऐतिहासिक व समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्यों की व्यापकता पर बल नहीं देते।

मेरा स्वयं के बारे में हमेशा यह मत हैं कि मैं एक समाजशास्त्री हूँ तथा नैतिकतावादी नही हूँ। एक समाजशास्त्री के रूप में मेरी विशेष रूचि असमानता के तुलनात्मक अध्ययन पर रही। यह सब को ज्ञात है कि असमानता भारतीय समाज में गहरायी तक समायी एक विकृतिमूलक विशेषता है। शिक्षित भारतीय असमानता के अवगुण को नैतिकता के संदर्भ से व्यक्त करता है और समानता के गुणों के प्रति स्नेह की अभिव्यक्ति करता है। परन्तु जनता के मध्य भर्त्सना करके असमानता की उपस्थिति को समाप्त नहीं किया जा सकता। मैंने एक लम्बा समय असमानता के विभिन्न स्वरूपों एवं आयामों को समझने में लगाया है एवं उन सामाजिक प्रवाहों को समझा है जिनसे इन स्वरूपों व आयामों को बदला जा सकता है या उन्हें रूपान्तरित, निर्बल एवं पुनः मजबूती प्रदान की जा सकती है। मैंने हमेशा प्रयास किया है कि समानता एवं असमानता के प्रति एक व्यावहारिक अभिवृत्ति अपनायी जाये न कि इसे आदर्श एवं भाग्यवादिता के साथ जोड़ दिया जावे। मेरी राय में आदर्श/स्वप्न एवं भाग्यवादिता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। ■

> समाजशास्त्र का पेशा
मन्द हिंसा की अभिव्यक्ति

जैक्लिन कॉक, विटवाटर्सरेण्ड विश्वविद्यालय, जोहान्सबर्ग, दक्षिण अफ्रीका

जैकी कॉक का विभिन्न मुद्दों से जुड़ाव अन्य समाजशास्त्रियों की तुलना में अधिक है। दक्षिण अफ्रीका के एक प्रमुख समाजशास्त्री के रूप में जैकी कॉक अनवरत रूप में हिंसा एवं असमानता के मध्य के सम्बन्धों की गहन पड़ताल में सलंग्न है। उनके प्रमुख अकादमिक योगदान में 'मेड्स एण्ड मैडम्स' है जिसमें गृहकार्य में संलग्न कर्मियों का नारीवादी विश्लेषण है। इसके साथ ही 'कर्नलस् एवं कॉडर' में लिंग एवं युद्ध के मुद्दों की पड़ताल की गयी है। जैकी कॉक ने 'द वार अगेन्स्ट अवरसैल्वस्' में पर्यावरणीय अन्याय के पक्षों को उभारा है। जैकी कॉक ने समाजशास्त्र को हमारे दौर की मुख्य अन्याय प्रणालियों को सामने लाने के लिए प्रयुक्त किया है। ये अन्याय प्रणालियाँ दक्षिण अफ्रीका एवं उसके परे के परिवेश दोनों में विद्यमान हैं।

जैक्लिन कॉक, दक्षिण अफ्रीका में विटवाटर्सरेण्ड विश्वविद्यालय में एक सत्र की अध्यक्षता करते हुए।

सामाजिक संरचना एवं प्रक्रियाएं जो हमारे अनुभवों को आकार देती हैं, सामान्यतः अदृश्य/रहस्यमयी होती हैं अथवा परिपाटीय विश्वास, शक्तिशाली हितों एवं शासकीय व्याख्याओं द्वारा संकुचित हो जाती हैं। इनमें सर्वाधिक खतरनाक में से एक है कि हिंसा को कैसे सामान्यतः एक ऐसी घटना व क्रिया के रूप में समझा जावे जो समय के संदर्भ में तत्काल एवं परिवेश के संदर्भ में विस्फोटक है। परन्तु मानव की क्षमता मूलक सम्भावनाओं का सर्वाधिक क्षय ''मन्दहिंसा'' के स्वरूपों द्वारा होता है जो हर समय किसी न किसी रूप में विद्यमान हैं, साथ ही विस्तार लेते रहते हैं। मन्द हिंसा आन्तरिक, ड्रामाई स्वरूप रहित एवं सापेक्षिक रूप में अदृश्य होती है। मन्द हिंसा से मेरा अभिप्राय राब निक्सन की 'लम्बी मौत' (धीरे धीरे मौत की तरफ अग्रसरता) की प्रक्रिया के समकक्ष है। यह एक ऐसी हिंसा है जो धीरे धीरे उभरती है और हम सब की नजरों से परे है अर्थात् उस पर ध्यान नहीं दिया जाता। यह हिंसा एक लम्बे समय के उपरान्त विध्वंस करती है जो समय एवं स्थान के संदर्भ में चारो तरफ फैल जाती है। इस हिंसा में लड़ते हुए सामाजिक इकाई थकती है और कमजोर होती जाती है और इस कारण सामान्यतः लोग इसे कहीं से भी हिंसा की संज्ञा नहीं देते। पर्यावरणीय प्रदूषण एवं कुपोषण इस मन्द हिंसा के स्वरूप हैं। ये दोनों उदाहरण सापेक्षिक रूप से अदृश्य हैं एवं इसमें ऐसे गम्भीर प्रकृति के नुकसान सम्मिलित हैं जो समय की गति के साथ धीरे धीरे बढ़ते जाते हैं।

खाद्यान्न जैसे मुद्दे में अनेक पक्ष जैसे असमानता, पारिस्थितिकीय परिवर्तन, वैश्वीकरण, भूख, खाद्य वस्तुओं के विषय में भ्रामक अनुमान, नगरीयकरण एवं स्वास्थ्य को सम्मिलित किया जाता हैं। खाद्यान्न का सामान्यतः हिंसा से सम्बन्ध नहीं है सिवाय इसके कि विश्व के लगभग 30 नगरों में खाद्य वस्तुओं की कीमतों में बेतहाशा वृद्धि के कारण दंगे एवं सामाजिक विरोध प्रदर्शन हुए। यह सब सन् 2008 में हुआ। तथापि कुपोषण में मन्द हिंसा सम्मिलित है क्योंकि मानव शरीर पर इसके हानिकारक प्रभाव अदृश्य/छिपे हुए होते हैं और यह प्रभाव धीरे धीरे मनुष्य की क्षमताओं एवं शक्ति में क्षय की स्थितियों को बढ़ाता जाता

है। विश्व की लगभग एक अरब जनसंख्या कुपोषण का शिकार है, एक भयावह यथार्थ है इसके साथ ही समकालीन दक्षिण अफ्रीका मे छह वर्ष की आयु से कम आयु के प्रत्येक चार बच्चों में से एक भयावह कुपोषण का शिकार होने के कारण शारीरिक एवं बौद्धिक दृष्टि से मन्द व असन्तुलित विकास का शिकार है।

''खाद्यान्न असुरक्षा'' एक व्यापक/विशद एवं विवेचनात्मक अव–धारण के रूप में भूख एवं कुपोषण के मध्य के अन्तर को बाधित करता है। परिपाटीय मीडिया सोमालिया में भंयकर सूखे के शिकार अत्यन्त कमजोर/कृशकाय लोगों की तस्वीरें प्रस्तुत करता है। लेकिन खाद्यान्न असुरक्षा हम सब की समझ से ज्यादा जटिल व खतरनाक मुद्दा है और पोशाक तथा शरीर में विद्यमान फैट की परतों में भी छिपा हुआ है। निर्धन शहरी जनता में यह मोटापे के रूप में भी उभरता है जो कि सस्ते भोजन पर आश्रित हैं। इस भोजन में कैलौरीज उच्च या प्रचुर मात्रा में हैं परन्तु विटामिन एवं खनिज की उसमें कमी है। यह स्थिति दृष्य नहीं है।

पर्यावरणीय प्रदूषण का मुख्यतः सम्बन्ध पारिस्थितिकीय परिवर्तन से है जो कि कार्बन उत्सर्जन का परिणाम है। पर्यावरणीय प्रदूषण में हो रही तीव्र वृद्धि अनेक विध्वंसकारी प्रभावों को उभार रही है, दक्षिण अफ्रीका में विशेषतः यह वृद्धि निर्धन जनता के लिए अनेक नकारात्मक प्रभावों को व्यक्त करती है। ह्रास का एक बड़ा भाग 'मन्द हिंसा' के स्वरूप को स्थापित करता है जिसका विस्तार होता जा रहा है, यह स्वरूप भी अन्दरूनी प्रकृति एवं सापेक्षिक दृष्टि से अदृष्य रूप का है। यहॉ तक कि इसके बाहय प्रभाव (अधिकारिक स्वीकृति) भी धीरे धीरे विस्तार लेते हैं, भोपाल एवं चैरनोबिल में हुई भयावह त्रासदियॉ इसके उदाहरण हैं।

जोहान्सबर्ग के नजदीक में एक क्षेत्र है जिसे स्टील घाटी की संज्ञा दी जाती है। एक स्टील उद्योग द्वारा उत्पन्न किया गया प्रदूषण जो धीरे धीरे बढ़ रहा है, भयानक परिणामों की तरफ संकेत दे रहा है। जहरीली वस्तुओं/गैंसों से जुड़ा प्रदूषण विस्तार लेते हुए ''मौन हिंसा'' को गहराता जा रहा है जिसका प्रभाव भूमि रूप (लैण्डस्केप) पर पड़ रहा है, हवा एवं भूजल में यह प्रदूषण धीरे धीरे फैल रहा है और अनेक स्थितियों में आन्तरिक/अन्दरूनी रूप में यह आनुवांशिक दोष, कैंसर, किडनी कार्य प्रणाली की समाप्ति के दृष्टान्तों के साथ पशुओं एवं मनुष्यों में व्यक्त होता है।

प्रदूषण का बड़ा हिस्सा शरीर एवं नदियों में छिपे रूप में विस्तार लेता है। यह छिपा रूप न तो हम ऐन्द्रिक प्रत्यक्षीकरण और न ही अपनी समझ के माध्यम से जान पाते हैं। यह अदृष्य तरीकों से क्रियाशील होता हैं एवं उनकी अभिव्यक्ति अथवा उनका खुलासा जिस प्रक्रिया पर आधारित होता है उसे उलरिक बैक 'सामाजिक मान्यता' (सोश्यल रिकग्निशन) की संज्ञा देते हैं। यह समाजशास्त्र का लक्ष्य है विशेषतः उन प्रघटनाओं के संदर्भ में यह जरूरी है जो स्टील घाटी (स्टील वैली) जैसी हैं। इस तरह की घटनाओं में मानव जीवन के लिए उत्पन्न खतरों को सउद्देश्य छिपाया जाता है। स्टील उद्योग प्रबन्धन की शक्ति को परिवहन करने वाले एवं अक्षम प्रशासनतन्त्र का समर्थन प्राप्त है जिसके परिणास्वरूप विभिन्न कारणों से होने वाले नुकसान से जुड़े उत्तरदायित्वों की उपेक्षा की जाती है और बेईमानी के प्रारूप का अनुकरण किया जाता है।

परन्तु मानव मुक्ति के लिए समाजशास्त्र की सम्भावनाएं ''उभारने'' (एक्सपोजर) के परे ''विवेचन'' तक जाती हैं। ''मन्द हिंसा'' के जो दोनों उदाहरण इस आलेख में दिये गये हैं के अनेक सामाजिक कारण एवं सामाजिक परिणाम हैं। पर्यावरणीय प्रदूषण के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि पर्यावरण के बाहय कारण की कीमत शक्तिशाली कारपोरेशन (निगम) के द्वारा लगायी गयी है जबकि कुपोषण के संदर्भ में खाद्यान्न क्षेत्र का ध्यान मानव आवश्यकता की तरफ न होकर लाभ की तरफ है।

''मन्द हिंसा'' की अवधारणा वर्ग से सम्बद्ध न हो ऐसा नहीं हैं। पर्यावरणीय प्रदूषण एवं कुपोषण से सम्बद्ध ''मन्द हिंसा'' का सर्वा–धिक प्रभाव निर्धन जनता पर पड़ता है। वे सामान्यतः एकल व्यक्तियों की तरह अकेले संघर्ष करते हैं। व्यापक सामाजिक प्रक्रियाएं किस प्रकार व्यक्ति के अनुभवों को आकार देती हैं की अभिव्यक्ति सी. राइट मिल्स की समृद्ध विरासत का भाग है। ''समाज शास्त्रीय कल्पना'' (सोशियोलोजिकल इमेजिनेशन) का निहितार्थ है कि समाज शास्त्री वास्तविक जीवन में सामान्य व्यक्तियों के साथ जुड़े हैं। (और मैं यह तर्क देना चाहूँगी कि मुख्य मुद्दे पोषित भोजन एवं स्वच्छ जल हैं)

माइकल बुरावे इस पक्ष को दो स्वरूपों के अन्तर्गत विवेचित करते हुए सैद्धान्तिक संदर्भ देते हैं। ये दो सैद्धान्तिक पक्ष ''विस्तृत एकल पद्धति'' एवं ''जन समाजशास्त्र'' हैं। विस्तृत एकल पद्धति में अनुसंधानकर्त्ता एवं ''अनुसंधानित'' (रिसर्चड्) के मध्य के वार्तालाप हैं जो प्रतिष्ठामूलक, संवेदनशील एवं प्रत्यावर्तनीय हैं। समाजशास्त्रियों की इच्छा होनी चाहिए कि वे अनुभवों का विस्तार उन लोगों के जीवन में करें जिन पर वे अनुसंधान कर रहे हैं। उनकी इच्छा होनी चाहिए कि वे समय का बड़ा भाग (अनुसंधान अवधि) लोगों (जिन पर अनुसंधान कर रहे हैं) के घरों, खानों एवं उद्योगों में व्यतीत करें। यह स्थिति उस चरम बिन्दु की द्योतक होगी जहॉ निम्न वर्गीय संदर्भों के साथ सामातिक प्रक्रियाओं को उभारा जाता है और उनका विश्लेषण अत्यन्त कठोरता के साथ किया जाता है। ठीक इसी तरह ''सावयवी जन समाजशास्त्र'' ''अदृश्य को दृष्य बनाती है'' एवं ''दृष्य, मजबूत, सक्रिय एवं एक स्तर तक प्रतिजन'' के साथ घनिष्ठ सम्बद्धता के साथ कार्य करती है। यह स्थिति सामूहिक कार्य पर बल देती है और सी. राइट मिल्स के विचार ''व्यक्ति /एक विचारक या बौद्धिक जन की प्रमुखता पर बल'' को अस्वीकृत करती है। वास्तव में आज के इस अत्यधिक व्यक्तिवादी नव्य उदारवादी दौर में निर्धन एवं शोषित के प्रति समाजशास्त्रियों को अपनी एकजुटता स्थापित करनी चाहिए।

यदि ऐसा किया जाता है तो समाजशास्त्र उन सामाजिक आन्दोलनों व सामूहिक क्रियाओं की सक्रियता को मजबूती देता है जो 'खाद्यान्न सम्प्रभुता' एवं ''पर्यावरणीय न्याय'' के इर्द गिर्द हैं। सामाजिक न्याय के प्रति प्रतिबद्धता को प्रोत्साहित करने वाले वे आन्दोलन निगमीय शक्तियों को चुनौती देते हैं एवं उन वैकल्पिक सामाजिक क्रमों को प्रोत्साहित करते हैं जिनका ध्येय मानव मुक्ति को बढ़ावा देना है। ■

तानाशाही के दौरान तथा उपरान्त लीबियन समाजशास्त्र :

मुस्तफा अतिर के साथ एक साक्षात्कार

लीबियन समाजशास्त्री डा. मुस्तफा अतिर, जो गद्दाफी के शासन से जीवित बच सके।

डा. मुस्तफा ओ. अतिर ट्रिपोली विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र के प्रोफेसर हैं, सेण्टर फॉर सस्टेनेबल डेवलेपमेण्ट रिसर्च के निदेशक और अरब समाजशास्त्रीय परिषद के पूर्व अध्यक्ष हैं। ये लीबियन समाज पर आधुनिकीकरण और तेल के प्रभावों विषय पर कई पुस्तकें और लेख लिख चुके हैं। बेरूत में स्थित अमरीकी विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र के प्रोफेसर तथा आई.एस.ए. कार्यकारिणी, 2010–14 के सदस्य सारी हनाफी ने इनका साक्षात्कार लिया।

सा.ह.: क्या आप मुझे लीबिया में अपनी शैक्षणिक राह के बारे में बता सकते हैं?

मु.अ.: मुझे लीबिया विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ लिबरल आर्ट्स से प्रमुख विषय के रूप में समाजशास्त्र के साथ बी.ए. की उपाधि मिली। 1962 में, मेरे विश्वविद्यालय ने मुझे अमरीका भेजा जहाँ मैंने पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय से एम.ए. और 1971 मे मिन्नेसोटा विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की डिग्री प्राप्त की। मैं फिर लीबिया लौट आया जहाँ मैं तब से ही पढ़ा रहा हूँ और साथ ही कई विश्वविद्यालय पदों जिसमें निदेशक स्कूल ऑफ लिबरल आर्ट्ज, निदेशक, विश्वविद्यानय शोध केन्द्र और विश्वविद्यालय अध्यक्ष शामिल हैं पर आसीन हूँ।

सा.ह.: मैंने अरब एकता अध्ययन केन्द्र द्वारा आयोजिक एक कार्यशाला में भाग लिया। कुछ वामपंथी और राष्ट्रवादियों ने लीबिया में NATO **के हस्तक्षेप की आलोचना की जबकि लीबियन प्रतिभागी सर्वसम्मति से उसको समर्थन दे रहे थे। आपका क्या मत हैं?**

मु.अ.: 17 फरवरी 2011 को लीबिया में अरब स्प्रिंग प्रारम्भ हुआ। यह पूर्व में स्थित बेंगाजी शहर में शांतिपूर्ण प्रदर्शन के रूप में प्रारम्भ हुआ। सरकार ने सभी प्रकार के सैन्य हार्डवेया के साथ प्रचंड रूप से उत्तर दिया। परन्तु निहत्थे प्रदर्शनकारियों के विरूद्ध अत्याधिक हिंसा का प्रयोग भी बेंगाजी प्रदर्शन, जो देश के सभी हिस्सों में फैल गया, को नहीं रोक पाया। शायद ही कोई शहर या कस्बा बचा होगा और आंदोलन एक जन क्रांति के रूप में दिखने लगा। कुछ समय पश्चात् शासन ने देश के कुछ हिस्सों, जिसमें राजधानी भी सम्मिलित थी को

>>

अपने नियंत्रण में करने में सफलता प्राप्त की जबकि सभी पूर्वी और पश्चिम व दक्षिण के कुछ हिस्से बागियों/विद्रोहियों के हाथ में रहे। शीघ्र ही देश गृह युद्ध में लिप्त हो गया। यद्यपि विद्रोहियों का सैन्य हार्डवेयर, गददाफी की सुरक्षा बटालियनों की फौजी शक्ति जो भारी उपकरणों जैसे कवच, हवाई और तोपखाने और विदेशी किराये के सैनिकों से सुसज्जित थी, के सामने कुछ भी नहीं था। गददफी की सुरक्षा बटालियन द्वारा नागरिकों पर की गई क्रूरता और नुकसान को आधुनिक मीडिया ने पूरे विश्व के सामने उजागर करना संभव किया। शीघ्र ही संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने सदस्य देशों को लीबिया के उपर नो–फ्लाई जोन को स्थापित व लागू करने और नागरिकों पर हमलों के बचाव के लिए ''सभी आवश्यक उपायों' को इस्तेमाल करने के लिए अधिकृत करने वाला प्रस्ताव पारित किया। इसने NATO का हस्तक्षेप, जो हवाई और नौ–सेना आक्रमण तक ही सीमित था, का आगाज किया परन्तु जमीन पर लड़ाई सशस्त्र विद्रोही नागरिक सेना के लिये छोड़ दी गई। अंततः, 246 दिवसों पश्चात्, युद्ध खत्म हो गया। गद्दाफी जिद्दी और क्रूर था और यदि अंर्तराष्ट्रीय सैन्य हस्तक्षेप नहीं होता तो देश और उसके नागरिकों का नाश हो जाता।

सा.ह.: आप जैसा समाजशास्त्री अपने समाज के बारे में ज्ञान का निर्माण कैसे कर सकता है जब वह तानाशाही शासन के अधीन हो? और किस प्रकार के ज्ञान का आप सृजन कर सके?

मु.अ.: लीबिया में समाजशास्त्र पढ़ाना, स्वतन्त्र होना और पाठ्यक्रम को विचारधारा से प्रभावित होने से बचाना आसान कार्य नहीं था। अमरीकी विद्यालयों में शिक्षित होने के कारण मैं आनुभाविक शोध और परिमाणात्मक तकनीकों के साथ गहन रूप से जुड़ा था। समाजशास्त्र में मेरी दिलचस्पी मुख्यतः आधुनिकीकरण और सामाजिक परिवर्तन में थी। यह विषय क्षेत्र लीबीयन समाज के साथ बाकी अरब दुनिया के लिए भी प्रासंगिक है। लीबिया की लघु जनसंख्या एक दूसरे से निकटता से जुड़ी हुई जनजातियों में विभाजित है। चूंकि धन का अभाव नहीं था और मैं पीएच.डी. उपाधि प्राप्त पहला समाजशास्त्री था, मुझे किसी भी रूचि के विषय पर अध्ययन के लिए उच्च अधिकारियों तक पहुँचनें एवं पर्याप्त धन को प्राप्त करने में कोई कठिनाई नहीं हुई। झंझटों में पड़ने से बचने के लिए मैं दो विषयोंः धर्म और राजनीति से दूर रहा। हालांकि, मैंने कैदियों के मध्य शोध किया और कम से कम दो अवसरों पर निदर्श उनमें से निकला जो मुस्लिम ब्रदरहुड, और जिसे अरब अफगान के रूप में जाना गया, के साथ अपनी संबद्धता के कारण जेल में थे। यद्यपि, फण्ड सरकारी विभागों से मिले थे, फिर भी शोध निष्कर्षों को व्यवहार में लाना आवश्यक नही था क्योंकि शोध और निर्णय लेने के मध्य सम्बंध अत्यधिक कमजोर थे।

सा.ह.: क्या लीबिया के विश्वविद्यालयों ने गद्दाफी के सत्तावादी शासन वर्ग के करीबी बुद्धिजीवियों का शुद्धिकरण किया है?

एम.ए.: लीबिया में विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों को दो मुख्य श्रेणियों में वर्गित किया जा सकता हैः पहले समूह में वे थे जिन्होंने 1969 के गद्दाफी के सैन्य तख्ता पलट के पूर्व अपनी विश्वविद्यालयी शिक्षा प्राप्त की और उन्हें श्रेष्ठ छात्र होने के कारण विदेशों में छात्रवृत्ति मिली थी। करीबन सभी ने पश्चिमी विश्वविद्यालयों (अमरीकी, ब्रिटिश, जर्मन और फ्रैंच) में पढ़ाई की। इस समूह के सदस्य अपने पेशे के प्रति समर्पित हैं और इन्होंने विद्यार्थियों और अपनी विशेषता को काम में लेने में कोई कसर नहीं छोड़ी। जब गद्दाफी ने अपनी निजी विचारधारा जो बाद में ग्रीन बुक में प्रतिष्ठित हुई, की बात करनी शुरू की तब दूसरा समूह विद्यार्थी था। उन दिनों में लीबिया में कोई राजनैतिक दल नहीं थे परन्तु कुछ विश्वविद्यालयी छात्रों ने क्षेत्र के भिन्न राजनैतिक रूझानों के साथ स्वंय को संबद्धित कर लिया था। हालांकि गद्दाफी ने यह निर्णय लिया कि सभी, विशेषकर विश्वविद्यालय के छात्र, उसकी नई विचारधारा का अनुसरण करेंगे और कईयों ने किया भी। 1976 में उसकी विचारधारा को मानने वाले छात्रों को गद्दाफी ने आदेश दिया कि वे विश्वविद्यालय परिसरों को उन छात्रों से मुक्त करें जिन्हें वह प्रतिक्रियावादी मानता था। तुरन्त ही झगड़े शुरू हो गये और कई घायल या गिरफ्तार हुए जबकि अन्य को जबरदस्ती विश्वविद्यालय छोड़ कर जाना पड़ा। आने वाले वर्ष में, उसने अपने अनुयायियों को क्रान्तीकारी समितियों में संगठित करना शुरू किया। सदस्यों को गद्दाफी के कथनों को स्मरण, उसके कदमों का अनुसरण और कोई भी कार्य जिसका वह आदेश दे, जिसमें विश्वविद्यालय परिसरों में छात्रों को सार्वजनिक रूप से फांसी देना भी सम्मिलित था, करना आवश्यक था।

विश्वविद्यालय नियमों के अनुसार विशिष्ट दक्षता वाले छात्रों को ही विदेशों में स्नातक विद्यालयों में भेजा जाना चाहिए। परन्तु 1970 के उत्तरार्ध से क्रान्तीकारी समितियों के नेता बनने वाले छात्रों को विदेश में अध्ययन से पुरूस्कृत किया गया। अधिकांशतः का शैक्षणिक अभिमुखन नहीं था अतः वे स्तरीय विद्यालयों में प्रवेश की योग्यता नहीं रखते थे और उन्होंने पूर्वी–यूरोप या अरब देशों की तीसरी या चौथी श्रेणी के विश्वविद्यालयों से डिप्लोमा प्राप्त किया। लौटने पर उन्होंने गद्दाफी की विचारधारा को छात्रों और सामान्य जनता में फैलाने के लिए शिक्षण कार्य शुरू किया।अतः जब युद्ध के पश्चात् लीबिया के विश्वविद्यालय पुनः खुले तो इनमें से कुछ शिक्षक अपनी मर्जी से छोड़कर चले गये और अन्य को छोड़ने के लिए कहा गया परन्तु कुछ (नये शासन में उच्चाधिकारियों के साथ अपने सामाजिक संबंधों के कारण) अपने शैक्षिक पदों पर कायम रहने में सफल हुए। परिवार और जनजातीय (कबिलाई) सम्बन्ध कई बार कानून और नियमों को रोक देते हैं। ऐसा हमेशा होता रहा है, अभी भी है और आने वाले लम्बे समय तक होता रहेगा।

सा.ह.: क्या बुद्धिजीवियों ने लीबिया की क्रांति में कोई भूमिका निभाई है?

मु.अ.: लीबिया और साथ ही अन्य अरब देशों में जो हुआ, वह एक विद्रोह था जो क्रांति में बदल भी सकता था या फिर नहीं भी। बुद्धिजीवी आश्चर्य चकित हो गये। शुरूआत में यह आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी को इस्तेमाल करने वाले युवाओं का एक आंदोलन था। हालांकि 17 फरवरी की तारीख ट्यूनिशियन विद्रोह के पहले नियत थी। यह 2006 में उसी तारीख को बेंगाजी में हुए कत्ले आम से भी सम्बन्धित है। 2011 के पूर्व भी व्यक्तियों ने प्रदर्शन किया था परन्तु उनकी संख्या इतनी बड़ी नहीं थी और वे सुरक्षा शक्तियों द्वारा आसानी से बिखेरे जाते थे। 2011 के विरोध की योजना बनाते समय युवाओं ने फेसबुक के माध्यम से विचार और रणनीति पर चर्चा और विमर्श किया। शासन व्यवस्था इन गतिविधयों के बारे में भलीभांति जानती थी और किसी भी विद्रोह के लिए तैयार थी। ट्यूनिशिया और फिर मिस्र में होने वाली घटनाओं ने लीबिया के विद्रोह में अधिक लोगों को भाग लेने के लिए प्रेरित किया। यद्यपि शुरूआत बेंगाजी में हुई, ट्रिपोली और अन्य शहरों में व्यक्ति भाग लेने के लिए स्वयं को तैयार कर रहे थे। जिस चरम क्रूरता से शासन ने शांतिपूर्ण मार्च से निपटा, उसने पूरे देश में प्रतिक्रियाओं की एक श्रंखला को उत्पन्न किया। विद्रोह की निरन्तरा के साथ समाज के सभी तबकों के बुजुर्ग लोग, जिसमें बुद्धिजीवी भी थे, सम्मिलित होते गये। चूंकि शासन कई सारे विफल सैन्य तख्ता पलट प्रयासों और सभी प्रकार के अंतर्राष्ट्रीय दबाव से बच गया था, कई लीबिया के बुद्धिजीवी इस विचार को स्वीकार करने लगे कि कोई भी संभावित राजनैतिक विकास स्वयं शासन व्यवस्था के अन्दर से ही आना चाहिये।

सा.ह.: समाजशास्त्री के रूप में, आप लीबिया का भविष्य कैसा देखते हैं?

मु.अ.: विद्रोह के दौरान फैलने वाले नारे गद्दाफी को हटाने, शासन को बदलने और लोकतांत्रिक राजनैतिक व्यवस्था की स्थापना पर केन्द्रित थे। आप को यहाँ यह नहीं भूलना चाहिए कि लीबिया की वर्तमान जनसंख्या में केवल 12 प्रतिशत के अलावा सभी गद्दाफी के शासन के दौरान पैदा और बड़े हुए थे। इसका अर्थ है कि अधि–कांशतः सभी सक्रिय लीबिया के नागरिकों को यह शिक्षा दी गई थी कि उनकी राजनैतिक व्यवस्था विश्व में श्रेष्ठ है और उनका लोकतंत्र जिसमें कोई राजनैतिक दल, चुनाव और प्रतिनिधि नहीं हैं, ही केवल सच्चा लोकतंत्र है। सभी संचार सुविधाएँ राज्य के स्वामित्व में थीं और गद्दाफी के विचारों को प्रसारित करने के प्रति निर्देशित थीं। उद्देश्य था कि सभी लीबिया निवासियों को एक विचारधारा के पीछे पक्की तरह खड़ा किया जाए। लीबिया के विद्रोही व्यवस्था को बदलने और गद्दाफी से छुटकारा पाने में सफल रहे परन्तु मैं नहीं सोचता कि वे लोकतंत्र को स्थापित करने की योग्यता रखते हैं। सैंकड़ों अखबारों, दसियों टेलीविजन स्टेशनों और अनगिनत राजनैतिक दलों के साथ अंतरिम सरकार ने न्यायसंगत चुनाव करवाए परन्तु विद्रोहियों ने अपने शस्त्र नहीं डाले। अतः अब एक हजार से भी अधिक सशस्त्र समूह हैं जो स्वतन्त्र रूप से कार्य कर रहे हैं। वे अपने नेताओं द्वारा तय की गई किसी भी गतिविधि में भाग लेते हैः अपने जिले का पहरा देने और गिरफ्तार करने के लिए चैक पाईन्टस को चलाना और यहाँ तक कि लोगों से पूछताछ करना व उन्हें निजी कारागार में भेजना। इसके साथ, देश में कई उग्र धार्मिक समूह भी हैं जो धर्म की उनकी निजी व्याख्या को अन्य लोगों पर थोपने पर जोर डालते हैं। जब तक इस तरह के समूह कानून की परिधि के बाहर कार्य करेंगे, लोकतंत्र को स्थापित करना आकांक्षी सोच होगी।

सा.ह.: विद्रोह–पश्चात के लीबिया में समाजशास्त्र का क्या मिशन है?

मु.अ.: आज गद्दाफी द्वारा निषेधित विषयों पर शोध करना संभव हो गया है। बहुत सारे आनुभाविक तथ्य हैं जिनका पुनः विश्लेषण किया जा सकता है ताकि नये सैद्धान्तिक मॉडल विकसित किये जा सकें जिसमें 42 वर्ष चलने वाले राजनैतिक व्यवस्था की प्रवृत्ति से सम्बन्धित चर सम्मिलित हों। इसी के साथ, अरब स्प्रिंग ने शोध के नये क्षेत्र और दिशाओं को प्रस्तुत किया जिसमें लीबिया के समाज के भविष्य को आकार देने वाली शक्तियों को सम्बोधित किया : जैसे विस्तृत संचार (मीडिया), नये राजनैतिक खिलाड़ी, अंतर्राष्ट्रीय शक्तियाँ, इस्लामिक समूह और विदेशवासी। समाजशास्त्र का कार्य इसका वर्णन करना है कि कैसे ये सब भिन्न और विरोधी अवयव लीबिया के परिदृश्य को आकार देते हैं। मुझे इस बात में कोई शंका नहीं है कि लीबिया के समाजशास्त्री आने वाले कुछ समय तक पूर्णतया व्यस्त रहने वाले हैं। ■

> इजराइल के विश्वविद्यालयों में राजनैतिक संकट

फेरास हम्मामी, रॉयल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलोजी (KTH), स्टॉकहोम, स्वीडन

इजरायली राज्य अपने ही विश्वविद्यालयों के अध्यापन एवं पाठ्यक्रमों की निगरानी करता है।

इजराइल के कई विश्वविद्यालयों के स्टाफ के सदस्यों ने हाल ही में उच्च शिक्षा की इजराइली परिषद के द्वारा गुणवत्ता मूल्यांकन के लिए गठित उपसमिति द्व ारा बेन गुरियन विश्वविद्यालय के राजनीति एवं शासन विभाग पर 2013–14 के अकादमिक सत्र में छात्रों की भर्ती पर रोक लगाने के प्रस्ताव के विरोध में एक याचिका पर हस्ताक्षर किये। विजमान इंस्टीट्यूट ऑफ साईन्स के प्रोफेसर गिलाड हारन ने इस याचिका को इस तर्क के साथ प्रारम्भ किया, ''इजराइल की उच्च शिक्षा प्रणाली में शैक्षणिक आजादी गंभीर खतरे में है।'' याचिका पर हस्ताक्षर हालांकि सितम्बर में हुए थे, इजराइल की सरकार 1948 में इजराइल के यहूदी राज्य की स्थापना के साथ ही अपने विश्वविद्यालयों में अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता को सेंसर करती रही है। यह तारीख फिलिस्तिनियों के लिए नकबा (तबाही), ऐतिहासिक फिलीस्तीन की हानि, जातीय सफाई, विस्थापन, मित्रों और परिवारों की मौंत, सम्पत्ति की हानि और 1948 के पहले (बाद में इजराइल राज्य) यहूदी आतंकवादियों द्वारा नरसंहार को अंकित करती है। 27 से भी अधिक इजराइली विश्वविद्यालयों ने राजनैतिक और सैन्य गतिविधियों में प्रत्यक्ष भागीदारी के माध्यम से इजराइल की रंगभेद नीति का लगातार समर्थन किया हैं।

> इजराइल के विश्वविद्यालयों में दमघोटू राजनैतिक असंतोष

बेंजामिन नेतान्यहू की दक्षिण पंथी सरकार ने मानवाधिकार समूहों, मिडिया और न्यायपालिका द्वारा घरेलू आलोचना को रोकने के लिए दमनात्मक उपायों की श्रृंखला को मंजूर किया है (कुक, 2012 : 22)। यहूदी छात्र और शिक्षक शैक्षणिक वातावरण पर पहरा देते हुए असंतुष्ट प्रोफेसरों के पाठ्यक्रमों पर नजर रखते हैं। सार्वजनिक निंदा, नौकरी की हानि, कारावास या फिर मृत्यु भी, से बचने के लिए स्टॉफ के सदस्य सत्ताधारियों को उत्तेजित करने वाली सूचना का सींमाकन करते हैं। बार–इलान विश्वविद्यालय की प्रोफेसर अरिला एजोले को उनकी राजनैतिक संगत के कारण बी.जी.यू. (BGU) के प्रोफेसर नेवे गोर्डन ने 2009 में जब इजराइल विश्वविद्यालयों के बहिष्कार को अपना समर्थन देने की घोषणा की तब इम तिरत्जू नामक अतिरिक्त संसदीय समूह ने विश्वविद्यालय से प्रोफेसर को पदच्युत करने और इजराइल विरोधी झुकाव को खत्म करने की मांग की (हारेट्ज, 9/30/2012)। शिक्षा मंत्री गिडियोन सार ने भी बी.जी.यू. (BGU) के राजनीति एवं सरकार विभाग को उसके ''पोस्ट जियोनिस्ट'' पूर्वाग्रह के लिए आलोचना की इजराइल के शैक्षणिक बहिष्कार को समर्थन देने वाले प्रोफेसर इलान पाप्पे का स्वयं का हाइफा विश्वविद्यालय में बहिष्कार हुआ। मौत की कई धमकियों और नेसेट द्वारा निंदित किये जाने के बाद, वे 2008 में एकस्टर विश्वविद्यालय चले गये।

कई पुरस्कृत फिल्मों के निर्देशक, निजार हसन द्वारा नेगेव में सपीर महाविद्यालय में एक यहूदी छात्र के द्वारा कक्षा में सैन्य वर्दी पहन कर आने पर आलोचना करने पर नेसेट शिक्षा समिति ने निंदा की (कुक, 2008)। उसी महाविद्यालय में एक यहूदी प्राध्यापक द्वारा कक्षा में एक बेदायूँ लड़की को अपना पर्दा हटाने के लिए कहने पर ऐसी कोई निंदा नहीं हुई। 2000 में द्वितीय इंतिफादा

>>

के बाद से इजराइली पुलिस और गुप्तचर सेवाओं ने इजराइली विश्वविद्यालयों में इजराइली–फिलिस्तीनी छात्रों की गिरफ्तारी और पूछताछ को तेज कर दिया है। बेन–गुरियन विश्वविद्यालय के एक छात्र युसुफ ने परिसर पर अरब छात्र समिति के साथ राजनैतिक संगत के कारण अपनी जान गवाँ दी (गोर्डन, 2006:194–5)।

> सैन्य अधिग्रहण में सहायता

इजराइली विश्विद्यालय Elbit और RAFAEL जैसी हथियार निर्माण कम्पनियों के निकट सहयोग से सैन्य अनुसंधान और प्रशिक्षण का समर्थन करते हैं। ये कम्पनियाँ एक 760 कि.मी. लम्बी कंकरीट बाधा, इजराइली रंगभेद दीवार (Israeli Apartheid Wall) जो पश्चिमी बैंक तक जा रही है की निगरानी की व्यवस्था के लिए जानी जाती है जिससे इजराइल और अधिक फिलीस्तीनी जमीन को हड़प सके।

रोबोटिक शस्त्र प्रणाली जैसे कि हवाई ड्रोन और मानवरहित लड़ाकू वाहन तकनीक, जिसने 2008–2009 में गाजा पर इजराइन के हमले में सहायता की थी, को विकसित करने के लिए टेकनियोन विश्वविद्यालय को Elbit द्वारा वित्त सहायता दी गयी थी। इसने इस हमले में हिस्सा लेने वाले छात्रों को भी विशेष सहायता प्रदान की। हीवर (2009) के अनुसार एलबिट की एल–ऑप शाखा के प्रबंधक, हाइम रूसो को टेकनियोन की कार्यकारिणी बोर्ड में नियुक्त किया गया और एलबिट सिस्टम के अध्यक्ष को मानद् डाक्टरेट प्रदान की गई।

कई इजराइली विश्वविद्यालय 1948 और 1967 में विनाश हुए फिलीस्तीनी गाँवों और कस्बों के खण्डहरों पर बसे हैं। तैल–अवीव विश्वविद्यालय ने कभी यह तथ्य नहीं स्वीकारा कि वह शेख–मुवानिस के फिलीस्तीनी गाँव के खण्डहरों पर, जिसके निवासी विस्थापित और र्निवासित हैं, पर बसा हुआ है। एरियल विश्वविद्यालय सेण्टर ऑफ समारिया जैसे अन्य विश्वविद्यालय अन्तराष्ट्रीय कानून के तहत पश्चिमी तट पर अवैध बस्तियों के रूप में बसे हैं। यद्यपि एरियल महाविद्यालय और उसके स्टॉफ का इजराइल और विदेश दोनों में ही बहिष्कार हुआ, शिक्षा मंत्री ने संस्था को विश्वविद्यालय का पूर्व दर्जा देने के निर्णय की प्रशंसा की।

इन उदाहरणों से पता चलता हैं कि BGU में शासन और राजनीति विभाग का बंद होना राजनैतिक प्रेरणा के बिना नहीं है। जैसा कि BGU की अध्यक्ष प्रोफेसर रिवका कार्मी ने इजराइल की शोध विश्वविद्यालयों के अध्यक्षों को लिखे अपने पत्र में लिखा है, ''इजराइल की शैक्षणिक संस्थाओं के विरोध में कई आंतरिक और बाह्य धमकियाँ हैं [.....] यह बेन–गुरियन विश्वविद्यालय की निजी लड़ाई नहीं है बल्कि सभी शैक्षणिक संस्थाओं का संघर्ष है [.....] CHE द्वारा वर्तमान निर्णय का अनुसमर्थन होना इजराइली शिक्षाविदों की आजादी पर काले झण्डे फहराना जैसा है।''

तेल अवीव विश्वविद्यालय की प्रोफेसर तान्या रिनहार्ट कहती हैं कि ''किसी भी इजराइली विश्वविद्यालय के बोर्ड ने आज तक के अपने इतिहास में फिलीस्तीनी विश्विद्यालयों के बारंबार बंद होने के विरूद्ध प्रस्ताव पारित नहीं किया। [.....] मानवाधिकारों और नैतिक सिद्धान्तों के उल्लंघन की चरम परिस्थिति में, एकेडिमिया आलोचना करने से मना करती है और [.....] दमनकारी व्यवस्था के साथ सहयोग करती है (रिनहार्ट, 2004)। यह इजराइल के विदेशी समर्थकों के लिए भी सही है। बहिष्कार की पुकार की निंदा करने वाले 450 अमरीकी महाविद्यालयों के अध्यक्षों में से किसी एक ने भी गाजा में इस्लामिक विश्वविद्यालय के विनाश के विरोध में आवाज नहीं उठाई (गोर्डन और हाल्पर 2008)।

इजराइली विश्वविद्यालयों के अंदर और बाहर मानवाधिकारों के उल्लघंन के जवाब में विश्व भर के चिंतित शिक्षविदों ने यह मांग रखी कि उनके विश्वविद्यालय संविधान में वर्णित नैतिक नीति को लागू करें। अन्य में से फिलीस्तीनी विश्वविद्यालयों की ब्रिटिश समिति, स्वीडन का ''एक्शन ग्रुप एट KTH फॉर द बायॅकाट ऑफ इजराइल'', मेकगिल विश्वविद्यालय का स्टाफ संघ और बर्कले के छात्र संघ ने यह मांग की कि उनके विश्वविद्यालय के साथ अपने रिश्ते तोड़ दें। जोहान्सबर्ग का विश्वविद्यालय पहला विश्वविद्यालय था जिसमें बेन गुरियन विश्वविद्यालय के साथ अपना सहयोग बंद कर दिया। यूरोपीय स्तर पर, 20 भिन्न देशों के 260 शिक्षाविदों ने यूरोपीय संघ से फिलीस्तीनी मानवाधिकारों के दुरूपयोग में लिप्त इजराइली कम्पनियों को EU के कार्यक्रमों में से अलग रखने का आग्रह किया।

बहिष्कार अभियान को स्वतंत्र संवाद और शैक्षणिक आजादी के उपार्जन के प्रतिकूल देखा जाता है। हालांकि, इजराइली सत्ता के साथ पिछले 70 वर्षों के संवाद ने न तो 'शांति' प्रक्रिया को प्रोत्साहित किया है और न ही इजराइल को संयुक्त राष्ट्र के प्रस्तावों या अंतराष्ट्रीय कानून की पालना करने के लिए बाध्य किया है। रंगभेद शासन के दौरान दक्षिण अफ्रीका के उदाहरण दर्शाते हैं कि शैक्षणिक आजादी के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आवाज उठाना प्रभावशाली हो सकता है। ऐसी पुकार इजराइल सरकार की रंग भेद नीति को उजागर करने, विश्वविद्यालयों में अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता को नियन्त्रित करने वाली निगरानी प्रणाली को चुनौती देना और इजराइली विश्वविद्यालयों को उनके राजनैतिक और नैतिक संकट से छुड़ाने का काम करती है। ■

References

Cook, J. (2012) "The full story behind the war against free speech in Israel's universities." *The Electronic Intifada*. Accessed on 10/27/2012 from http://electronicintifada.net/content/full-story-behind-war-against-free-speech-israels-universities/11783

Cook, J. (2008) "Academic Freedom? Not for Arabs in Israel." *CounterPunch*. Accessed on 8/11//2012 from http://www.counterpunch.org/.../academic-freedom-not-for-arabs-in-israel/

Eqeiq, A. (2012) "Epilogue." *Omrim Yeshna Eretz – Hekayat Balad (Once upon a Land) / A Tour Guide*. Sedek. Zochrot: Tel-Aviv.

Gordon, N. and Halper, J. (2008) "Where's the academic outrage over the bombing of a university in Gaza?" *CounterPunch* from http://www.counterpunch.org/2008/12/31/where-s-the-academic-outrage-over-the-bombing-of-a-university-in-gaza/

Hever, S. (2009) "The Economy of the Occupation – A Socioeconomic Bulletin." Jerusalem: The Alternative Information Center. Accessed on 05/02/2010 from http://usacbi.files.wordpress.com/2009/11/economy_of_the_occupation_23-24.pdf

Reinhart, T. (2004) "Academic Boycott: In Support of Paris VI." *The Electronic Intifada*.

> दमन के शिकार लोगों का थियेटर

जन समाजशास्त्र का एक स्वरूप?

जो सोएरो, कोइम्ब्रा विश्वविद्यालय, पुर्तगाल

पुर्तगाली संसद के सीनेट कक्ष में मई 2010 में ''विद्यार्थी उधार पर'' (Estudantes por Empréstimo) परियोजना के अन्तर्गत फोरम थिएटर का मंचन करते हुए। तकरीबन 200 विद्यार्थी देश के विभिन्न हिस्सों से अपनी समस्याओं – वैधानिक एवं अन्य – का समाधान पाने के लिए एकत्रित हुए जो कि पुर्तगाल के किंग द लुई की सर्तक निगाहों के अन्तर्गत मंचित किया गया। ***फोटो कार्ला लुई द्वारा।***

पुर्तगाली समाजशास्त्रीय परिषद (पुर्तगीज सोशियोलोजिकल एसोशिऐशन) का सम्मेलन जो कि जून 2012 में पोर्टो में हुआ के मध्य में हम नें एक ''फोरम थियेटर'' नाटक की गतिविधि की जिसका नाम Estudantes por Emprestimo (''कर्ज हेतु विद्यार्थी ''के विपरित ''विद्यार्थी हेतु कर्ज'') था। (http://estudantesporemprestimo.wordpress.com/) इस प्रकरण की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करता है। एक विद्यार्थी जिसके पास कोई छात्रवृत्ति नहीं है को बाध्य किया गया कि वह अपने अध्ययन को जारी रखने के लिये बैंक से ऋण ले। नाटक ''दमन के शिकार लोगों का थियेटर'' (थि येट ऑफ द आप्रेस्ड) दो वर्ष से अधिक समय से पुर्तगाल के दर्जनों विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में मंचित किया जा रहा था। उत्तर से लेकर दक्षिण तक हुए इस मंचन में हजारों विद्यार्थियों ने सहभागिता की। अनेक पत्र एवं याचिकायें इस के आधार पर बनी। इस नाटक ने अनेक बहसों एवं प्रत्यक्ष क्रियाओं को प्रोत्साहित किया। शिक्षा पर किये जा रहे व्यय को व्यक्त करने वाला यह नाटक यह मंचित करता है कि उच्च शिक्षा असमान रूप से उपलब्ध है। सार्वजनिक निवेश को शिक्षा मे कम कर बैंक ऋण हेतु विद्यार्थी को बाध्य किया जा रहा है परिणामस्वरूप उसका भविष्य वित्तिय व्यवस्था के अधीनस्थ बना दिया गया है।

इस नाटक को देखने, स्वीकारने, रेखांकित करने एवं हँसनें के उपरान्त दर्शक तत्काल यह बहस प्रारम्भ करते हैं कि अभिनय के दौरान क्या हुआ, कहानी क्या अभिव्यक्त करती है एवं समस्या की जड़ में क्या है। दर्शकों को नाटक के आयोजकों (सूत्रधार) के द्वारा प्रेरित एवं आमन्त्रित किया जाता है कि वे मंच पर आयें एवं नाटक में प्रस्तुत की गयी समस्या के सम्भावित समाधानों को प्रस्तुत करें। इस सूत्र धार को 'जोकर ' कहा जाता है। क्या वे इस स्थिति में कुछ भिन्न कर सकेंगे? कुछ लोगों ने इस चुनौती को स्वीकारा एवं फोरम ने उसे प्रस्तुत किया।

> दमन के शिकार लोगों का थियेटर समाजशास्त्र से सम्पर्क करता हैं (थियेटर ऑफ द आप्रेस्ड का समाजशास्त्र से सम्पर्क)

दमन के शिकार लोगों का थियेटर (टी ओ) फोरम थियेटर का सामान्य स्वरूप है। एक नाट्य–राजनीतिक पद्धति के रूप में इसे ब्राजीली समाज वैज्ञानिक ओगस्तो बॉल ने सृजित किया। इस पद्धति को अनेक देशों में सामाजिक, राजनीतिक एवं शैक्षणिक मुद्दों के संदर्भ में प्रयुक्त किया जाता है। पुर्तगाल में अनेक समुदायों ने एवं समूहों ने इसे अपनाया है जिसके द्वारा वे अपनी समस्याओं के विषय में चिन्तन करते हैं एवं उन परिवर्तनों को प्रस्तुत करते हैं जिन्हें वे क्रियान्वित करने के इच्छुक हैं। इसका प्रारम्भिक बिन्दु एक क्रान्तिकारी/आमूलचूल परिवर्तनकारी परिकल्पना है। ''थियेटर (नाटक) वह दक्षता है जो मनुष्यों में – पशुओं में नहीं – पायी जाती है जिसके द्वारा मनुष्य स्वयं अपनी क्रियाओं का अवलोकन करता है एवं इसके परिणास्वरूप प्रत्येक व्यक्ति यहॉ तक कि कर्त्ता थियेटर कर सकता है।[1] थियेटर के माध्यम से हम यथार्थ को एक दूसरे 'स्पेस' (परिवेश) में प्रस्तुत करते हैं जो कि सौन्दर्यपरक होता है जिसके कारण हम वाहक (एजेण्ट/अभिकर्ता) बन जाते हैं। इस माध्यम से हम यथार्थ को सृजित करने का निर्णय लेते हैं, इसके साथ ही हम स्वयं को दर्शक बनाने का भी विशेष अधिकार प्राप्त कर लेते हैं।

टी.ओ. (TO) में दर्शक–कर्ता (स्पैक्ट–एक्टर), एक अवधारणा जिसे बॉल ने प्रस्तुत किया है, जो कि अभिनेता/कर्ता एवं दर्शक दोनों है को उस विभाजन को समाप्त करने हेतु आमन्त्रित किया जाता है। उस सहभागी का नाम लिया जाता है जो मंच एवं दर्शक के मध्य विभाजन को समाप्त करेगा। अर्थात् जो अवलोकन करते हैं (दर्शक) एवं जो क्रियाओं पर एकाधिकार

>>

रखते हैं (अभिनेता) के मध्य की विभाजन रेखा को समाप्त किया जाता है। श्रम विभाजन का परिपाटीय पक्ष यह स्वीकारता है कि विचार, क्रिया/अभिनय एवं वैध शब्दों पर कुछ लोगों का एकाधिकार है। इस पक्ष पर सवालिया निशान लगाये जाते हैं जो थियेटर एवं थियेटर के परे जाते हैं। कोई भी अपनी सामाजिक भूमिकाओं तक सीमित नहीं है। दूसरों की भूमिकाओं के निर्वाह की योग्यता एक ऐसा प्रमाण है जो मुक्ति की सम्भावनाओं को व्यक्त करता है।

क्या यह एक घटना थी कि यह फोरम थियेटर समाजशास्त्रीय सम्मेलन (क्रांग्रेस) का एक भाग बना? या इसके विपरीत वास्तव में यह फोरम थियेटर समाजशास्त्रीय बहस एवं हस्तक्षेप का एक स्वरूप है? टी.ओ. तथा जनसमाजशास्त्र के मध्य क्या सम्बन्ध हैं? हम एक दूसरे से क्या सीख सकते हैं? एवं इस प्रकार के वार्तालाप में किस प्रकार की समस्याएं उभरती हैं?

समाजशास्त्र एवं थियेटर दोनों की शिल्प, एक दृष्टि से वास्तविकताओं का प्रतीकात्मक उत्पादन है साथ ही प्रतिनिधित्व एवं बोध दोनों की श्रेणियों को निर्मित किया जाता है। दोनों ही स्थितियों में ये अन्य कर्ताओं के साथ भिन्नताओं को जन्म देते हैं। ये अन्यकर्ता विभिन्न अन्य विषयों, राजनीतज्ञों, अन्य संचार माध्यमों से सम्बद्ध हैं एवं सामाजिक विश्व को प्रतिनिधित्व देने या उसे प्रस्तुत करने के प्रतियोगी तरीकों को प्रस्तुत करते हैं। फोरम–थियेटर नाटक यथार्थ/वास्तविकता के विषय में एक विमर्श है अर्थात् यथार्थ के विषय मे एक दृष्टिकोण है। फोरम थियेटर सामान्यतः कहानी के विभिन्न दृष्यों को अन्तः क्रिया के साँचों के रूप में दिखाता है। इसकी ड्रामायी (अभिनयात्मक) चुनौतियों में से एक यह भी हैं कि वर्तमान में उपस्थित संरचनात्मक तत्वों को साक्ष्य के रूप में किस प्रकार प्रस्तुति दी जावे जिसे इर्विंग गॉफमैन ''अन्तः क्रिया प्रणाली'' (इन्टरेक्शन आर्डर) की संज्ञा देते हैं। समाजशास्त्र यहाँ सहायता कर सकता है।

समाजशास्त्र ने ऐसे अनेक महत्वपूर्ण उपकरणों को निर्मित किया है जो अवधार–णाओं एवं तत्वों के रूप में हैं जिन्हें प्रत्येक मूर्त स्थिति में तत्काल रेखांकित नहीं किया जा सकता क्योंकि वे मूर्त के परे अस्तित्व में हैं। ये दृष्यों की रचना की दृष्टि से निश्चय ही अत्यन्त उपयोगी हैं। थियेटर में सृजित किये जा रहे दृष्यों में वे व्यवस्थित गुण सम्मिलित होने चाहिऐं जो सामाजिक स्थितियों का भाग हैं पर उनकी संरचनायें सामान्यतः अदृश्य हैं। एक अन्य स्तर पर समाजशास्त्र यह गहन अध्ययन करता है कि व्यवहार क्रियान्वन एवं अनुभूतियों के माध्यम से किस प्रकार सामाजिक सम्बन्ध को सक्रिय व व्यवस्थित रूप मिलता है एवं सामाजिक विश्व को संयुक्तता के रूप में बनाये रखने हेतु किस प्रकार भूमिकायें माध्यम के रूप में योगदान करती हैं। समाजशास्त्र सम्भवतया थियेटर को चुनौती दे सकता है कि वह किस प्रकार भूमिकाओं, अस्मिताओं, अन्तःक्रिया के स्वरूपों, शारीरिक भाव जो शक्ति के सामाजिक सम्बन्धों से रचित होते है की प्रस्तुति करें एवं उन्हें किस प्रकार सम्मिलित करें। आखिरी तथ्य यह है कि समाजशास्त्र व्यक्तियों की कहानियों एवं विमर्शों को एक घटना के रूप में सीमित नहीं करता अपितु उन्हें उन सम्बन्धों के रूप में रेखांकित करता है जिन्हें वे व्यक्ति अभिव्यक्त करते हैं। टी.ओ. में इसे ''ऐसिस'' (ascesis) कहा जाता है इसका अभिप्राय उस प्रक्रिया से है जिसके माध्यम से व्यक्तियों के निजी विमर्शों को बाहुल्यता के साथ देखा जाता है और इसके आधार पर ''प्रघटना से नियम/कानून की ओर'' अग्रसर होते हैं। यही प्रक्रिया समाजशास्त्रीय तर्कों की आधारभूतीय क्रियाशीलता भी है।

> जन समाजशास्त्र के लिए एक उपकरण अथवा एक चुनौती?

यह समान महत्व के साथ कहा जा सकता हैं कि टी.ओ. जन समाजशास्त्र के लिए एक शक्तिशाली उपकरण हो सकता हैं। एक परि–पूर्णता से अधिक उपयोगी मानव भाषा के साथ थियेटर प्रत्येक बहस को संदर्भो की जटिलता के साथ सामने ला सकता है साथ ही सामाजिक किस प्रकार 'शरीर' एवं 'क्षेत्र' की संयुक्तता है एवं अन्तः क्रिया की प्रणालियों को भी व्यक्त किया जा सकता है। एक तत्काल माध्यम के रूप में यह अनुभवों को बहस के साथ सम्बद्ध कर देता है जिसे पियर बूरदीए (Pierre Bourdieu) ''व्यावहारिक संज्ञान'' (प्रैक्टिकल सैन्स) की संज्ञा देते हैं। इसके अन्तर्गत उन अमूर्त कूटों को जिन्हें सामान्यतः अनुभव किया जाता है, की उपेक्षा की जाती है। इन अमूर्त कूटों (जो प्रयुक्त होते हैं) जो कि गैर स्वामित्व के या गैर उपलब्धता के साधन हैं को विशेषतः उपेक्षित किया जाता हैं क्योंकि वे समाजशास्त्र के क्षेत्र का भाग नहीं हैं। फोरम थियेटर चूंकि उस अर्न्तस्थिति क्षेत्र में विद्यमान है जो क्या उपस्थित है एवं क्या अब तक उपस्थित नहीं है जिसे स्पेक्ट–एक्टर्स अर्थात् दर्शक–अभिनेता अभिनय द्वारा प्रस्तुत करते हैं) के मध्य में केन्द्रित है। यह हमें सामाजिक यथार्थ को आलोचनात्मक दृष्टि से समझने के लिये प्रेरित करता है अथवा आमन्त्रित करता है। यह समझने का आमन्त्रण अनेक अन्य सम्भावनाओं में से एक है। टी.ओ. (T.O.) में दमन के शिकार लोग अपने आप में समर्पण एवं विद्रोह को प्रस्तुत करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति प्रभुत्व एवं मुक्ति के केन्द्र को एक ही समय पर व्यक्त करता है। प्रत्येक पुनरावृत्ति एक ही समय पर पुनःउत्पादन की कृत्य एवं विचलन की सम्भावनाओं की प्रस्तुति है।

अन्ततः टी.ओ. अन्तः क्रियात्मक है। यह ''प्रशिक्षणात्मक एवं मनोरंजनात्क'' दोनों तरह का है। हम ब्रेख्त की अभिव्यक्ति को यहॉ प्रयुक्त कर सकते हैं एवं जन समाजशास्त्र को वह माध्यम दे सकते हैं जिसके द्वारा वह व्यापक क्षेत्र के लोगों के सम्मुख उपस्थित हो सकती है। उस जनता के लिए, जो तत्काल समाजशास्त्रीय विमर्श एवं राजनीतिक वाद विवाद में सम्मिलित नहीं हो पाती, एक नाटक उत्तेजना एवं सजगता को अधिक प्रभावी ढ़ंग से उत्पन्न कर सकता है बजाय इसके कि वह जनता औपचारिक बहस का भाग बने या कक्षाओं में जाये। हमारा अनुभव तो कम से कम यही बताता है जब हम Estudantes Por Emprestimo योजना को लेकर आगे बढ़े। पूर्व के प्रत्येक प्रयास की तुलना में आगे के प्रयास में अधिक लोगों ने सहभागिता की एवं छात्रवृत्ति के मुद्दे पर या उच्च शिक्षा की स्थिति पर उपयोगी ''अनौपचारिक सत्रों'' को अर्थपूर्ण बनाया और हस्तक्षेप किया। थियेटर न तो आभूषणात्मक बना और ना ही यह उदाहर–णात्मक बना। इसने युवाओं को सफलता से सम्मोहित किया जो बहस के अन्य स्वरूपों से स्वयं में उत्साह उत्पन्न नहीं कर पा रहे थे।

इतना अवश्य है कि जन समाजशास्त्र के एक सम्भावित साधन के रूप में दमन के शिकार लोगों का थियेटर के विषय में प्रत्येक सोच उतनी आसान नहीं है जितना कि वह लगती है। टी. ओ. (T.O.) के प्रत्येक केन्द्र में विशेषज्ञीकरण का निषेध है (वि–विशेषज्ञीकरण)। क्या यह समाजशास्त्र के साथ सहयोगात्मक हो सकता है। यदि हम ''समाजशास्त्रियों एवं उनकी जनता के मध्य संचारात्मक ज्ञान के विनिमय'' के विषय में भी ध्यान दें तब भी क्या सहयोग सम्भव हो सकता है। बुरावे ने इस पक्ष की विवेचना की है। यदि जन समाजशास्त्र सार्वजनिक क्षेत्र में अनेक पक्षों को प्रस्तुत करने से कही अधिक है, ''पेशे केन्द्रित समाजशास्त्र'' के सार्थक परिणामों से अधिक है एवं ''आलोचनात्मक समाजशास्त्र'' के कठिन प्रश्नों से अधिक है तो यह उन विभिन्न पक्षों को कैसे प्रकाश में लायेगा या उनका अध्ययन करेगा जिन्हें जैक्स रेनसियरे लोकतन्त्र के ''स्थायी घोटालों'' की संज्ञा देते हैं। जहाँ समानता को एक लक्ष्य न मानकर पूर्व धारणा के रूप में स्वीकारा जाता है। दूसरे शब्दों में जन समाजशास्त्र किस प्रकार यह दावा कर सकता है कि समाजशास्त्रियों की समझ में तथा सामान्य जन की समझ मे अन्तर है एवं साथ ही एक समय पर लोकतान्त्रिक संदर्भों को स्वीकारा जाता है (टी. ओ. में यह पूरी तरह उपस्थित है) क्योंकि सामाजिक विश्व के विषय में हम समान अधिकार एवं वैधानिकता के साथ विमर्श कर सकते हैं। क्या जन समाजशास्त्र समाजशास्त्रियों के इस विचार को नकार सकता है जो कि प्रभुत्व शालियों को विज्ञान के द्वारा चेतनाशील बनाते हैं और सार्वजनिक स्पेस में ज्ञान की सामूहिक रचना के प्रति समझौतावादी पक्षों के खतरनाक पहलुओं की उपेक्षा करते हैं। इसका परिणाम एक नवीन सामान्य समझ के रूप में होता है जिसकी चर्चा बोवेन्चुरा सोसा साण्टोज ने की है। क्या यह समस्त प्रयास संरचना वैज्ञानिक पहलुओं एवं समाजशास्त्र विषय की आवश्यकताओं को पृथक कर की जा सकती है। हमें कम से कम ऐसा प्रयास तो करना चाहिए। ■

[1] Boal, A. (2002) *Games for Actors and Non-Actors*. London: Routledge.

> असुरक्षित परन्तु गैर–लचीला

पुर्तगाल में एक नवीन सामाजिक आन्दोलन का उभार

डोरा फोनसैका, कोइम्ब्रा विश्वविद्यालय, पुर्तगाल

अलचीले सर्वहारा वर्ग का प्रतिरोध। बैनर पर लिखा है, ''केवल संघर्ष ही अनिश्चितता को हराएगा, मितव्ययिता कोई समाधान नहीं है।''

यूरो क्षेत्र में बढ़ रहे संकटों के कारण विभिन्न सरकारें एवं नागरिकीय समाज ने अनेक प्रतिक्रियाओं को विस्तार दिया है। इसके एक भाग के रूप मे नागरिकीय समाज ने अपनी प्रभावी क्षमता के द्वारा नवीन सामूहिक कर्त्ताओं को उत्पन्न किया है जिनकी क्रियांए वैश्वीकरण एवं नव्य उदारवादी राजनीति के नकारात्मक परिणामों के प्रति निर्देशित हैं। पिछले कुछ वर्ष उन तर्कों के चक्र को प्रस्तुत करते हैं जिन्होंने लोकतन्त्र के सम्मुख प्रश्नवाचक स्थितियाँ प्रस्तुत की हैं, सम्बद्ध मुख्य पक्षों की तरफ ध्यान आकृष्ट किया है मुख्यतः श्रम की असुरक्षा के प्रति ये पक्ष उभरे हैं। कल्याणकारी राज्य की समाप्ति एंव इसके लक्ष्यों के पुनः निर्धारण अब जन सामान्य के मुद्दे बन गये हैं जो नवीन सामूहिक कर्त्ताओं को विस्तार दे रहे हैं एवं विद्यमान लोगों को रूपान्तरित कर रहे हैं।

> 'गैर–लचीली असुरक्षा' (द इनफ्लैक्जिबल प्रीकारियस)

''गैर लचीली असुरक्षा'' जिसे पुर्तगाली भाषा में ''प्रीकरिओस इनफ्लैक्जिविस'' (Precarios Inflexiveis) (पी.आई.) कहा जाता है, एक ऐसा ही कर्त्ता है। यह आन्दोलन 2007 में प्रथम बार राजधानी लिस्बन मे उत्पन्न हुआ जिसका उद्देश्य कार्य के सक्रियकरण की निरन्तरता थी जो मई दिवस की परेड की सफलता के साथ सामने आयी थी। सामूहिक कर्त्ता ''गैर लचीली असुरक्षा'' (इनफ्लैक्जिबल प्रीकारियस) एक माध्यम था जिसके द्वारा सामाजिक आन्दोलन में पायी जाने वाली रिक्तता/शून्यता जो विचार विमर्श/बहस एवं श्रम असुरक्षा व उसके सामाजिक परिणमों के संदर्भ में थी को समाप्त करना था। पी.आई. ने एक लघु सामूहिकता से आकार लिया जिसे ''फर्व'' कहा जाता था, फर्व ने ''स्वतन्त्र कार्य'' स्थिति के दुरूपयोग के विरूद्ध लोगों को सक्रिय किया। ''फर्व'' का अभिप्राय ''फार्टोस द'एस्टास रेसिबास वर्डेस' (Fartos d'estes racibos verdes) से है। यदि हम इसका अनुवाद करें तो ''इन हरी रसीदों से उकताना'' इसका अर्थ है। यहाँ ''हरी रसीद'' का अभिप्राय उस स्वतन्त्र कार्य स्थिति से है जो उन कर्मियों पर लागू होती है जिनका अपने नियोक्ता के साथ अधीनस्थता का औपचारिक सम्बन्ध नहीं है। विधिक दृष्टि से ये वे कर्मी हैं जो स्वयं में अपने नियोक्ता हैं अतः स्वयं की सामाजिक सुरक्षा एवं अन्य परिलब्धियों/लाभों के लिए वे दायित्व भी स्वयं वहन करते हैं पर सत्यता तो यह है कि वे पारिश्रमिक प्राप्त करने वाले श्रमिक हैं जो अपने नियोक्ता के अधीनस्थ हैं तथा उन्हें उन सामाजिक परिलब्धियों/लाभों के प्राप्ति नहीं होती जिसके लिये वे अधिकृत होने चाहिऐं। फर्व पर निर्मित हुई पी. आई. (PI) केवल 'हरी रसीदों' पर ही केन्द्रित नहीं है अपितु श्रम के असुरक्षित पक्षों के विभिन्न स्वरूपों को महत्व देता है।

>>

पी. आई. की रचना एवं विकास सिडनी टैरो के उस विचार पर आगे बढ़ता है जिसमें सामाजिक आन्दोलनों की मुख्य प्रक्रियाओं को पारिभाषित किया गया है। ये मुख्य प्रक्रियाएं निम्न हैं : प्रथम, सामूहिक चुनौतियों को बढ़ाना एवं उनका दबाव; द्वितीय, सामाजिक नेटवर्क (जाल), सामूहिक उद्देश्यों एवं सांस्कृतिक स्वरूपों को आकृष्ट करना एवं तृतीय, अन्तःसम्बद्ध संरचनाओं एवं सामूहिक अस्मिताओं के माध्यम से एकजुटता बनाना ताकि सामूहिक क्रियाओं को दीर्घकालिक एवं सम्पोषित रूप दिया जा सके। एक सामान्य जवाबदेही का दावा इस स्थिति में विशेष रूप से स्पष्ट नजर आता है। ये दावा उस समय महत्वपूर्ण होता है जब असुरक्षित सम्बन्धों को स्वतन्त्र एवं कम कठोर बताया जाता है अतः इन्हें व्यक्तिवादी जीवन प्रारूपों एवं पेशों से सम्बन्धित करीयर से जोड़ दिया जाता है। पी आई स्वायत्तशासी संगठनों की प्रवृत्तियों का अनुसरण करता है जो कि परिपाटीय राजनीतिक दलों एवं श्रमिक संगठनों से गुणात्मक रूप में भिन्न हैं।

पी.आई. सामान्यतः उन विशेषताओं को समाहित करती है जो नवीन सामाजिक आन्दोलनों में विद्यमान हैं। शक्तिशाली आन्तरिक लोकतन्त्र, विसरणमूलक नेतृत्व, लचीलापन, अनौपचारिकता का उच्च स्तर, हितों की विविधता, साइबर सक्रियता के उपकरणों पर मजबूत निर्भरता, जन/सार्वजनिक क्रियाओं में सृजनात्मकता एवं नवाचार, चतुर्भुज स्वरूप, खण्डात्मक एवं बहुस्तरीय संरचना विरोधियों के साथ समझौतावादी रूख अपनाने में सीमित रूचि, एक लक्ष्य के रूप में एकजुटता, प्रत्यक्ष क्रिया एवं सहभागिता की खोज को इन विशेषताओं के रुप में देखा जाता है। पी.आई. के संदर्भ में प्रारम्भ की स्थिति से जो विशेषता सर्वाधिक महत्वपूर्ण व केन्द्रीय भूमिका निभाती है वह साइबर सक्रियता के उपकरणों पर मजबूत निर्भरता है। http://www.precariosinflexiveis.org/ वह ब्लाग है जो पी. आई. के अस्तित्व को पहली बार सार्वजनिक रूप से प्रस्तुत करता है। इसकी रचना के तत्काल बाद ऑन लाइन पर जब इसे प्रस्तुत किया गया तो पहला पृष्ठ (पोस्ट) इस पर ''असुरक्षित घोषणा पत्र'' (प्रिकेरियस मैनीफैस्टो) के रूप में आया। इस पृष्ठ पर कार्यकर्ताओं ने स्वयं को ''रोजगार एवं अपने जीवन में असुरक्षित'' के रूप में परिभाषित किया। उन्होंने अपनी असुरक्षा की भर्त्सना की जो कि अर्थ व्यवस्था के अनेक क्षेत्रों को पूर्णरूपेण प्रभावित करती है (विशेषतः राज्य द्वारा नियन्त्रित सार्वजनिक क्षेत्र) साथ ही राजनीतिक विमर्श में यह इन सबकी अदृष्यता व्यक्त होती है। ये कार्यकर्त्ता ''संघर्ष की पुनः खोज'' को अपने इरादे के रूप में घोषित करते हैं। ये सुझाव देते हैं कि उत्तर आधुनिक समाज में श्रमिक संघों के द्वारा प्रयुक्त परम्परागत पद्धतियाँ अब अनुपयुक्त हैं। वे असुरक्षित पर गैर लचीले का दावा करते हैं। ये कार्यकर्त्ता श्रम की असुरक्षा एवं सर्वहारा की शक्तिशाली प्रवृत्तियों के विरोध के प्रति अपने निर्णय को पुष्ट करते हैं।

इस समूह ने जो प्रारम्भिक सक्रियता प्रदर्शित की का सम्बन्ध उन अन्याय मूलक एवं अवैध स्थितियों को सार्वजनिक करना एवं उनकी भर्त्सना करना था जो असुरक्षित श्रमिकों के जीवन को संकटमूलक बनाती है। असुरक्षित श्रमिकों को परिभाषित करते हुए यह कहा जा सकता है कि इनके पास अधिक लचीली श्रम अनुबंधता के कारण सामाजिक सुरक्षा के कमजोर रूप होते हैं। इन श्रमिकों को श्रमिकों के पारम्परिक सामूहिक संगठन जैसे श्रमिक संघों में सहभागिता करने में कठिनाई होती है। श्रमिक आन्दोलन की यह केवल अक्षमता नहीं है कि वह श्रम प्रक्रियाओं के इन नवीन स्वरूपों को मुद्दों के रूप में नहीं लेते पर साथ ही श्रमिक आन्दोलन में औपचारिक संगठनों एवं संस्थागत राजनीति के प्रति अविश्वास एवं पूर्वाग्रहों का विस्तार होता जाता है।

अनेक लक्ष्यों में से एक नवीन अस्मिता की रचना करना है जो कि ''असुरक्षित श्रमिक/कमी'' के रूप में है। श्रम सम्बन्धों के वि–नियमीकरण के विरूद्ध प्रभावी सक्रियकरण के लिए यह एक आवश्यक स्थिति है। परि–णामस्वरूप पी. आई. के अस्तित्व के चहुँ और एक ही केन्द्रीय उद्देश्य उभरता था और वह था उन क्षेत्रों के श्रमिकों एवं कर्मियों में चेतना व जागरूकता का विस्तार करना जहाँ या तो अधिकार कम हैं अथवा अधिकारों की अनुपस्थिति है। असुरक्षित श्रम के विध्वंसकारी प्रभावों को नवीन अर्थों के साथ सम्बद्ध कर पी. आई. (अन्य समान प्रकृति के राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सामूहिक कर्ताओं के सहयोग के साथ) ने विमति एवं संघर्ष के नवीन क्षेत्रों को उत्पन्न किया है। प्रारम्भ में इन कर्ताओं ने अभिव्यक्तिमूल प्रकृति की अनेक क्रियाओं को संचालित किया पर अब उन्होंने उच्च स्तरों के यन्त्रमूलकीकरण एवं औपचारिकीकरण को विकसित कर लिया है परिणाम स्वरूप पी. आई. अब एक औपचारिक समिति बन गयी है।

> अल्प तन्त्र का लौह नियम?

आजकल ''गैर लचीली असुरक्षा'' ''जीवन चक्र'' में एक नवीन चरण का अनुभव करा रही है। राष्ट्रीय स्वरूप के साथ एक समिति के रूप में पी. आई. अब औपचारिकीकरण एवं विधिकरण की प्रक्रियाओं से गुजर रही है। एक अनौपचारिक संगठन से औपचारिक संगठन की तरफ हुआ यह बदलाव एक तार्किक चरण है एवं प्रतिनिधिमूलक चरित्र की शक्तियों के साथ संगठन को वैधता एवं मान्यता अर्जित करने की आवश्यक प्रक्रिया है। विधिक स्थिति के साथ यह संगठन चुनाव के क्षेत्र में इस आशा के साथ प्रवेश करता है कि वह निर्वाचन क्षेत्र की तरफ से संस्थागत विचार विमर्श अन्य संगठनों एवं औपचारिक शक्तियों के साथ करेगा।

एक औपचारिक संगठन के रूप में नवीन सम्भावनायें उत्पन्न होने के बावजूद यह भय है कि अल्प तन्त्र का लौह नियम पी. आई. के क्रान्तिकारी चरित्र के लिए खतरनाक प्रभाव उत्पन्न कर सकता है क्योंकि पी. आई. अब प्राथमिक लक्ष्यों को आगे बढ़ाने की बजाय अपनी संरचना को निश्चित रूप देने के प्रति ज्यादा रूचि प्रदर्शित कर रहा है। संगठन के प्रति स्वाभाविक विरोध के रूप ने नौकरशाही मूलक संरचना को जन्म दिया है जिसने पी. आई. के उद्देश्यों को रूपान्तरित किया है तथा इसके प्रारम्भिक अन्तर्विरोधी स्थिति उत्पन्न करने वाले ढाँचे पर चोट की है। पर अलबर्टो मैलुसी (Alberto Melucci) जैसे विचारकों का मत है कि नौकरशाहीकरण अपरिहार्य एवं कभी वापस न होने वाला परि–णाम नहीं है इसके साथ ही यह संगठन के क्रान्तिकारी उद्देश्यों को संशोधित करने के पक्षों के साथ जुड़े आवश्यक नहीं है। ये वैकल्पिक सम्भावनाएं अगले महीनों में परीक्षण का भाग बनेंगी जब ''राजनीतिक दौर'' पुनः उभार लेंगे। यूरो क्षेत्र के देशों में मितव्ययता के कार्यक्रम अपेक्षित हैं इसके साथ ही रैडीकल राजनीतिक आन्दोलनों के द्वारा प्रतिक्रियाओं के पक्ष उभरेंगे जो कि यथास्थितिवाद को अस्वीकृत करेंगे। इस स्थिति में ही पता लगेगा कि इस रूचिकर एवं महत्वपूर्ण संगठन के बढ़ते औपचारिकीकरण के क्या वास्तविक प्रभाव उभरेंगे।

जहाँ तक वर्तमान समय का प्रश्न है ''गैर लचीली असुरक्षा'' अल्पतन्त्रीय प्रवृत्तियों को रोकने में सफल रही है। इसका प्रमाण 15 सितम्बर 2012 को सक्रियकरण हेतु निर्वाह की गयी भूमिकायें है (जब सैंकड़ों हजारों व्यतियों ने सड़क पर उतर कर अनौपचारिक नैटवर्क को विस्तार दिया और मितव्ययता के विरूद्ध प्रदर्शन किया)। 2013 के राज्य बजट की स्वीकृति का विरोध भी इन भूमिकाओं का भाग है (31 अक्टूबर 2012 को पुर्तगाल के सबसे बढ़े श्रमिक महांसघ सी जी पी टी के साथ जुड़ कर प्रदर्शन) इसके साथ ही 14 नवम्बर 2012 को आयोजित की गयी श्रमिका संगठनों की व्यापक हड़ताल में सक्रियकरण के प्रयासों की प्रस्तुति भी इन्हीं भूमिकाओं का भाग है। ■

> बलुआ दलदल में समाज शास्त्र :

सातवीं पुर्तगाली समाजशास्त्रीय कांग्रेस के प्रतिवेदन पर आधारित आलेख

मारिया लुइसा क्वारेस्मा, ओपोर्टो विश्वविद्यालय, पुर्तगाल[1]

ओपोर्टो विश्वविद्यालय में 19 जून से 22 जून 2012 के मध्य साहित्य संकाय में सातवीं पुर्तगाली समाजशास्त्रीय कांग्रेस का आयोजन हुआ। पुर्तगाली समाजशास्त्री परिषद (ए पी एस) के द्वारा इस कांग्रेस का आयोजन हुआ। 1985 में स्थापित इस परिषद का मुख्य लक्ष्य पुर्तगाली समाजशास्त्र के विकास, मान्यता एवं सम्बद्ध ज्ञान को विस्तार देना है। यहाँ इस तथ्य पर ध्यान देना आवश्यक है कि पुर्तगाली तानाशाही ने समाजशास्त्र को ''असुविधाजनक विज्ञान'' की संज्ञा दी थी। 1974 में तानाशाही के पतन एवं तदोपरान्त लोकतन्त्र के नवीन युग ने नवीन उत्पन्न संगठन एपीएस को ऊर्जा

नई पीढी के उत्साही सदस्य 19–22 जून, 2012 को पोर्टो में पुर्तगाली समाजशास्त्रीय परिषद की कांग्रेस में भाग लेते हुए।

>>

प्रदान की। 1980 के दशक के अन्त से हम प्रत्येक चार वर्षों के अन्तराल से राष्ट्रीय कांग्रेस का आयोजन कर रहे हैं। ये कांग्रेस पुर्तगाली समाजशास्त्रीय समुदाय से सम्बद्ध लोगों को एक दूसरे के नजदीक लाती है साथ ही विदेशी अनुसंधान कर्ताओं के अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक ज्ञान को भी जानने का अवसर देती है।

कांग्रेस में विमर्श का मुख्य विषय ''समाज, संकट एवं पुर्नरचना'' था। एक ऐसे युग में जब आर्थिक एवं सामाजिक संकट का अभिप्राय यह हो जाए कि सम्भावनाओं/ भविष्यवाणियों ने अनिश्चितता को, सुरक्षा ने जोखिम को एवं आशा ने भय को उभारा हों, इस विषय का महत्व और भी बढ़ जाता है। विभिन्न उपविषयों एवं मुद्दों को इस कांग्रेस में विमर्श हेतु चुना गया, जिसमें एक हजार से अधिक समाजशास्त्रियों ने भाग लिया जबकि इन में से 669 समाजशास्त्रियों ने, जो कि विभिन्न संस्थानों से आये थे, अपनी वैचारिक सहभागिता की। 72% सहभागी पुर्तगाली संस्थानों से सम्बद्ध थे। यहाँ हम बताना चाहेंगे कि कांग्रेस में 19% सहभागी विदेशी समाजशास्त्री थे विशेषतः ब्राजील के समाजशास्त्रियों की सहभागिता उल्लेखनीय रही।

19 जून को पूर्व–कांग्रेस बैठक हुई जिसमें एक अनूठी पहल की गयी जो युवा समाजशास्त्रियों के प्रति थी। इस बैठक का मुख्य विचार उन मुद्दों पर बहस करना था जो समाजशास्त्र के अन्तर्गत पेशे में प्रवेश करने वाले युवाओं के सम्मुख आते हैं। श्रम बाजार में उनका सम्मिलन अथवा समाजशास्त्रीय अनुसंधान के क्षेत्र में ''करीयर्स'' की सम्भावनाओं पर विचार केन्द्रित हुए। कार्यक्रम का प्रारम्भ आइ.एस.ए. के अध्यक्ष माइकल बुरावे तथा लगभग 180 युवा समाजशास्त्रियों की उपस्थिति से हुआ। कांग्रेस के परिपाटीय स्वरूप, जिसमें सामान्यतः संस्तरण एवं दूरी के पक्ष होते हैं–से भिन्न प्रकृति के सत्र 'माइकल बुरावे से संवाद' को कुछ महीनों पूर्व से ही प्रारम्भ कर दिया गया था जब युवा समाजशास्त्रियों ने कुछ मुद्दों को प्रस्तावित किया तथा कुछ प्रश्नों को उत्पन्न कर उनसे सहभागिता करने की इच्छा व्यक्त की। उन युवा समाजशास्त्रियों को प्रत्युत्तर देते हुए प्रोफेसर बुरावे ने वैज्ञानिक ज्ञान के लोकतान्त्रीकरण, अकादमिक सृजन/उत्पादन के बड़े केन्द्रों द्वारा वैज्ञानिक वैधता पर एकाधिकार, आर्थिक एवं सामाजिक संकटों के संदर्भ में सार्वजनिक क्षेत्र में समाजशास्त्रीय हस्तक्षेप की सम्भावनाओं एवं अन्य अनेक मुद्दों पर अपने विचारों को व्यक्त किया।

कांग्रेस के शेष तीन दिनों में एक अत्यन्त प्रभावशाली अकादमिक कार्यक्रम हुआ, जिसमें उद्घाटन सत्रों में ''समाज एवं राजनीति'', ''समाज, लोकतन्त्र एवं मूल्य'' एवं ''संकट एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य'' विषयों पर विमर्श हुआ जिसमें अनेक प्रसिद्ध नागरिकों एवं प्रचलित एवं प्रतिष्ठित पुर्तगाली समाजशास्त्रियों ने श्रोताओं के साथ सृजन मूलक अन्तः क्रिया की। सहभागियों के पैनल ने इस विषयों पर बहस को विषय की सीमाओं के परे ला दिया तथा वैज्ञानिक उत्पादन एवं सामाजिक तथा राजनीतिक क्रियाओं के मध्य सम्बद्ध ता स्थापित करने के प्रयास किये। विदेशी एवं पुर्तगाली विशेषज्ञों ने दक्षिण यूरोप की आर्थिक, श्रम एवं कार्य, शिक्षा एवं स्वास्थ्य, वृद्धजन एवं सामाजिक सुरक्षा, सीमा एवं पर्यावरण से सम्बद्ध नीतियों के परिणामों पर विमर्श किया। अन्त में कांग्रेस में अनेक विषय केन्द्रित सत्र हुए जिनमें संगठन एवं पेशों, शिक्षा का समाजशास्त्र, कला, संस्कृति एवं संचार, क्षेत्र एवं सीमाएं एवं वैश्वीकरण, राजनीति एवं नागरिकता के सत्र अत्यन्त लोकप्रिय हुए।

इन वैज्ञानिक कार्यक्रमों के साथ व्यापक स्तर पर सांस्कृतिक एवं मनोरंजनात्मक कार्यक्रमों का आयोजन भी हुआ जिनमें लघु फिल्मों का प्रदर्शन, विद्यार्थी थियेटर फोरम, संगीत कार्यक्रम (प्रसिद्ध वाद्य समूहों के साथ गृह विहीनों का आर्केस्ट्रा कासाड म्यूजिका की तरफ से शैक्षणिक सेवाओं के कार्यक्रम इसमें सम्मिलित थे) एवं पुस्तक मेला महत्व–पूर्ण थे। तीन दिवसीय कांग्रेस की समाप्ति पर एक रात्रि भोज आयोजित हुआ साथ ही वाद–प्रतिवादों के विशेष क्षण, समाजशास्त्रियों के मध्य निकटता के पल तथा भावुक क्षणों को याद किया गया। इस प्रकार बहस एवं वैज्ञानिक विवेचनाओं के एक वृहद आयोजन की समाप्ति हुई जिसने समकालीन पुर्तगाली समाज पर एक गहरी छाप छोड़ी। इस समाज में समाजशास्त्र हस्तक्षेप का एक महत्व–पूर्ण क्षेत्र बनता जा रहा है। पर सबसे महत्व–पूर्ण व अविस्मरणीय पक्ष यह रहा कि हमारी व्यक्तिगत जीवन यात्रा तथा समाजशास्त्र के लिए हमारी प्रतिबद्धता तथा उसे समीचीन बनाने की हमारी आकांक्षा सार्वजनिक रूप से स्थापित हो सकी। ■

[1] English translation by Dalila Cerejo (Associação Portuguesa de Sociologia).

> ताईवानी समाजशास्त्र के तिहरे मोड़

सिन–हुआंग माइकल सियो, निदेशक, इंस्टीट्यूट ऑफ सोशियोलाजी, एकेडिमिया सिनिका, ताईवान और पूर्व अध्यक्ष, ताईवान समाजशास्त्रीय परिषद

पुनरावलोकन में, ताइवान में समाजशास्त्र के इतिहास का अपना विशिष्ट चरित्र रहा है। यद्यपि ताईवान 1895 और 1945 के मध्य जापानी औपनिवेशिक शासन के अधीन रहा, फिर भी बीसवीं शताब्दी के ताईवान में जापानी समाजशास्त्रीय परम्परा की कोई स्पष्ट विरासत दिखाई नहीं देती है। न ही द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात जब चीनी राष्ट्रवादी दल (KMT) ने जापान के बाद ताईवान पर शासन किया जब भी चीनी गणतंत्र का ताईवान के समाजशास्त्र पर कोई स्पष्ट प्रत्यारोपण या निरंतरता नहीं दिखाई देती है। ताईवान में समाजशास्त्र का जन्म 1960 के प्रारम्भ में हुआ और तब वह अमरीकी समाजशास्त्र से गहन रूप से प्रभावित था जिससे 1960 और 1980 के मध्य निर्भरता का सम्बन्ध बना। फिर 1980 के दशक के शुरूआत में मनोविज्ञान और मानवशास्त्र के साथ समाजशास्त्र में 'स्वदेशीकरण/देशज आंदोलन' अमरीकी सामाजिक विज्ञान प्रतिमानों पर अत्यधिक निर्भरता की सामूहिक प्रतिक्रिया के रूप में आया। ताईवान के समाजशास्त्र का बौद्धिक परिदृश्य बदलने लगा।

शुरू में, ताईवान के द्वितीय पीढ़ी के समाजशास्त्रियों में आत्म–आलोचना पर सर्वसम्मति बनी। इनमें से अधिकांश अमरीका में प्रशिक्षित हुए थे। इनके अनुसार समाजशास्त्र में ताईवान पर ठोस अनुभवजन्य सैद्धान्तिकरण करने के प्रयासों के बावजूद ताईवान के यथार्थ से कम, प्रासंगिक था। इस द्वितीय पीढ़ी ने सन्निहित सांस्कृतिक और ऐतिहासिक ताईवान की पहचान के साथ जुड़े समाजशास्त्र के विकास की बात करी। शीघ्र ही समाजशास्त्री एक ''उदारीकरण आंदोलन'' की शुरूआत करेंगे जब उन्हें यह एहसास होगा कि KMT का अधिकारवादी शासन स्वस्थ और स्वतन्त्र समाजशास्त्र के विकास के लिए हानिकारक है। उन्होंने ताईवान में स्वतन्त्र और लोकतांत्रिक समाज की स्थापना की भी मांग रखी। उदारीकरण आंदोलन का उद्देश्य ताईवान में राजनैतिक लोकतांत्रीकरण को बढ़ाने में समाजशास्त्र को उपयोगी बनाना था। संक्षिप्त में, 1980 के दशक से, ताईवान में समाजशास्त्र ''स्वदेशीकरण/देशजीकरण के साथ उदारीकरण'' के दोहरे अनुभव का गवाह रहा है जिसने न केवल ताईवान के समाजशास्त्र के चरित्र का पुनर्विभाजन किया अपितु अप्रत्यक्ष रूप से देश के समाज और राजनीति के विकास की दिशा को भी रूपांतरित किया है।

विशिष्ट रूप से, पिछले तीन दशकों में ताईवान के समाजशास्त्र के ''स्वदेशीकरण/देशजीकरण के साथ उदारीकरण'' से संबंधित तीन मोड़ रहे हैं। पहला, ''मध्य/उदारवादी मोड'' था, जिसका उद्देश्य ताईवान के सामाजिक यथार्थ और सामाजिक बदलाव को कैद करना था। एक विशिष्ट कदम 1984 से प्रारम्भ नियमित और व्यापक स्तरीय ''ताईवान सामाजिक परिवर्तन सर्वेक्षण'' की शुरूआत और दृढ़ीकरण था। इसने उच्च स्तरीय आनुभाविक आंकड़े उपलब्ध करा ताईवान समाज के मुख्य झुकावों का प्रलेखन करने का प्रयास किया। दूसरा, एक संक्रमणकालीन समाज के रुप में ताईवान के समक्ष आनें वाली विशिष्ठ सामाजिक समस्याओं को उजागर और विश्लेषित करने वाली

> **"अति जीवंत समाजशास्त्र ताईवान के सामाजिक रुपान्तरण के साथ विकसित हुआ"**

संपादित पुस्तकों की एक श्रंखला का प्रकाशन करना था। अब तक 1979, 1984, 1991, 2002, 2005 और 2010 में छः खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं। ये शिक्षाविदों और जनता दोनों के लिए समान रूप से ही विश्वसनीय संदर्भ पुस्तकों के रूप में काम कर रही है।

समाजशास्त्र का दूसरा कदम 'क्रिटिकल मोड़' था जिसने महत्वपूर्ण सार्वजनिक मुद्दों के साथ सम्बद्धता दर्शायी। एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कदम KMT के अधिकारवादी शासन द्वारा अनुमोदित राजनैतिक वर्जना को चुनौती देना है। यह उन्होंने पूर्व में प्रतिबंधित तीन शोध क्षेत्र – नृजातीयता और नृजातीय सम्बन्ध, सामाजिक वर्ग और वर्ग–विभाजन, और लिंग एवं लैंगिक असमानता पर शोध प्रारंभ कर किया। अतः

>>

यह आश्चर्यजनक नहीं है कि 1980 और 2011 के मध्य प्रकाशित 160 संपादित पुस्तकों के 1133 अध्यायों में सामाजिक वर्ग, सामाजिक गतिशीलता, संरचनात्मक परिवर्तन और सम्बन्धित विषय अग्रणी हैं (कुल 214 अध्याय), जिसके पीछे नृजातीयता संबंधित थीम है (131 अध्याय), और फिर लिंग केन्द्रित मुद्दे (78 अध्याय) हैं। एक अन्य मुख्य शोध परियोजना नागरिक समाज में सामाजिक सक्रियता और उभरते हुए सामाजिक आंदोलनों के उत्थान एवं कार्यप्रणाली का दस्तावेज बनाने की थी। अतः अभी तक सामाजिक आंदोलनों पर 5 मुख्य संपादित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं और वे कैम्पस के साथ–साथ सामाजिक आंदोलनों के हलकों में भी व्यापक रूप से प्रयोग में लाई जा रही हैं। इनका प्रकाशन 1989, 2000, 2006, 2010 और 2011 में हुआ।

तीसरा शिफ्ट ''अतिवादी मोड़'' था जिसने ताईवान के राजनैतिक लोकतांत्रीकरण के अन्तर्गत समाजशास्त्र को एक भूमिका प्रदान की है। कई पेशेवर समाजशास्त्री लोकतंत्र के ध्येय की रक्षा और विकास के लिए सक्रिय रूप से अखबारों और लोकप्रिय पत्रिकाओं में निबन्ध लिख रहे थे, सार्वजनिक सेमीनारों, पत्रकार सम्मेलनों में भाग या फिर उनका आयोजन कर रहे थे। सार में, ताईवान के समाजशास्त्रियों ने 1980 के दशक से ही लोक समाजशास्त्र को व्यवहार में लिया या फिर उन्होंने समाजशास्त्र को ताईवान के लोकतंत्र समर्थक आंदोलन के साथ सम्बद्ध कर रखा है। काफी ताईवानी समाजशास्त्रियों ने लोकतंत्र समर्थक आंदोलनों में लोक बुद्धिजीवी और कार्यकर्ता के रूप में लोकतंत्र समर्थक आंदोलनों की शुरूआत, लामबंदी और विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका निभाई है।

1980 के दशक से समाजशास्त्र का द्वन्द्व और सामाजिक रूपांतरण दर्शाता है कि समाजशास्त्र का सर्वाधिक गतिशील और जीवन्त विकास ताईवान के गहन रूपांतरण के समय हुआ। ताईवान के सामाजिक और राजनैतिक परिवर्तनों ने स्थानीय समाजशास्त्रियों की ताईवान के यर्थाथ के साथ सावयवी सम्बद्धतता विकसित की है। इसने क्रिटिकल समाजशास्त्रीय शोध कर के सत्तावादी शासन को चुनौती देने की उर्जा और यहाँ तक कि उन्हें लोकतंत्र समर्थक आंदोलनों में भाग लेने के लिए भी प्रेरित किया है। ऐसा करने से ताईवान का समाजशास्त्र न सिर्फ एक उदार उद्यम बनता है बल्कि इसने प्रत्युत्तर में ताईवान के समाज को अधिक लोकतांत्रिक बनाने में भी मदद की है। ■

> लघु राष्ट्र समाजशास्त्र की दुर्दशा: ताईवान का मामला

सू–जेन हुआंग, राष्ट्रीय ताईपे विश्वविद्यालय, ताईवान

साठ वर्ष पूर्व शायद ही किसी पीएच. डी. प्रशिक्षण प्राप्त मुट्ठी भर समाजशास्त्रियों के साथ शुरू हुआ समाजशास्त्र ताईवान में हाल के कुछ वर्षों में 300 पीएच.डी. स्तरीय विद्वानों के साथ एक विषय के रूप में विकसित हो गया है। इसने शोध में उल्लेखनीय प्रगति की है और कई बार सार्वजनिक नीति विवेचना में योगदान दिया है। इसने कृषि समाज से औद्योगिक शक्ति में तीव्र गति से परिवर्तित होने वाले देश के उपयुक्त ही लंबे कदम भरे हैं।

फिर भी ताईवान के समाजशास्त्र के लिए अपने ही समाज की सैद्धान्तिक और पद्धतिशास्त्रीय समझ विकसित करने की सीमा है। यह सीमा, उसके शैक्षणिक समुदाय की लघुता जो कि देश की जनसंख्या के आकार व शैक्षणिक निवेश से निर्मित होती है, के द्वारा थोपी गई है। इस सीमा की कई अन्य लघु देशों और अन्य सामाजिक विज्ञानों पर भी लागू होने की संभावना है।

अन्य शैक्षणिक विषयों के समान ही आज समाजशास्त्र इतना विशेषीकृत है कि यह सामान्य रूप से अनेक उप क्षेत्रों में विभाजित है, जिनमें से प्रत्येक में एक दर्जन से भी अधिक प्रमुख शोध विषय हैं। इस तरह के विशेषीकृत विषय को किसी भी मुख्य मुद्दे पर अर्थपूर्ण अध्ययन करने के लिए कई वर्षों तक सैद्धान्तिक–पद्धतिशास्त्रीय प्रशिक्षण और अभ्यास की आवश्यकता होती है। मात्र तीन सौ समाजशास्त्रियों के समुदाय का अर्थ है कि ताईवान में समाजशास्त्र के अधिकांश उपक्षेत्र ज्यादा से ज्यादा मुट्ठी भर सक्रिय अनुसंधानकर्ताओ को भर्ती कर पाते हैं और कई महत्वपूर्ण सामाजिक घटनाएँ बिना शोध के ही छूट जाती हैं।

चूंकि ताईवान के समाज के कई पहलु समाजशास्त्रीय अनुसंधान से अछूते रहते हैं, ताईवान के बारे में हमारी समाजशास्त्रीय समझ में बहुत अधिक और बड़े खाली स्थान हैं। ज्ञान में यह कमी हमारे अनुसंधान को गंभीर रूप से बाधित करता है। परामर्श और उद्धरण देने हेतु स्वदेशी अध्ययनों की अपर्याप्त आपूर्ति के बिना, हमारे अनुसंधान और शिक्षण को स्वदेशी सामग्री की तुलना में विदेशी पर अधिक निर्भर रहना पड़ता है। स्थानीय स्थिति के लिए, हमें अधिकतर अटकलों का सहारा लेना पड़ता है। इसके परिणामस्वरूप ताईवान के समाज के बारे में हमारी समझ का एक महत्वपूर्ण हिस्सा वास्तव में ठोस अनुसंधान की बजाय शिष्ट अनुमान पर आधारित है और शैक्षणिक प्रतिवेदनों के पाठकों को ठोस ज्ञान से अनुमान में भेद करने में अत्यन्त कठिनाई होती है।

विद्वानों का ध्यान आकर्षित करने वाले उपक्षेत्रों में भी सक्रिय शोधकर्ताओं की संख्या आम तौर पर एकल अंक में ही है। प्रकाशन छितरे और धीमे दिखाई देते हैं, अक्सर यदि दशकों में नहीं तो कई वर्षों में। अपेक्षाकृत लोकप्रिय उपक्षेत्रों में भी अपने कार्य का हवाला दिया जाने या उस पर टिप्पणी के लिए कई वर्ष लग जाते हैं। सहकर्मियों के साथ लाभकारी संवाद अक्सर एक स्वप्न है। शैक्षणिक एकांत कई

> **“ताइवानी समाजशास्त्र मोटे तौर पर नकल अध्ययनों का एक आयातित प्रतिस्थापन उद्योग है”**

शोधकर्ताओं के लिए एक साधारण बात है। श्रेष्ठ शोधकर्ता भी प्रतिपुष्टि और सराहना की कमी से कुण्ठित हो जायेगा।

सबसे बदतर यह है कि सहकर्मियों और संवाद का अभाव का अर्थ शोध में जाँच और सुधार में कमी भी है। किसी अतिशय स्थिति में, किसी विषय पर प्रकाशन एक दशक तक उस विषय पर सिर्फ बुरी तरह से त्रुटिपूर्ण उपलब्ध स्वदेशी सामग्री के रूप में उपलब्ध रहें जिसके कारण वह अकारण ही पारम्परिक ज्ञान का दर्जा प्राप्त कर ले और सभी लोगों को भ्रमित कर दे।

जब कई विषयों पर बहुत कम अनुसंधान हुआ हो या फिर स्पष्ट रूप से गलत समझे गये हो, तो अच्छी तरह से अध्ययन किये गये विषय भी गलत धारणा से ग्रसित हो सकते हैं। वजह बिल्कुल स्पष्ट है। अनुसंधान करते समय हम शुरूआत से प्रारम्भ नहीं करते। इसके बजाय हम आम तौर पर पृष्ठभूमि के तौर पर ज्ञान के सामान्य भण्डार, जो कि शैक्षणिक समुदाय और हमारे समाज की सामान्य समझ से सामूहिक रूप से निर्मित होता है, पर निर्भर करते हैं। इस सामान्य ज्ञान के भण्डार की पृष्ठभूमि में हम अपने आंकड़ों की व्याख्या करते हैं और हमारे शोध के निष्कर्ष तक पहुँचते हैं। जब हमारे स्वयं के समाज के बारे में यह सामान्य ज्ञान का भण्डार बेहद अपूर्ण है और अक्सर संदिग्ध है, सबसे मेहनती शोधकर्त्ता भी अपने निष्कर्षों को गलत अर्थ लगाने की जोखिम रखता है। दूसरे शब्दों में, हमारा शोध प्रारूप, तथ्य संकलन और तथ्य विश्लेषण कितना भी अच्छा क्यों न हो, हमारे समाज के बारे में पृष्ठभूमिक ज्ञान में गंभीर कमी हमारे शोध परिणामों को त्रुटिपूर्ण व्याख्या की तरफ ले जा सकती है।

इसके अलावा, स्थानीय अनुसंधान की कमी मौलिक अवधारणाओं और सिद्धान्त, जो अपने स्वयं के समाज की विशिष्टता के विश्लेषण करने के लिए आवश्यक हैं, के उद्‌भव को बाधित करती है। हर समाज की अपनी कुछ विशिष्टता होती है, जो विदेशों से आयातित अव–धारणाओं और सिद्धान्तों से पूर्ण रूप से समझी नहीं जा सकती। इस तरह की दुर्लभ स्थिति में स्थानीय तथ्यों के साथ ही, अपने समाज को पूर्ण रूप से समझने के लिए स्थानीय अवधारणा या सिद्धान्त की आवश्यकता होती है। फिर भी उन्हें विकसित करने के लिए पर्याप्त विद्वान नहीं हैं। उन भाग्यशाली और दुर्लभ मामलों में भी जहाँ विद्वान एक अच्छी मौलिक अवधारणा या सिद्धान्त लाने के लिए सक्षम हैं, वहाँ उसकी सराहना करने और उद्धरण/हवाला देने वाले कुछ ही सहकर्मी होंगें। आयातित अवधारणा और सिद्धान्त, जो कि अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशनों में हजारों नहीं तो सैंकड़ों की संख्या में उल्लेखित (citations) हैं, से प्रतिस्पर्धा कर स्थानीय अवधारणा या सिद्धान्त के स्थानीय अनुयायी जीत पाने के अवसर बहुत कम हैं। ''देशज'' अवधारणा और सिद्धान्त की फैशनेबल माँग के बावजूद तथ्य यह है कि ऐसे स्थानीय अव–धारणाओं और सिद्धान्तों के पुष्पण के लिए पर्याप्त सहकर्मी, पर्याप्त उद्धरण नहीं हैं जिसके कारण शैक्षणिक बाजार में इनकी विश्वसनीयता नहीं बन पाती है। इसके फलस्वरूप ताईवान का समाजशास्त्र स्थानीय आंकड़ों को आयातित माडलों में डाल कर नकलची अध्ययन पैदा कर एक आयात–प्रतिस्थापन उद्योग के रूप में प्रस्तुत होता है।

तो हम निराशावादी होने के अलावा क्या कर सकते हैं? इतनी अधिक सार्वजनिक नीतियों में सामाजिक विज्ञानों की प्रासांगिकता और मूल्य और अज्ञानता के कारण त्रुटिपूर्ण सार्वजनिक नीति की जबरदस्त सामाजिक लागत को देखते हुए, सामाजिक विज्ञानों में निवेश के लिए जोर डालना हमारा उत्तरदायित्व है। दूसरी ओर, हमें हमारे समाज के बारे में समझ की सीमाओं को ईमानदारी से स्वीकार करना चाहिए, व्यापक सामाजिक ज्ञान को बनाने में मेहनती और शोध व्याख्याा में अधिक आत्म चिंतनशील होना चाहिए। ■

> चिली में नैतिक मुद्दे और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता

ओरियाना बर्नास्कोनी, यूनिवर्सिडाड अल्बर्टो हुर्टाडो, सैन्टियागो, चिली

''जो सामान्य नैतिकता की तरह गिनी जाती है, वह गलत ही नहीं बल्कि परिवर्तनशील है''

(सेयला बेनहबीब, 2004)

पिछले दशकों में चिली ने स्वास्थ्य, शिक्षा, पेंशन और श्रम बाजार में सामाजिक सुधार देखे हैं। इसमें कोई शक नहीं है कि इन सुधारों ने अधिक समावेशी और अधिक समान समाज के विकास में योगदान दिया है। हालांकि अभी और बहुत कुछ करना बाकी है। निजी स्वायत्तता, आर्थिक समानता, राजनैतिक भागेदारी और भेदभाव के विरूद्ध संरक्षण से सम्बन्धित विशाल चुनौतियाँ लम्बित हैं। एक परिपक्व लोकतंत्र के लिए इन सभी क्षेत्रों में विकास चाहिये और सामाजिक झगड़े जैसे उदासीनता, गलतफहमी या अविश्वास में कमी को सुझलाने वाले ज्ञान के उत्पादन में सामाजिक विज्ञानों की भूमिका है।

चिली में, सामाजिक झगड़े जिसमें नैतिक तत्व मुख्य हैं, मूल्य मतभेद (disputes votoricas) कहलाते हैं। इच्छा मृत्यु का अधिकार, तलाक के कानून, गर्भपात का वैधीकरण या फिर यौन अल्पसंख्यकों के अधिकार पर सामाजिक बहस इस श्रेणी में आती है। चिली के समाज में अधिकांश सार्वजनिक बहस कानून के इर्द गिर्द उभरी हैं। चूंकि इन मुद्दों पर चर्चा एक समुदाय के सदस्यों की एक दूसरे के प्रति अधिकार और कर्त्तव्यों पर बहस की मांग करती है, इनका अध्ययन हमें समाज की नैतिक संस्कृति के बारे में बहुत कुछ बता सकता है। उदाहरण के लिए, यह भले और उचित के प्रचलित विचार और उनका सामाजिक वितरण, नैतिक प्रतिमानों के स्त्रोत और नैतिक विमर्श में काम में आने वाले व्यवहार को दिखा सकता है।

लोकतंत्र की बहाली के साथ, चिली समाज में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को व्यापक बनाने और लोगों की जिंदगी और निर्णयों में से सार्वजनिक हस्तक्षेप को कम करने के लिए भिन्न सुधारों को प्रस्तावित और उन पर चर्चा करने लगी। यदि अधिकांश पश्चिमी यूरोपीय समाजों में गर्भपात ने ऐसी कई नैतिक बहसों का उद्घाटत किया और इच्छामृत्यु का मुद्दा बाद में आया, चिली में इस तरह के संवैधानिक सुधारों के दावे 1990 के दशक के शुरूआत में यौन शिक्षा के प्रश्न से प्रारम्भ हुए। इसके बाद एक तलाक के कानून पर नौ वर्षीय बहस 2004 में ही (2004 में ही स्वीकृत) और फिर ''गरिमा के साथ मृत्यु'' को नियंत्रित और इच्छामृत्यु के अधिकार को स्थापित करने वाले छः भिन्न कानूनी पहलों पर चर्चा जो 2000 से 2012 के वर्षों में हुई। लैंगिक अल्पसंख्यकों के अधिकार और ''मोर्निंग–आफ्टर'' गर्भपात की गोली पर आज भी बहस चालू है। जब व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को व्यापक करना और भेदभाव के खिलाफ लड़ाई राजनैतिक प्रोजेक्ट बन जाते हैं तब समाज इस तरह के झगड़ों में शामिल हो जाता है। जहाँ चिली के कुछ व्यक्ति इन माँगों को नैतिक परिपक्वता के रूप में मनाते हैं, अन्य इनके तकलीफदेह सहनशीलता, नैतिक अपकर्ष और यहाँ तक कि संकट के प्रतीक के रूप में भर्त्सना करते हैं।

मैंने चिली में इच्छामृत्यु और ''गरिमा के साथ मृत्यु'' को नियमित करने वाली कानूनी पहल द्वारा उठाई गई बहस में प्रयोग में आने वाले औचित्य के दौर और समीक्षा का पुनः निर्माण और विश्लेषण किया है। यह एक बुनियादी कानूनी और नैतिक बहस थी। जैविक और जीव–चिकित्सा शोध में होने वाले नवीन आविष्कारों ने हस्तक्षेप, छलकपट, विस्तार, सुधार और मानव जीवन को खत्म करने की नई संभावनाओं का सृजन किया है जिससे इसका अर्थ ही पुनः परिभाषित हो रहा है। इच्छामृत्यु के साथ इन–विट्रो फर्टिलाइजेशन, क्लोनिंग या किराये के गर्भ के मामले हमें बताते हैं कि समान संरचना और अन्तर्वस्तु वाले सामाजिक–तकनीकी विवाद निरंतर होते रहते हैं जिससे नैतिक चुनौतियाँ प्रस्तुत होती हैं।

इस विवाद का विश्लेषण दो नैतिक सिद्धान्तों के बीच विभाजन दिखाता है: रोगी की स्वायत्तता और जीवन की अलंघनीय प्रकृति। इच्छामृत्यु के अधिकार की पैरवी करने वाले इसे असहनीय और अपरिवर्तनीय दर्द से पीड़ित रोगी द्वारा अपने चिकित्सक से स्वैच्छिक और सकारात्मक कृत्य की मांग के रूप में देखते हैं। प्रस्ताव का विरोध

"मूल्यजनित झगड़े – नैतिक परिपक्वता अथवा नैतिक क्षरण"

करने वाले इस कृत्य की चिकित्सीय संदर्भ के परे विस्तार कर इसमें निष्क्रिय इच्छामृत्यु या फिर आवश्यक उपचार में चूक के कारण मृत्यु को भी सम्मिलित करते हैं। परन्तु यह बहस इन सिद्धान्तों के विचार–विमर्श से परे चली गई और इसमें कानून द्वारा नियमित होने वाली स्थितियों की परिभाषा : मौत की प्रकृति और सहयोगी आत्महत्या के विचार, साधारण या असाधारण उपचार, मरणासन्न रोगी या प्रशामक उपचार सेवा, सभी बहस के तहत थे। अतः बहस में न सिर्फ वे मूल्य थे जिनकी नागरिक रक्षा करना चाहते हैं बल्कि सामाजिक–राजनैतिक आशय और तथाकथित पृथक् तकनीकी तथ्य का इस्तेमाल और इन ''लैट मार्डन'' समय में नैतिकता और विज्ञान का गूँथना भी शामिल हैं। ■

[1] I interviewed Members of Parliament, and bioethicists involved in the controversy, studied the legal proposals and their discussion in Parliament, and examined coverage in academic articles and newspapers.

> चिली में पर्यावरणीय राजनीति की सीमायें

एलेजान्ड्रो पैल्फिनी, यूनिवर्सिडाड अल्बर्टो हुर्टाडो, सैण्टियागो, चिली एवं फ्लाकसो (FLACSO)–अर्जेन्टीना

चिली के पैटागोनिया में एक बडे पैमाने के जलविद्युत बांध के विरुद्ध प्रदर्शन

सन् 2011 में विश्व समाचारों में से चिली का अचानक एक महत्वपूर्ण स्थान बन गया। विश्व में उच्च शिक्षा की सर्वाधिक खर्चीली एवं असमान व्यवस्थाओं में से एक प्रणाली चिली में विद्यमान है जिसके विरूद्ध विद्यार्थी असन्तोष का उभार हुआ और इस असन्तोष पर विश्व का ध्यान, जो अप्रत्याशित था, आकर्षित हुआ। सामान्य रूप से कहें तो स्पष्ट है कि वह वर्ष सामाजिक आन्दोलनों के विस्तार एवं नागरिकों के क्षैतिज राजनैतिकीकरण के विस्तार के लिये जाना गया। इन नागरिकों ने नव्य उदारवार की मजबूती को अकर्मकता के साथ स्वीकार कर लिया है हालांकि लोकतन्त्र की शक्तियाँ बीस वर्षों के दौरान मजबूत भी हुई हैं। यह नवीन राजनीति न केवल विद्यार्थी विरोध के आस पास अभिव्यक्त हुई अपितु परम्परागत वितरण–मूलक विभाजन के परे भी विभिन्न क्षेत्रों में इस नवीन राजनीति की उपस्थिति देखी गयी। देशज जनसंख्या का अधिकार एवं स्वायत्तता एवं कुछ ''सामान्य अवयवों'' का संरक्षण जिन्हें पर्यावरणीय विरासत कहा जाता है के पक्षों को उन लोगों से समर्थन एवं एकजुटता मिली जो इन पक्षों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े नहीं थे।

स्थानीय समुदायों के अनेक विरोध प्रदर्शनों से लेकर राजधानी सैण्टियागो में विशाल आन्दोलन, चिली के ऐतिहासिक नगरों में से एक पैटागोनिया में विशाल हाइड्रोइलैक्ट्रिक बाँध के विरोध में प्रदर्शन, थर्मोइलैक्ट्रिक केन्द्रों की स्थापना के विरूद्ध तथा बड़े पैमाने पर खनन के विरूद्ध प्रदर्शन चिली में उभरे। व्यापक पैमाने पर नागरिकों का एक आन्दोलन

>>

प्रारम्भ हुआ जिसने न केवल देश की पर्यावरण नीति पर सवाल उठाये अपितु वृहद् उर्जा नीति एवं उसके गैर–संपोषक मूलक (नान सस्टेनेबिल) संकेन्द्रण प्रारूप तथा कच्चे माल से उत्पादन के साथ सम्बद्धता जैसे पक्षों पर भी सवाल खड़े किये। एक दृष्टि में चिली विश्व के उन पहले राज्यों में एक है जहाँ नव्य उदारवार के परीक्षणों को सापेक्षिक रूप में सफलता के साथ किया गया है। ये परीक्षण अचानक व्यक्त करते हैं कि अर्द्ध–परिधिमूलक समाजों में पारिस्थितिकीय आधुनिकीकरण के लिए कोई देश कैसे एक प्रयोगशाला बन जाता है।

चिली की पर्यावरण नीति लगभग 10 वर्ष से अधिक पुरानी नहीं है। यह नीति तर्क की दृष्टि से दक्षिणी सीमान्त क्षेत्र में सालमोन (एक विशेष प्रकार की मछली) के संकेन्द्रण की प्रक्रिया से उभार लेती है। यह आवश्यक रूप से प्रतिक्रिया मूल प्रकृति की है। तथ्यों के उपरान्त मूलतः क्रियात्मक हुई है। यह जनता के एजेण्डा के उभार की प्रक्रिया में योगदान नहीं करती अपितु पहले से स्थापित उस एजेण्डा के मूल्यांकन एवं उपयुक्तता को निश्चित करती है जो उत्पादन मूलक एवं कच्चे माल से उत्पादन वाले निवेश के इर्द गिर्द हैं। ये नीतियाँ उस कच्चे माल के पुनः उत्पादन एवं खनन को वैधता देती हैं जो कि चिली की आज की सापेक्षिक समृद्धि/सम्पत्ति का आधार है। सालमोन (एक बड़ी मछली) का पालन एवं उसकी वृद्धि, जंगल की लकड़ी (टिम्बर) एवं खनन सामग्री चिली की मुख्य निर्यातक वस्तुएं हैं। पर्यावरण नियमन हेतु ये मुख्य केन्द्र हैं जिनके साथ तीन उद्देश्य सम्बद्ध हैं–संसाधनों (लेकिन आसपास की पारस्थितिकीय व्यवस्था का नहीं) का संरक्षण, सामाजिक–पर्यावरण के रूप में ये उद्देश्य उपस्थित हैं। संसाधनों के खनन पर केन्द्रित इस पर्यावरण नीति में तीन प्रमुख कर्ता सम्मिलित हैं–निवेशक (सामान्यतः बहुराष्ट्रीय निगम), राज्य जो कि एक समर्थ इकाई है और निवेश परियोजना को अधिकृत करती है एवं विशेषज्ञ (विषय की गहन समझ वाले व्यक्तित्व अथवा पर्यावरण प्रभाव के मूल्यांकन के अभिकरण) जो कि एक परियोजना को वैज्ञानिक वैधता प्रदान करते हैं। ये कर्ता एक अत्यन्त मजबूत ताने बाने के माध्यम से परस्पर जुड़े रहते हैं। एक अन्तरा–अभिजन गठबन्धन पर्यावरण राजनीति के क्षेत्र पर प्रभुत्व स्थापित करता है जबकि नागरिकीय समाज एवं साधारण नागरिक अवलोकनकर्ता की भूमि के अन्तर्गत सिमट जाते हैं।

मेरी परियोजना इस पक्ष का विश्लेषण करती है कि किस प्रकार यह जाल (नेटवर्क) अपने आपको एक प्रभावी विमर्श के रूप में उभारता है (मुख्यतः निगमीय सामाजिक दायित्व के साथ जुड़ा विमर्श), कैसे यह जाल एक विशेषाधिकार प्राप्त संस्थागत कार्यक्रमीय तन्त्र (स्वैच्छिक कार्य क्रमीय तन्त्र) के ईद गिर्द संगठित होता है एवं किस प्रकार यह जाल पर्यावरणीय प्रभाव मूल्यांकन को पर्या–वरणीय नीति क्षेत्र को वैधता देने हेतु एवं उसके प्रभुत्व को पुनः स्थापित करने हेतु प्रयुक्त करता है। इस संदर्भ में प्रगतिशील एवं लोकतान्त्रिक मूल्य एवं आदर्श जैसे जवाबदेही, पारदर्शिता एवं सहभागिता उस उपकरण के रूप में सिमट जाते हैं जो राज्य, बाजार एवं नागरिकीय समाज को पृथक करते हैं तथा लचीली साझेदारी एवं स्व नियमन को प्रोत्साहित करते हैं। इतना अवश्य है कि एक सामूहिक शिक्षण प्रक्रिया प्रारम्भ हो चुकी है एवं लोकतान्त्रीकरण के मापन के कुछ पक्ष भी उभर आये हैं लेकिन इस शिक्षण प्रणाली पर नजर रखी जा रही है जो कि कमजोर लोकतान्त्रिक प्रक्रियाओं के अन्तर्गत है। इन सब से यह सवाल उठता है कि क्या ये सीमायें केवल उस ''सरल'' यन्त्रपरकीकरण के कारण हैं जो अभिजन समूहों के निगमीय गठबन्धन से उभरा है या यह उन आदर्शों (जवाबदेही, पारदर्शिता एवं सहभागिता) से सम्बन्धित है जो कि अन्तिम विश्लेषण में कम प्रगतिशील एवं लोकतान्त्रिक होते हैं जबकि अनुमान ऐसे नहीं थे। एक संवेदनशील एवं सक्रिय नागरिकता कुछ नवाचारी प्रश्नों को सार्वजनिक क्षेत्र में उभार रही है और राजनीति को स्थापित संस्थागत ढाँचों से परे ले जा रही है अर्थात् सड़कों एवं संचार माध्यमों में ये पक्ष सक्रिय हो रहे हैं। ■

1. यह परियोजना एक वृहद परियोजना 'फार्मल इन्स्टीट्यूशन्स् एण्ड इनफार्मल नैटवर्क्स इन पब्लिक पालिसीज इन चिली ' (FONDECYT NO 1110428) का भाग है जिसके समन्वयक पैट्रिसिओ मिरान्डा हैं।

> चिली के सैन्टियागो के केन्द्र में

एक प्रवासी व्यवसाय

केरोलिना स्टेफोनी, यूनिवर्सिडाड अल्बर्टो हुर्टाडो, सैन्टियागो, चिली

कोलम्बियन एवं पेरुवियन प्रवासियों की सेवार्थ परचूनी की एक दुकान चिली के सैंटियागो के केन्द्र में

सैन्टियागो ड चिली के नागरिक और ऐतिहासिक केन्द्र के बीच में शहर का सबसे बड़ा प्रवासी अतः क्षेत्र है। यह क्षेत्र भिन्न लेटिन अमरीकी देशों से काफी बड़ी संख्या में अप्रवासियों को एकत्रित करता है। हालांकि इसमें पेरू अप्रवासियों का स्पष्ट बहुमत है। इन पेरू अप्रवासियों ने एक गहन व्यवसायिक गतिविधि, जो विदेशी आबादी के लिए उत्पाद पर केन्द्रित है जैसे कुकवेयर, पूर्व–निर्मित भोजन जो गली के नाश्ते के रूप में बिकता है, कॉल सेन्टर्स, पार्सल से माल भेजना और विप्रेषित धन सेवाएँ।

इस अतः क्षेत्र के विकास के पीछे के कुछ कारक हैं : पिछले कुछ दशकों से शहर के केन्द्र से निर्जनीकरण की सतत प्रक्रिया के परि–णामस्वरूप पुराने घरों और वाणिज्यिक दुकानों में उपलब्धता छोटे कमरों में उप–विभाजित और अनौपचारिक रूप से किराये पर दिए गए घरों की उपलब्धता के कारण अप्रवासियों की सघनता; पेरू मूल के उत्पाद उपलब्ध कराने वाली आयात कम्पनियों की स्थापना जो इस क्षेत्र में कार्य शुरू करने वाले विक्रेताओं को उपलब्ध कराती है; Consertacion सरकारों

>>

सैंटियागो का एक शापिंग माल जो कि लातिन अमेरिका के सभी जगह से आये हुए प्रवासियों के एक व्यापारिक एवं सामुदायिक केन्द्र में परिवर्तित हो गया है।

द्वारा कराई गई दो राजक्षमा प्रक्रियाएँ (मध्य वामपंथियों का राजनैतिक गठबंधन) जिसने अप्रवासियों के नियमन की अनुमति दी और उनके औपचारिक व्यापार में समावेश को सुविधाजनक बनाया।

मैं इस अतः क्षेत्र की तीन केन्द्रीय विशेषताओं को उजागर करना चाहूँगी। पहला, अप्रवासी श्रम और व्यापार में, औपचारिक और अनौपचारिक कार्य प्रणालियाँ अक्सर ओवर लैप करती है। जहाँ एक ओर नगरीय सरकार ने सड़क व्यापार को बंद करने की कोशिश की है, वर्तमान में कई औपचारिक स्टोर अभी भी सड़क पर बिक्री बिना अनुबंध के काम या उन उत्पादों को बेचना जिसके लिए अनुमति नहीं है, जैसी अनौपचारिक कार्य प्रणालियोँ का निर्वाह कर रहे हैं। ये प्रणालियाँ उच्च स्तर के आंतरिक प्रतिस्पर्धा वाले बाजार के कारण कम स्तर के आर्थिक लाभ की स्थिति में विक्रेताओं के लाभ को बढ़ाने की केवल रणनीति हैं।

दूसरी दिलचस्प विशेषता है कि अप्रवासी समुदाय के द्वारा पहचान निर्माण में अतः क्षेत्र एक भौगोलिक सन्दर्भ बिन्दु के रूप में काम करता है। यह स्थान सैन्टियागो में रहने वाले अप्रवासियों के मध्य, शहर के अन्य निवासियों के द्वारा और अप्रवासियों के मूल देश में रहने वाले लोगों के द्वारा विदेशी के रूप में एक जैसी स्थिति भोगने वाले लोगों के मिलने की जगह के रूप में विख्यात है।

तीसरा तत्व शहर के अन्दर इस अतः क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति से संबंधित है और कैसे यह अतः क्षेत्र के द्वारा ग्रहण किये गये स्वरूप और अर्थों को प्रभावित करता है। यह तथ्य कि यह सैन्टियागो के नागरिक और ऐतिहासिक केन्द्र में स्थित है का अर्थ हैं कि प्रवासी क्षेत्र में रहने वाले अन्य निवासियों के साथ सभी प्रकार के सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करते हैं, चाहे वो कार्यालय के कर्मचारी, पर्यटक, जन सेवक या फिर सामान्य रूप में श्रमिक हों। जिस तरह के सामाजिक सम्बन्ध वे स्थापित करते हैं, वे चरित्र, अर्थ और सीमाओं के द्वारा अतः क्षेत्र को आकार देने में मदद करते हैं।

वास्तव में, प्रवासियों द्वारा सिटी सेण्टर में एक निश्चित भौगोलिक स्थान पर निवास करने के तरीके ऐसे अर्थ और अभिवेदन पैदा करते हैं जो शहर के अन्य निवासियों के साथ अक्सर तनाव पैदा करते हैं। यहाँ दो उदाहरण देना संभव है। पहला यह विचार कि शहर का यह क्षेत्र नगर की दृष्टि से महत्व पूर्ण है क्योंकि यहाँ कार्यपालिका और न्यायिक शक्तियों जेसे स्टेट बिल्डिंग, न्याय विभाग, और कई मन्त्रियों के कार्यालय स्थित हैं। इस शहर की स्थापना भी यहीं हुई थी और स्वतन्त्रता के घोषणा पत्र पर भी यहीं हस्ताक्षर हुए थे। अतः विदेशियों की ओर उनके लिए स्थान का विचार शक्तिशाली ऐतिहासिक और लोकतांत्रिक महत्व के साथ तनावपूर्ण है।

दूसरा, अतः क्षेत्र एक वैश्विक शहर के विचार के प्रश्न को उठाता है। यह हाल ही में शहर की सरकार द्वारा सैन्टियागो को आधुनिक तरीके से प्रस्तुत करने का एक तरीका है। इसमें साफ, सुरक्षित और व्यवस्थित शहर के रूप में बढ़ाने के कैम्पेन और कई दशकों से बढ़ता हुआ निर्जनीकरण और परित्याग वाले ऐतिहासिक क्षेत्र में नगरीय स्पेस को पुनः प्राप्त करने की तरफ अभिमुखित नीतियाँ शामिल हैं। अप्रवासियों का अतः क्षेत्र वैश्विक शहर या एक अंतर्राष्ट्रीय व्यापार केन्द्र के विचार के साथ असामयिक है।

अप्रवासियों की उपस्थिति और स्थान के उपयोग के तरीकें, इन विवरणों के बीच, सार्वजनिक स्थान में विवाद उत्पन्न करते हैं। ये विवाद अतः क्षेत्र के चरित्र के निर्माण में सहयोग देते हैं। ■

> समाजशास्त्र के अन्तर्राष्ट्रीयकरण की चुनौतियाँ

एलोइजा मार्टिन, रियो डि जैनरियो विश्वविद्यालय, ब्राजील एवं करैन्ट सोशियोलोजी की सम्पादक

वर्त्तमान में विश्व के हर क्षेत्र के उच्च शिक्षा के संस्थानाओं में एक माँग सब जगह सुनी जा सकती है। वह माँग अन्तर्राष्ट्रीयकरण है। इस माँग को अन्जाम देने के अनेक प्रयासों में से एक प्रयास ''हाइ इम्पैक्ट'' अकादमिक शोध पत्रिकाओं में प्रकाशन है। पिछले तीस से अधिक वर्षों में इस प्रयास को रेखांकित किया गया है एवं विज्ञान में सामान्य रूप से तथा समाज विज्ञानों में विशिष्ट रूप से इसे आधारभूतीय अर्हताओं में से एक अर्हता के रूप में स्वीकारा गया है। इसके साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशन का अभिप्राय अंग्रेजी भाषा में प्रकाशन से है। स्पैनिश, फ्रैंच, अरबी अथवा जर्मन भाषाओं में पत्रिकाओं के प्रकाशन कुछ निश्चित भाषायी समुदायों तक ही पहुँच पाते हैं। हालांकि ये समुदाय राष्ट्रीय सीमाओं के परे हैं पर इन से सम्बद्ध पत्रिकायें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर प्राप्त नहीं कर सकी हैं। अंग्रेजी एक विशेषाधिकार प्राप्त, वैश्विक अकादमिक भाषा के रूप में अपने प्रभुत्त के स्वरूप को बनाये हुए है।

पर साथ ही ऐसे अनेक प्रकाशन हैं जो ''अन्तर्राष्ट्रीय'' कहे जाते हैं क्योंकि सूचकांकों के क्रम में उनका स्थान उच्च है, उनके उच्च प्रभाव कारक (हाई इम्पैक्ट फैक्टर्स) हैं, उनका सम्पादन अंग्रेजी में होता है पर वास्तव में वे ''अन्तर्राष्ट्रीय'' नहीं हैं। टॉम डायर ने आइ. एस. ए. द्वारा सन् 2009 में आयोजित 'कांफ्रेंस ऑफ नेशनल एसोशियेसन्स'[1] में यह तथ्य प्रस्तुत किया कि अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित होने वाली पत्रिका का यह अर्थ नहीं है और न ही यह तार्किक भी है कि वह पत्रिका ''अन्तर्राष्ट्रीय'' होगी। परिभाषा के आधार पर उत्तर अमेरिका या पश्चिमी यूरोप में ''नेशनल एसोशियेसन ऑफ सोश्यालाजी'' की पत्रिकाओं का सम्बन्ध राष्ट्रीय अनुसंधान कार्यक्रमों को विकसित करना है और यह आवश्यक रूप से एक कमजोरी भी नहीं है। समस्या यह है कि गैर प्रभावी विश्वविद्यालयों एवं अभिकरणों द्वारा जो इन पत्रिकाओं को आर्थिक अनुदान देते हैं, इन पत्रिकाओं को अन्तर्राष्ट्रीय बताते हैं एवं सुनिश्चितता के साथ वहाँ से प्रकाशन की आवाज उठाते हैं। यह उन लोगों के लिए असमंजस का कारण बनता है जो ''मुख्य धारा'' की अकादमिकता से बाहर कार्यरत हैं, विशेषतः वे लोग जिनकी देशज भाषा अंग्रेजी नहीं है। परिणामस्वरूप विश्व में बहुसंख्यक समाजशास्त्रियों के सम्मुख यह माँग कि वे अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन करें अनेक विसंगतियाँ उत्पन्न कर देती है और उन्हें उहापोह में डाल देती है।

''छद्म अन्तर्राष्ट्रीयकरण'' की इस माँग के सामने, जो हल्की नहीं है, अनेक पक्ष उभरते हैं। अनेक स्थितियों में यह उन क्षेत्रों में परिप्रेक्ष्यों को आकार देती है और रोजगार की सम्भावनाओं को बल देती है। इसकी तीन सम्भावित प्रतिक्रियाएं हैं:

प्रथम, एक अतिरेक–स्थानीयतावाद (हाइपर लोकेलिज्म)। यह या तो राष्ट्रीय स्तर पर अथवा क्षेत्रीय स्तर पर उभरता है। यह स्थिति अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशन की माँग को अस्वीकृत करती है। यह अस्वीकृति कुछ अवसरों पर संकेतीकरण की व्यवस्था एवं प्रभाव मापकों के द्वारा एवं कुछ अवसरों पर रक्षात्मक एवं संस्कृति वादी प्रतिक्रियाओं की तरह हो जाती है। इस स्थिति में प्रकाशन सम्बद्ध क्षेत्र (घरेलू/देशज) की जनता के साथ जुड़ जाता है। अतिरेक स्थानीयतावाद पर बल देने का लाभ यह है कि कुछ विशेष विषयों पर अनुसंधान गहराई से हो जाते हैं जिसके परिणामस्वरूप विश्लेषण अत्यन्त समृद्ध व विस्तृत हो जाता है। परन्तु साथ ही अन्य परिप्रेक्ष्यों के साथ विमर्श में प्रवेश सम्भव नहीं होता। विस्तृत विवेचना में ऐसे अनुसंधानों की उपादेयता चूंकि सीमित होती है, अतः ऐसे शोध सम्बन्धी योगदान के महत्व सम्भावित सैद्धान्तिक योगदान भी सीमित/संकुचित हो जाते हैं। एक दूसरी प्रतिक्रिया के अन्तर्गत् अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशन की तत्काल आवश्यकता को स्वीकारा जाता है और उसे प्राथमिक लक्ष्य मान लिया जाता है। इसे प्राप्त करने के लिए गैर प्रभावी समाजशास्त्र के विभिन्न क्षेत्र प्रभावी समाजशास्त्र के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े प्रश्नों, सिद्धान्तों एवं पद्धतिशास्त्रों को अपने में समाहित कर लेते हैं एवं प्रभावी समाजशास्त्रों के लेखन के स्वरूपों का अनुकरण कर लेते हैं। यह विरोधाभास ही है कि गैर प्रभावी समाजशास्त्र अपने उद्देश्यों को सदैव प्राप्त नहीं कर पाते, शायद इस कारण कि वे अनुकरण की शैली से स्वयं को मुक्त नहीं कर पाते हैं। इस प्रकार का लेखन देखने में तो पूर्णतया अकादमिक लगता है पर यह उपादेयता एवं मौलिकता के पक्षों को स्थापित नहीं कर पाता। शायद स्थानीय विश्लेषण को मुख्यधारायी सैद्धान्तिक या स्टाइलिश स्वरूपों के अनुरूप बनाने की कोशिश एक सतही प्रयास बन जाती है।

एक तीसरा विकल्प, जिसे प्राप्त करना समस्यामूलक एवं कठिन है, विमर्श (डायलाग) है। लेखक, संस्थाएं एवं पत्रिकाऐं जो स्थानीय

GD अंक 3 / # 2 / फरवरी 2013

Distribution of Articles in Top Social Science Journals by Author's Regional Affiliation. Source: SCOPUS

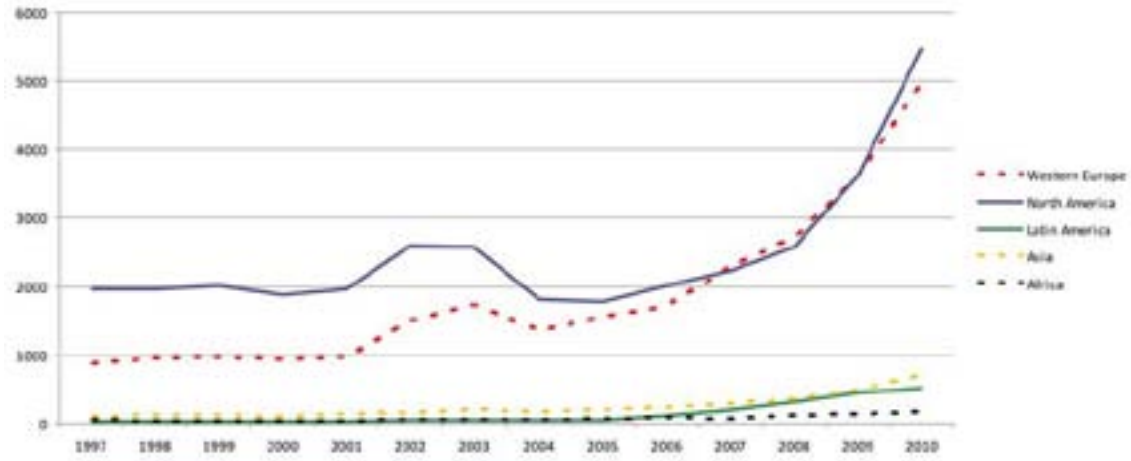

विशिष्टताओं के अस्तित्व को अकादमिक प्रश्नों, सैद्धान्तिक बहसों एवं लेखन शैली में मान्यता देते हैं एवं साथ ही राष्ट्रीय समाजशास्त्रों की वृद्धि एवं विकास हेतु अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशनों को माध्यम बनाते हैं। साथ ही समाजशास्त्र की एक परियोजना के रूप में उस रचना के प्रयास में सहभागिता का जरिया मानते हैं जो वैश्विक एवं सामूहिक दोनों है। अन्तर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय समिति (आइ एस ए) द्वारा प्रकाशनों एवं 'करण्ट सोशियोलोजी' के प्रकाशन इसी आशा के साथ किये जाते हैं।

विश्व समाज विज्ञान प्रतिवेदन (वर्ल्ड सोश्यल साइंस रिपोर्ट) (यूनेस्को, 2010 : 153) में रेखांकित किया गया है कि प्रकाशन का अन्तर्राष्ट्रीयकरण प्रभुत्वशाली क्षेत्रों मुख्यतः यूरोप एवं अमेरिका के पक्ष में है। वास्तव में 80 प्रतिशत से अधिक अकादमिक पत्रिकाओं का, समाज विज्ञान में प्रकाशन अंग्रेजी में होता है तथा सबसे अधिक प्रभावशाली प्रकाशनों में से दो तिहाई का प्रकाशन चार देशों : अमेरिका, इंग्लैण्ड, हालैण्ड एवं जर्मनी से होता है। दूसरी ओर ओशियानिया, लातिन अमेरिका एवं अफ्रीका में से प्रत्येक विश्वभर में प्रकाशित लेखों में से 3 प्रतिशत से भी कम प्रतिनिधित्व करते हैं। (यूनेस्को, 2010 : 143–4)

स्कोपस2 ¼SCOPUS½ पर दी गयी पत्रिकाओं की सारिणी में जो उच्च क्रम पर स्थापित पत्रिकाएं हैं को यदि हम देखें तो पाते हैं कि लेखकों की बहुमत वाली संख्या पश्चिमी यूरोप एवं उत्तर अमेरिका से सम्बद्ध है दूसरी ओर एशिया एक लातिन अमेरिकन लेखकों की लेखन क्षेत्र में सीमित उपस्थित है (एशियाई देशों के संदर्भ में हालांकि इस संख्या में वृद्धि हो रही है) जबकि अफ्रीकी विश्वविद्यालयों के लेखक पूर्णरूपेण अनुपस्थित हैं। (चार्ट देखें)

'करैण्ट सोशियोलोजी' भी इस प्रवृत्ति से अछूता नहीं है।[3] 72 प्रतिशत से अधिक प्रकाशनों के लेखक यूरोपियन अथवा उत्तर अमेरिकन विश्वविद्यालयों से सम्बद्ध हैं। अन्य मुख्यधारायी पत्रिकाओं की भी समान स्थिति है। 8.1 प्रतिशत एवं 5.3 प्रतिशत लेखक क्रमशः एशियाई एवं आस्ट्रेलियाई देशों से सम्बद्ध हैं। आधे से अधिक लेखक, जहाँ तक अकादमिक सम्बद्धता का सवाल है, जो इन पत्रिकाओं से सम्बद्ध है: कुल पाँच देशों, ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, जर्मनी एवं ऑस्ट्रेलिया का प्रतिनिधित्व करते हैं।

यह भी जानना रूचिकर है कि करैण्ट सोशियोलोजी में 6 प्रतिशत लातिन अमेरिकन, 3.2 प्रतिशत अफ्रीकन एवं 2 प्रतिशत मध्य पूर्व के लेखकों का प्रकाशन हुआ है। पर हम अब भी उस प्रवृत्ति को उलटने की प्रक्रिया से बहुत दूर हैं जिसकी भर्त्सना यूनेस्कों ने की है। पर इसके साथ ही मैं गर्व के साथ यह कह सकती हूँ, कि ''करैण्ट सोशियोलोजी' ने अनेक लेखकों एवं अनेक सम्प्रदायों के लेखकों को अवसर प्रदान किये हैं और अपने आपको सही अर्थों में अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका के रूप में स्थापित किया है। साथ ही कठोर प्रयासों के साथ करैण्ट सोशियोलोजी ने स्वयं को सामग्री की दृष्टि से बाहुल्यतावादी बनाया है तथा लेखकों की दृष्टि से भौगोलिक विविधता का प्रतिनिधित्व करने वाला बनाया है।

1952 में अपनी स्थापना के उपरान्त ''करैण्ट सोशियोलोजी'' अनवरत रूप से इस इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत है। यह किसी भी भाषा में लेखन के लिए प्रस्ताव करती है। इस प्रवृत्ति को इण्टरनेशनल सोशियोलोजी ने भी क्रियान्वित किया है। मुख्य धारा के परे नवीन विषयों, सैद्धान्तिक एवं पद्धतिशास्त्रीय प्रस्तावों तथा लेखन की वैकल्पिक विधाओं को भी ये पत्रिकायें स्वीकारती हैं। यह पत्रिका विमर्श (डायलाग) के प्रति प्रतिबद्धता के आधार पर पारिभाषित की जा सकती है क्योंकि यह अनुमति देती है कि स्थानीय विश्लेषणों को अन्तर्राष्ट्रीय समुदायों के सम्मुख प्रस्तुत किया जावे। यह हो सकता है कि इस प्रक्रिया में कुछ स्थानीय विशिष्टतायें खो जायें परन्तु आवश्यक नहीं कि इससे विश्लेषण की शिष्टता भी समाप्त हो जाय और इसके साथ यह भी सम्भव है कि विचार विमर्श के विभिन्न रूप जो अकादमिक समुदाय में उभरते हैं और विश्व भर में यह किसी न किसी रूप में उपस्थित है, ''करैण्ट सोशियोलोजी'' के प्रकाशन का भाग बन कर लेखकों एवं अकादमिक समुदाय की बौद्धिकता को समृद्ध करते हैं। ■

1.डायर्स की इन टिप्पणियों को एक विडियो ''चेलेन्जेज फार ए ग्लोबल सोशियोलोजी'' में http://www.youtube.com/watch?v=QA5GAEPQCZI पर देखें।

[2]मैं ''करैण्ट सोशियोलोजी'' के सम्पादकीय सहायक मैटियास लोपाज के प्रति आभारी हूं जिन्होंने इस चार्ट के लिए प्रदत्तों को एकत्रित किया और चार्ट की रचना की।

[3]अतिरिक्त सूचनाएं एवं अधिक विस्तार जो ''करैण्ट सोशियोलोजी'' के इस सर्वेक्षण से सम्बद्ध हैं को एलोइजा मार्टिन (2012) के प्रकाशन ''मेकिंग सोशियोलोजी करैण्ट थ्रू इन्टरनेशनल पब्लिकेशन : ए कलैक्टिव टास्क'' करैण्ट सोशियोलोजी 60 (6) : 832–7 से प्राप्त किया जा सकता है।

> क्या अमरीकी समाजशास्त्र का ह्रास हो रहा है?

ब्रोनवेन लिचटेन्सटाईन, अल्बामा विश्वविद्यालय, टस्कालूजा, यू.एस.ए. और अध्यक्ष, RC 49 (मानसिक स्वास्थ्य का समाजशास्त्र)

Sociology Degrees Awarded by Degree Level in the US, 1966-2010.
Source: ASA, Research on Sociology 2012.

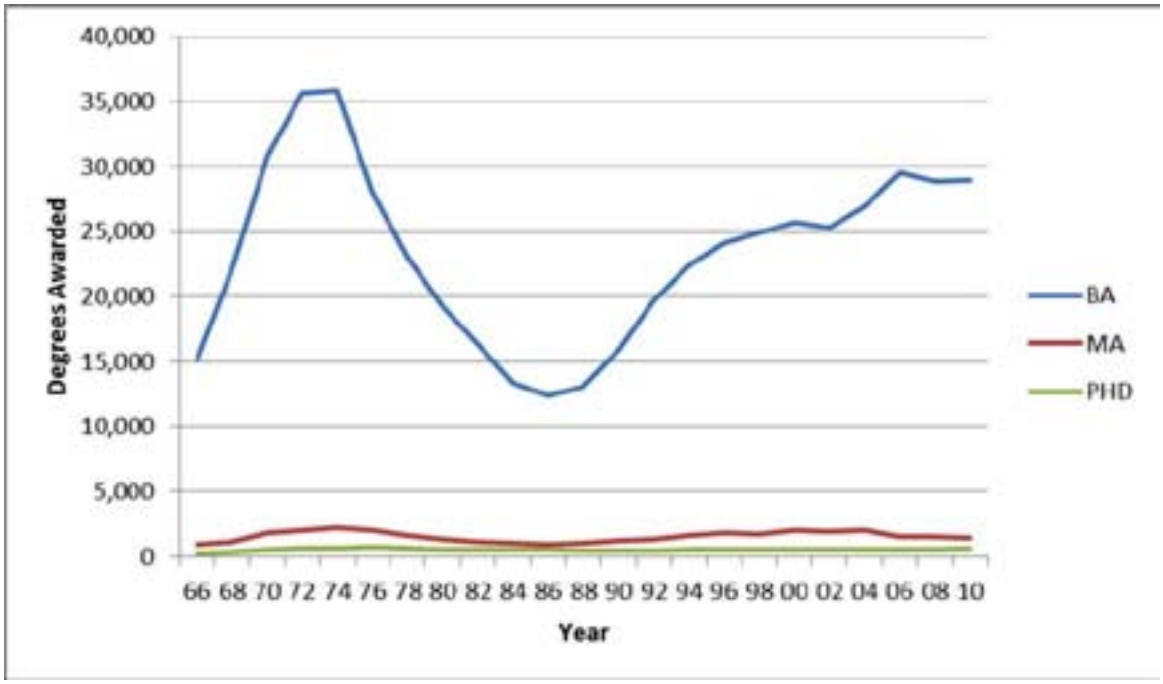

अमेरिका में समाजशास्त्र की क्या स्थिति है? 1994 में जब मैंने न्यूजीलैंण्ड से अल्बामा, अमेरिका प्रवास किया तो मैंने सुना कि समाजशास्त्र का ह्रास हो रहा हैं। अल्बामा विश्वविद्यालय के पीएच.डी. कार्यक्रम को हाल ही में रद्द किया गया था क्योंकि संकाय के सदस्य आपस में ही लड़ रहे थे और प्रशासन ने इसे बंद कर इस मुद्दे को सुलझाया।

समाजशास्त्र में लघुअध्ययन (माइनर) को क्रिमिनल जस्टिस विभाग, जहाँ मैं वर्तमान में कार्यरत हूँ, के साथ जोड़ दिया। तब से समाजशास्त्र विभाग के पुनर्गठन की बातचीत किसी मुकाम तक नहीं पहुँची है और समाजशास्त्र में माइनर अपने अस्तित्व को बनाये रखने एवं वृद्धि करने हेतु अपर्याप्त पाठ्यक्रमों के कारण कष्ट में है। अमरीका के जिस हिस्से में मैं रहता हूँ, नजरिया उज्जवल नहीं है।

जब तक मैंने बेंजामिन जिन्सबर्ग की 2011 की पुस्तक द फाल ऑफ फैकल्टी : द राइज ऑफ द ऑल –एडमिनिस्ट्रेटिव यूनिवर्सिटी एण्ड व्हाई इट मैटर्स में लिखा यह वाक्य नहीं पढ़ा था तब तक व्यापक समाजशास्त्रीय क्षेत्र में क्या हो रहा है, इससे मैं अनजान था : ''हाल ही के वर्षों में इस क्षेत्र से छात्रों की रूचि पूर्णतया गायब हो जाने के कारण देश के चारों तरफ शैक्षणिक स्तर पर जाने माने समाजशास्त्र कार्यक्रमों की भी बिल्कुल यही स्थिति हुई है (बंद होना)'' (104)।

जिन्सबर्ग के समाजशास्त्र की मृत्यु के व्यापक दावे ने मुझे अमरीकी समाजशास्त्रीय संघ की वेबसाइट पर अमेरीकी महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के विषयगत झुकावों पर सूचना प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। आंकड़ो के अनुसार 1990 और 2004 के मध्य बैकालोरिएट और मास्टर्स की डिग्रीधारियों की संख्या करीबन दुगुनी हो गई थी।

>>

2001 से 2007 के ए.एस.ए. अपडेट ने अधिकांश विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में निरन्तर वृद्धि दर्शायी (स्पालटर–रोथ, 2008)। स्वतन्त्र समाजशास्त्र विभागों की संख्या भी बढ़ गई, शायद छात्र संख्या में लगातार इजाफे के प्रत्युत्तर के रूप में।

ए.एस.ए. ने इस बहाली की तीन आपत्ति सूचनाऐं बतलाईं। प्रथम, डाक्टोरल डिग्रियों ने इन उर्ध्वगामी रूझानों का साथ नहीं दिया और यहाँ तक कि 2000 के शुरूआती वर्षों में कमी आई और बाद में साधारण बहाली हुई। द्वितीय, पारम्परिक समाजशास्त्र की कीमत पर क्रिमिनल जस्टिस में केन्द्रियकरण बढ़ गया। तृतीय, इन विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए कम टेन्योर–ट्रेक फैकल्टी सदस्यों को नौकरी दी गई है। इनकी जगह अंशकालिक और पूर्णकालिक विश्वविद्यालय शिक्षकों को काम पर रखा गया। ऐसा विश्वविद्यालय अपने खर्चों को सीमित व लाभ को अधिकतम करने, एक ऐसा राष्ट्रीय रूझान जो अन्य विषयों को भी प्रभावित करता है, के कारण कट रहे हैं (विल्सन 2010)।

ए.एस.ए. प्रतिवेदन में प्रस्तुत साधारण रूप से आशावादी चित्र को अमरीकी समाजशास्त्र के व्यापक रूझानों के साथ सन्दर्भित कर सकते हैं। आंकड़ों के अनुसार 1970 का दशक समाजशास्त्र के लिए विषय के रूप में सर्वश्रेष्ठ था क्योंकि राष्ट्रीय स्तर पर समाजशास्त्र विभाग और पाठ्यक्रम स्थापित हुए और उनका विस्तार हुआ। हालांकि, 1980 के दशक तक ऐसा लगने लगा कि समाजशास्त्र अपनी उंचाई से गिर रहा है क्योंकि समाजशास्त्र में नामांकन और डिग्री इस गति से गिरे की कई लेखकों ने समाजशास्त्र के अन्त की भविष्यवाणी भी कर दी (समर्स 2003)। डनलप और केटन (1994:11) ने 1980 के दशक की इस मंदी के लिए पुनः उठने वाले मुक्त बाजार, रूढ़िवाद और सम्बन्धित विषय–वस्तु के रूप में रीगन प्रशासन द्वारा सामाजिक विज्ञानों पर ''प्रचंड हमले'' जिसके कारण विद्यार्थियों की रूचि समाजशास्त्र में कम हुई, को उत्तरदायी ठहराया। ह्रास इतना अधिक था कि समाजशास्त्र को अभी पूर्ण रूप से बहाल होने या फिर अमरीका की जनसंख्या वृद्धि के साथ कदम मिलाना मुश्किल है।

जिन्सबर्ग समाजशास्त्र में रूचि के अभाव के बारे में सही हो सकते हैं परन्तु मुझे संदेह है कि यहाँ कुछ और कार्य कर रहा है–विद्यार्थियों को उन विषयों में नामांकन के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा हैं जो उन्हें अस्थिर बहाली के दौर में नौकरी दिलवा सकें। एक बार पुनः शैक्षणिक डिग्रियों की अपेक्षा प्रोफेशनल डिग्रियों की तरफ रूझान बढ़ा हैं, शायद वैचारिक कारणों के बजाय आर्थिक कारणों से। समाजशास्त्र में पेशेवर अवसरों के बारे में पहला प्रश्न जो कोई भी विद्यार्थी पूछता है, वह है–''पर मैं इसके साथ क्या कर सकता हूँ?'' ज्यादातर मैं कहता हूँ, ''बहुत कुछ'' और समाजशास्त्र की डिग्री क्यो उपयोगी है के बारे में समझाता हूँ। परन्तु समाजशास्त्र पाठ्यक्रम, जिनकी व्यवहारिकता संदिग्ध है, पढ़ाने के मेरे स्वयं के अनुभव को देखते हुए मुझे सोचना पड़ता है। ■

References

American Sociological Association (2012) "Research on Sociology: Sociology Degrees Awarded by Degree Level 1966-2010." Retrieved November 29, 2012 (http://www.asanet.org/research/stats/degrees/degrees_level.cfm).

Dunlap, R. E. and Catton, W. R. Jr. (1994) "Struggling with Human Exemptionalism: The Rise, Decline and Revitalization of Environmental Sociology." *The American Sociologist* 25(1): 5-30.

Ginsberg, B. (2011) *The Fall of the Faculty: The Rise of the All-Administrative University and Why It Matters*. New York, Oxford University Press.

Spalter-Roth, R. (2008) "What Is Happening In Your Department? A Comparison of Findings from the 2001 and the 2007 Department Surveys." Washington, DC: American Sociological Association. Retrieved December 10, 2012 (http://www.asanet.org/images/research/docs/pdf/Whats%20Happening%20in%20Your%20Dept.pdf).

Summers, J. H. (2003) "The End of Sociology?" *Boston Review* 28(6). Retrieved December 10, 2012 (http://bostonreview.net/BR28.6/contents.html).

Wilson, R. (2010) "Tenure, RIP: What the Vanishing Status Means for the Future of Education." *The Chronicle of Higher Education*. Retrieved December 10, 2012 (http://chronicle.com/article/Tenure-RIP/66114/).

> विखण्डन (बाल्कनाइजेशन) के परे बाल्कन वासी (बाल्कन्स)

स्वेतला कॉलेवा, इन्स्टीट्यूट फॉर द स्टडी ऑफ सोसायटीज एण्ड नॉलेज (समाजों एवं ज्ञान के अध्ययन का संस्थान), सोफिया, बुल्गारिया एवं अध्यक्ष, बुल्गारियन समाजशास्त्रीय परिषद

सेंट क्लिमेन्ट ओहरीडिस्की के सोफिया विश्वविद्यालय के औला माग्ना में 9 नवम्बर 2012 को बाल्कन समाजशास्त्रीय फोरम के द्वितिय वार्षिक सम्मेलन का उद्घाटन। ***फोटो हसन बरबर द्वारा।***

एक शताब्दी से अधिक की अवधि से बाल्कन्स (बाल्कन वासी) का मुख्य अभिप्राय उस क्षेत्रीय विखण्डन के समकक्ष है जो 'बाल्कनाइजेशन' की अवधारणा को जन्म देता है। बाल्कन समाजशास्त्रीय फोरम (सोफिया, नवम्बर 9–10, 2012) की द्वितीय वार्षिक कान्फ्रेन्स ने यह दर्शाया है कि इस क्षेत्र में समाजशास्त्रियों के लिए यह स्पष्ट अतीत एक इतिहास है। बाल्कन समाजशास्त्रीय फोरम का गठन तिराना में नवम्बर 2011 में हुआ था। इस गठन में अल्बानिया के समाजशास्त्रियों विशेषतः लैके सोकोली की महत्वपूर्ण भूमिका रही इसके साथ ही उन्हें मैक्डोनिया, बुल्गारिया एवं स्लोवेनिया के समाजशास्त्रियों का सहयोग एवं सहभागिता का आधार भी मिला। यह पहला अवसर था जब बाल्कन समाजशास्त्रियों को यह संस्थागत जरूरत महसूस हुई कि परिषद का गठन किया जावे। ऐसी परिषद के गठन का विचार सबसे पहले 1990 के दशक में बुल्गारियन समाजशास्त्रीय परिषद के तत्कालीन अध्यक्ष पीटर–ऐमिल मितेव के सुझाव के रूप में उभरा। परन्तु यह विचार/सुझाव पूर्व युगोस्लाविया में युद्ध के कारण एक लम्बे समय तक मूर्त रूप नहीं ले सका। इतिहास के सबक से समझ ग्रहण कर एवं साथ साथ काम करने की अपरिहार्य आवश्यकता को लेकर चेतना विकसित कर यह विचार पनपा कि इनसे कमियों को दूर

किया जा सकता है तथा पृथक बढ़त को विस्तार दिया जा सकता है। परिणामतः बाल्कन समाजशास्त्रियों ने अपना संगठन निर्मित किया जो उन संयुक्त क्रियाओं एवं पारस्परिक ज्ञान के विस्तार के प्रति प्रतिबद्ध था जिन्हें क्षेत्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय गतिविधियों से जोड़ा जाय। ये समाजशास्त्री सोफिया में एकत्रित हुए जहाँ पारस्परिक विचार विमर्श स्थापित हुआ साथ ही पारस्परिक समझ विकसित हुई ताकि अपने निकट पड़ौसियों को समझा जा सके और अपरिचितों से परिचित हुआ जा सके।

बर्लिन की दीवार के ढहने के बाद विभिन्न देशों में समाज विज्ञानों से सम्बद्ध समाजशास्त्रियों एवं अनुसंधान कर्ताओं के मध्य बहुस्तरीय बैठकें हुई जिनमें अनेक मुद्दों पर चर्चा हुई। नवम्बर 2012 में जिस विशिष्ट विषय पर बैठक हुई वह बाल्कन्स को समाज शास्त्र के सम्मुख सामाजिक एवं संज्ञानात्मक चुनौती के साथ जुड़ा हुआ था।

हम बाल्कन पड़ौसियों को आर्थिक एवं राजनीतिक इकाई/कर्ता के रूप में, उन्हें स्तरीकृत समाजों एवं एकीकृत समुदायों तथा शैक्षणिक एवं सास्कृतिक संरचनाओं के रूप में कैसी विशेषताओं के साथ प्रस्तुत करें? साथ साथ जीवन यापन के तरीकों एवं अन्य को स्वीकारने के पक्षों के रूप में बाल्कन पडौसियों को कैसे प्रस्तुत किया जाय? प्रत्येक देश में अतीत किस प्रकार वर्तमान को प्रभावित करता है तथा यह अतीत देशों के मध्य के सम्बन्धों को किस प्रकार प्रभावित करता है? प्रत्येक देश के समकालीन अनुभवों का कौन सा भाग पड़ौसियों के लिए उपयोगी हो सकता है ताकि एकीकृत यूरोप एवं विश्व में हमारी उपस्थिति रचनात्मक पारस्परिक दृष्टि से लाभकारी एवं उत्साहवर्धक हो सके? साथी/साझेदार एवं प्रतियोगी दोनों ही रूप में अन्तर्राष्ट्रीय शोध क्षेत्र में गैर–प्रभुत्वकारी भूमिकाओं का निर्वाह करते हुए हम राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय परम्पराओं को कैसे बनायें रखें, स्थानीय समस्याओं के महत्व से स्वयं को कैसे सजग बनाये रखें व ज्ञान की वैधता के लिए किस प्रकार वैधानिक पक्ष का अवलोकन करें? यह तभी सम्भव है जब हम उस ज्ञान की तत्काल व्यवहार की आवश्यकता को महसूस करें। संक्षेप में बाल्कन में रहते हुए हम समाजशास्त्र के प्रति कैसे सक्रिय हों और कैसे वैध एवं सार्वभौमिक ज्ञान का सृजन करें और साथ ही बाल्कन के प्रति पूर्वाग्रही दृष्टि एवं स्व–बाल्कनाइजेशन के पक्षों की उपेक्षा करें।

इन प्रश्नों ने बहस को दिशा प्रदान की। यह बहस छहः विषय केन्द्रित सत्रों एवं पाँच विषय केन्द्रित पैनल्स के अन्तर्गत आयोजित हुई। बाल्कन देशों (अल्बानिया, बुल्गारिया, ग्रीक, कोसाबो, मैकेडोनिया, रूमानिया) एवं पश्चिमी यूरोप एवं उत्तरी अमेरिका (कनाडा, फिनलैण्ड, फ्रान्स, बेल्जियम) के सौ से अधिक समाजशास्त्रियों ने इन बहसों में सहभागिता की। अतः विचार विमर्श केवल बाल्कन देशों में रह रहे समाज अनुसंधानकर्ताओं तक सीमित नहीं रहा। इन अनुसंधानकर्ताओं को इस क्षेत्र में अन्तः विरोधी प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करने वाले विकास को समझने का अवसर मिला। बाल्कन देशों से दूर स्थित देशों के समाज शास्त्रियों ने भी इस बहस में अनेक पक्षों को जाना।

इसके साथ ही सोफिया में हुई इस बाल्कन कांफ्रेस ने समाजशास्त्र में विद्यमान एक सुपरिचित प्रवृत्ति को भी सुनिश्चित किया। संस्थायें व्यक्तियों की एवं समूहों की आवश्यकताओं तथा उद्देश्यों की पूर्ति हेतु आवश्यक स्थितियों को उत्पन्न कर सकती हैं यदि वे स्पष्ट दृष्टिकोण वाले उन व्यक्तियों से संचालित हैं जो संस्था के उद्देश्य एवं भावी कार्यक्रमों के साथ संस्था के पेशे के प्रति प्रतिबद्ध हैं। दूसरी तरफ संस्थाओं के लिए व्यक्ति उत्प्रेरक शक्ति का कार्य कर सकते हैं यदि संस्था व्यक्तियों एवं समूहों के उन प्रयासों को मान्यता दे जो संस्था के पेशे के प्रति प्रतिबद्ध हैं। दूसरी तरफ संस्थाओं के लिए व्यक्ति उत्प्रेरक शक्ति का कार्य कर सकते हैं यदि संस्था व्यक्तियों एवं समूहों के उन प्रयासों को मान्यता दे जो संस्था के अर्थपूर्ण विकास में, जो संस्थागत कृत्यों को निर्मित करते हैं, योगदान करते हैं। सोफिया कांफ्रेस की सफलता के मुख्य अवयव सहयोग की इच्छाशक्ति एवं विचार विमर्श की सजगता रहे। साथ ही इस सफलता को सुनिश्चित करने में आई एस ए का नैतिक व वित्तीय सहयोग तथा बाल्कन सोशियोलोजिकल फोरम (बी एस एफ), बुल्गारियन सोशियोलोजिकल एसोसियेशन, बुल्गारियन अकादमी ऑफ सांइसेज से सम्बद्ध द इन्स्टीट्यूट ऑफ सोसायटीज एण्ड नॉलेज, सोफिया विश्वविद्यालय तथा बुल्गारिया में स्थित फ्रेंच इन्स्टीट्यूट का संयुक्त सहयोग रहा।

सन् 2011 में टिराना में बाल्कन समाजशास्त्रीय सहयोग को संस्थागत स्वरूप प्रदान किया था ताकि एक वर्ष उपरान्त सोफिया में वे अर्थपूर्ण विचार विमर्श मूर्त रूप ले सकें जो बाल्कन्स की सीमाओं के परे जावें। ये विचार विमर्श सन् 2013 के अन्त में मैकेडोनिया में होने वाली तीसरी वार्षिक कांफ्रेस में और व्यवस्थित व समृद्ध रूप ग्रहण करेंगे। आगामी प्रत्येक वर्ष में बाल्कन्स में सम्मिलित प्रत्येक देश की राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय परिषद एक एक कर अपने यहाँ सम्मेलनों का आयोजन करेगी। यह आशा एवं वायदा किया जा सकता है कि समाजशास्त्रीय स्वरूप को प्रस्तुत करता हुआ यह विचार विमर्श ''ब्रिज एण्ड डोर'' (जुड़ाव एवं खुलापन) (सिमैल द्वारा प्रयुक्त शब्दावली) के उस अर्थ की अभिव्यक्ति है जिसमें विचार विमर्श बाह्य परिवेश से सम्बद्ध परिप्रेक्ष्यों के ज्ञान को अपने पृथक पृथक परिवेषों के परिप्रेक्ष्यों के ज्ञान से सम्बद्ध व तुलनात्मक स्वरूप के साथ जाना जाता है ताकि अन्य परिवेशों के ज्ञान के साथ सेतु निर्मित हो सकें। ■

> अन्तरअनुशासनात्मकता : फिलीपीन सोशियोलोजिकल सोसाइटी का सम्मेलन

क्लेरेन्स एम. बाटान, यूनिवर्सिटी ऑफ सान्टो टोमास, मनीला, फिलीपीन्स तथा शोध सम्पादक RC 34 (सोशियोलोजी ऑफ यूथ)

अटेनियो ड मनीला विश्वविद्यालय में 19 अक्टूबर 2012 को फिलीपीन समाजशास्त्रीय परिषद की कांग्रेस के प्रथम पूर्ण सत्र के पश्चात फोटो का एक अवसर। बाऐं से: क्लैरेन्स बाटान (कोषाध्यक्ष पीएसएस), एमा पोरियो (आईएसए कार्यकारिणी की सदस्य), माइकल बुरावे (अध्यक्ष आईएसए), फिलोमिन कैडांलिजा (उपाध्यक्ष पीएसएस), लैस्ली लोपेज (सचिव पीएसएस), फिलोमैनो एग्यूलर (अध्यक्ष पीएसएस), जैलिया कास्टीलो (राष्ट्रीय वैज्ञानिक) तथा स्टैला गो (पीएसएस कार्यकारिणी की सदस्य)

क्यूजोन शहर के एटेनियो ड मनीला विश्वविद्यालय (एडीएमयू) में गत 19–20 अक्टूबर के दौरान फिलीपाइन तथा पडौसी देशों के समाजशास्त्रीं, पेशेवर तथा विद्यार्थी फिलीपीन सोशियोलोजिकल सोसाईटी (पीएसएस) के 2012 के सम्मेलन के लिए एकत्रित हुए। विभिन्न विश्वविद्यालयों से लगभग 100 भागीदारों एवं कुछ फिलीपीन्स तथा विदेशी निजी और गैर–सरकारी संस्थानों के प्रतिनिधियों ने अर्न्तअनुशासनात्मकताएवं समाजशास्त्र : एक पूर्वनिर्धारित निष्कर्ष विषय पर अपने विचारों का आदान–प्रदान किया।

>>

एक पेशेवर संस्थान के रुप में 1952 में स्थापित पीएसएस स्थानीय तथा विदेशी समाज वैज्ञानिकों की सक्रिय सहभागिता के कारण छः ऐतिहासिक दशकों से अपना अस्तित्व बनाए हुए है। यह सम्मेलन समाजशास्त्र विषय की प्रतिष्ठा को जांचने का एक अवसर बना। पीएसएस के अध्यक्ष डा0 फिलोमिनो वी0 एग्युलार, ने अपनें उदधाटन भाषण में मुख्य परिचर्चा को संक्षिप्त करते हुए कहा ''कुछ लोगों का तर्क है कि समाजशास्त्र को अपनें मुख्य विषय पर ही डटे रह कर अकादमिक विषय के रुप में अपनी पेशेवर सीमाओं को बनाए रखना चाहिये, वहीं अन्य लोग तर्क देते हैं कि हमारे रोजमर्रा के जीवन की जटिलताओं को स्थानीय और वैश्विक शक्तियों की गहन व्याप्तता के कारण पूरी तरह से नहीं समझा जा सकता जब तक कि हम अन्य विषयों के दृष्टिकोण तथा विश्लेषणात्म उपकरणों का लाभ नहीं लेते हैं। उनके साराशं ने दो दिन की गहन परिचर्चा, बहस, तथा भाषणों की भूमिका तैयार की।

अर्न्तराष्ट्रीय समाजशास्त्र परिषद (आईएसए) के अध्यक्ष माईकल बुरावे के मुख्य भाषण का शीर्षक था अर्न्तअनुशासनात्मकता : वायदे तथा खतरे । अपनी ''मंच के परे'' तकनीक से सम्मेलन के प्रति–निधियों को आश्चर्यचकित करते हुए डा0 बुरावे ने समाजशास्त्र के लिए बहुविषयकता पर सोचने के लिए प्रारम्भिक विचारों को प्रस्तुत किया। उनके विचारों ने चर्चा के उन बिन्दुओं को उत्पन्न किया जो कि आगामी तीन विशेष तथा चार समानान्तर सत्रों के 35 पर्चों की प्रस्तुतियों मे शामिल रहे।

डा0 ऐरिक एक्पेडोनु, डा0 जारीना सलोमा–एक्पेडोनु तथा डा0 फिलोमिनो वी0 एग्युलार, द्वारा सम्मेलन में आयोजित पुस्तक लेखकों के विशेष सत्र में; ऐतिहासिक समाजशास्त्रियों तथा सामाजिक इतिहासकारों के वर्णन पर एक सत्र में; विद्यार्थियो के वार्तालाप; जानेमाने तथा सम्मानित समाजशास्त्री फादर जोन जे0 कैरोल, एस0जे0, द्वारा एक मंच से जिन्होने अपने जीवन को एक पुजारी/समाजशास्त्री के विरोधाभासी रुप में वर्णित किया; तथा डा0 फिलोमिन ग्युटिअरेज–केन्डालिजा तथा डा0 मारिया एन्ड्रिया एम0 सोको के संयुक्त सम्पादकीय नेतृत्व में फिलीपाइन सोशियोलोजिकल रिव्यू के 60वें अंक के प्रस्तुतिकरण के अवसर पर भी इसी प्रकार के विचारों पर प्रकाश डाला गया। समाजशास्त्र तथा सामाजिक नृविज्ञान विभाग की अध्यक्ष डा0 ऐमा ई0 पोरियो, तथा डा0 लैस्ली ऐ0 लोपेज, पीएसएस की बोर्ड की सचिव के नेतृत्व में पुस्तक प्रदर्शन, आलीशान भोजन एवं रचनात्मक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

इस वर्ष की पीएसएस कान्फ्रेन्स ने न केवल फिलीपीनी समाजशास्त्रियों को नये तथा पुराने साथियों से मिलने का अवसर दिया बल्कि एक अधिक अर्थपूर्ण, अधिक प्रासंगिक, और सामाजिक तथा प्राकृतिक दोनों प्रकार के दूसरे विज्ञानों से अधिक तथ्यात्मक सम्बन्ध बनाने का अवसर प्रदान किया। वैश्विक समस्याओं के साथ जो कि नये तरीके के परस्पर विरोधी, मुकाबलों तथा रुपान्तरणों, दुनियां भर में फैले हुए साथी समाजशास्त्रियों के साथ फिलीपीन की सामाजिक सच्चाईयों मे पैठै हुए मुद्धों की भागीदारी वैश्विक दक्षिण से समाजशास्त्र का कार्यक्रम हो सकता है। यह युवा फिलिपीनो समाजशास्त्रियों की नई नस्ल के द्वारा प्रभावशाली तरीके से अग्रेषित किया गया, जिन्होने एक सक्रिय तथा भगीदार वैश्विक नागरिकता से प्रेरित होकर एक बहु–और अर्न्तअनुशासनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। ■

> समाजशास्त्र एवं सामाजिक रूपान्तरण: एपीएसए की 11वीं कान्फ्रेंस

लैस्ली लोपेज, अटेनियो ड मनीला विश्वविद्यालय, सचिव, फिलीपीन समाजशास्त्रीय परिषद

एमा पोरियो नें अटेनियो ड मनीला विश्वविद्यालय में एक सप्ताह के अन्दर दो बड़े सम्मेलनों का आयोजन मुख्य संयोजक के रुप में किया। यहां पर वह एशिया पैसिफिक समाजशास्त्रीय परिषद के दौरान एक लंच ब्रेक की अध्यक्षता कर रही हैं।

पिछले वर्ष 22–24 अक्टूबर 2012 को फिलीपीन्स में अटेनियो ड मनीला विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र व नृविज्ञान विभाग, तथा इन्सटीट्यूट ऑफ फिलीपाईन कल्चर, दोनों ने मिल कर एशिया पैसिफिक सोशियोलो जिकल एसोसिएशन (एपीएसए) की 11वीं कान्फ्रेंस का सफलता पूर्वक आयोजन तथा मेजबानी की। इस वर्ष के विषय ''एशिया पैसिफिक क्षेत्र में समाजशास्त्र तथा सामाजिक परिवर्तन'' ने एशिया, अफ्रीका, अमेरिका, यूरोप तथा पैसेफिक क्षेत्र के 23 देशों के 260 भागीदारों को आकर्षित किया।

एशिया पैसेफिक क्षेत्र के जाने माने जिन समाजशास्त्रियों ने लोक–समाजशास्त्र, दक्षिणी सिद्धान्त, लिंग, नेतृत्व तथा ज्ञान संचय पर असाधारण भाषण दियें उनमें प्रमुख हैं, माईकल बुरावे (अध्यक्ष, अर्न्तराष्ट्रीय समाजशास्त्र परिषद), रेविन कौनेल (सिडनी विश्वविद्यालय), डान्ग ग्युएन आन् (वियतनाम एकेडमी आफ सोशल साईन्सेज), विनीता सिन्हा (नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर), माईकल सियाओ (एकेडमिया सिनीका), सुरीचाई वुन्गाओ (चोलालोंगकार्न विश्वविद्यालय), एमा पोरिया (अटेनियो ड मनीला, विश्वविद्यालय), फिलोमिनो एग्युलार, जूनियर (अध्यक्ष, फिलीपाइन समाजशास्त्रीय परिषद तथा अटेनियो ड मनीला विश्वविद्यालय), तथा मारिया सिंथिया रोज बोटिस्टा (कमीशन आन हायर एज्यूकेशन, फिलीपीन्स्)।

तीन दिवसीय सम्मेलन के दौरान 60 सत्रों में 180 पर्चों के माध्यम से प्रस्तुतकर्त्ताओं ने क्षेत्र के सम्मुख विस्तृत मामलों की यथा लिंग, धर्म, वैश्वीकरण, शिक्षा, जलवायु परिवर्तन तथा प्रोद्योगिकी की छानबीन की। सम्मेलन का समापन ''एशिया पैसेफिक क्षेत्र में समाज विज्ञान समुदाय को आकर्षित करना'' नामक पूर्ण सत्र से हुआ। इस सत्र का सभापतित्व माईकल बुरावे तथा एमा पोरियो ने किया तथा जो अन्य राष्ट्रीय परिषदों के प्रतिनिधि थे वे हैं: यजवा सुजीरो (जापान समाजशास्त्रीय परिषद), डान्ग ग्युएन आन् (वियतनाम ऐकेडमी ऑफ सोशल साईन्सेज, इन्स्टीट्यूट ऑफ सोशियोलोजी), रूचिरा गांगुली–स्कार्स (एपीएसए), मिशैल शैह (ताईवान सोशियोलोजिकल सोसाइटी तथा एकेडमिया सिनीका), मोहम्मद तावाकोल (ईरान सोशल साइन्स एसोसियेशन), विनीता सिन्हा (नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर), तथा सुरीचाई वुन्गाओ (थाई सोशियोलोजिकल कांग्रेस)। ■

> वैश्विक आन्दोलन, राष्ट्रीय शिकायतें

बैंजेमिन टेजेरिना, बास्क कन्ट्री विश्वविद्यालय, स्पेन, अध्यक्ष, RC 48, (सामाजिक आन्दोलन, सामूहिक कार्य तथा सामाजिक परिवर्तन) तथा आईएसए कार्यकारिणी के सदस्य।

बैरियो ड लानूज (ब्यूनस आयर्स, अर्जेन्टीना) में एक परित्यक्त कारखाने का रुपान्तरण एक शिक्षण केन्द्र के रुप में हो गया है।

सामूहिक कार्य तथा सामाजिक आन्दोलनों के अध्ययन ने हाल ही के दशकों में उनके आगमन, संगठन, प्रभाव तथा पराभव पर हमारे ज्ञान में अभिवृद्धि करते हुए कई विचारणीय संवेग तथा प्रोत्साहन प्राप्त किये हैं। सामाजिक आन्दोलनों तथा सामूहिक कार्यों के गिरगिट जैसे चरित्र के मद्देनजर समाजशास्त्र ने उनके अन्वेषण के नये उपकरण इजाद कर लिए हैं।

दिसम्बर, 2010 के प्रारम्भ में हमने आन्दोलनों की एक सतत श्रेणी ने, शासन चाहे वह छद्म लोकतान्त्रिक चरित्र के हों अथवा स्पष्ट तौर पर अधिनायकवादी, को निशाने पर रखते हुए जनस्थानों को शान्तीपूर्वक अधिगृहित कर रखा था। ऐसे देशों यथा ट्यूनीशिया, मिश्र, मोरक्कों, यमन, बेहरीन, इजराइल, स्पेन तथा अमेरिका ने ''कब्जा सामाजिक आन्दोलनों'' (ओक्यूपाई सोशल मूवमैन्टस्) की गहनतम लहरों का अनुभव किया। कुछ मामलों में, शान्तीपूर्ण संगठन की ताकत ही संतोषजनक सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए पर्याप्त थी जबकि कुछ अन्य मामलों में आवृत्ति तथा बढ़ती हुई हिंसा प्रचलित रही। हर कहीं उनके नतीजे अनिश्चित थे तथा कई विशेषज्ञों द्वारा परखे गये थे। ये आन्दोलन किसी विषाणु की भांति सोशल नेटवर्किंग के रास्ते से देश दर देश फैलते चले गयें, जिसने कि दुनिया भर में इन्टरनेट पर तस्वीरों के प्रसार तथा उनके प्रभावों का विस्तार किया। मैन्युएल कैसल्स ने ठीक ही कहा था ''नैटवर्क्ड सोशल मूवमैन्टस्।''

सामाजिक संगठन की इस लहर का परिक्षण करने के लिए आर सी 48 (सामाजिक आन्दोलनों, सामुहिक कार्य तथा सामाजिक परिवर्तन पर शोध समिति) ने आर सी 47 (सामाजिक वर्ग तथा सामाजिक आन्दोलन) के सहयोग से बिल्बाओ में फरवरी 2012 में एक अर्न्तराष्ट्रीय सम्मेलन ''सामाजिक से राजनैतिक तकः संगठन तथा प्रजातान्त्रिकरण के नए चेहरे'' विषय पर आयोजित किया। उत्तरी अफ्रीका, अरब राष्ट्रों तथा दक्षिणी

>>

यूरोप मे संगठन पर आधारित निबन्धों को आर सी 48 तथा बास्क कन्ट्री विश्वविद्यालय ने प्रकाशित किये हैं जिन्हें http://www.identidadcolectiva.es/ISA_RC48/ से डाउन लोड़ किया जा सकता हैं।

पिछले वर्ष के दौरान सभी दृष्टिकोणों से आर सी 48 की सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्यवाही ब्यूनस आयर्स में अगस्त 1 – 4, 2012 के दौरान आयोजित आईएसए के दूसरे समाजशास्त्र फोरम में लगभग 20 प्रस्तुतीकरण, परिचर्चा तथा गोलमेज सत्रों का आयोजन रही। इन सत्रों ने हमें अवसर दिये कि हमः लामबन्दी (mobilization) तथा सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र में होने वाले सैद्धान्तिक उपागमों में आने वाले नवीन परिवर्तनों को सीखने का, रचनात्मकता की भूमिका तलाशने का; विरोध कार्य में शरीर तथा भावनाओं का, अन्याय तथा बहिष्करण के दृष्य प्रस्तुतिकरण का विश्लेषण करने का; विज्ञान, तकनीकी तथा सामाजिक संगठन के मध्य सम्बन्धों को समझने का, और सबसे उपर लैटिन अमेरीकी गलियों की आवाज सुनने का।

यहाँ पर मैं, अर्जेन्टीना, चिली, ब्राजील, कोलम्बिया, मैक्सिको, बोलिविया तथा इक्वाडोर में हुए सामाजिक आन्दोलनों पर आधारित पर्चों के सैद्धान्तिक योगदान पर जोर देना चाहूँगा। उनमें, धरना देने वालों तथा विद्यार्थियों द्वारा किये गये आन्दोलन; अक्षम लोगों के, राजनैतिक हिंसा से प्रताड़ित लोगों के परिवार के सदस्यों द्वारा किये गये, अश्वेत युवाओं द्वारा किये गये, भूमिहीन श्रमिकों, बेघर लोगों तथा इसी प्रकार पडौसी कामगर वर्ग के वर्ग–संघर्षों तथा मानव तस्करी से सम्बन्धित आन्दोलन शामिल हैं। ब्यूनस आयर्स में सम्पन्न बैठक ने हमें अवसर दिया कि हम लैटिन अमेरीकी आन्दोलनों के अलावा भी कुछ कम पहचाने जाने वाले आन्दोलनों जिनका लोकतान्त्रिकीकरण तथा सामाजिक अन्याय के विरूद्ध लड़ाई में महत्वपूर्ण प्रभाव है के बारे में आमने–सामने होने वाली परिचर्चाओं को सुनें। इन सबके अलावा, ब्यूनस आयर्स विश्वविद्यालय के साथियों तथा जिनो जर्मनी इन्सटीट्यूट का धन्यवाद कि हम पुर्नबहाल किये गये कारखानों तथा मूल सामुदायिक संगठनों के सीधे सम्पर्क में आ सके। आर सी 48 द्वारा आयोजिक सत्रों में प्रस्तुत पर्चों में से बहुत से पर्चे बी. टेजेरीना तथा आई. पैरूगोरिया द्वारा सम्पादित पुस्तक Global Movements, National Grievances: Mobilizing for "Real Democracy"and Social Justice में उपलब्ध हैं। ■

> संयुक्त राष्ट्र में युवाओं की भागीदारी

जोआनी रोड्रिग्युज, जॉन जे कालेज ऑफ क्रिमिनल जस्टिस, न्यूयॉर्क, यू.एस.ए.

सन् 2012 में, संयुक्त राष्ट्र में युवाओं की उपस्थिति की आवश्यकता के विचार पर कार्य करते हुए, मैं अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय परिषद की तरफ से संयुक्त राष्ट्र के जनसंपर्क विभाग (DPI) का अनुसरण करने वाला पहला युवा प्रतिनिधि बना। मुद्दों पर बहस और चर्चा के दौरान, विचार राष्ट्रीय पहचान, प्रजाति और लिंग के कारण भिन्न होते हैं; हालांकि आयु में विविधता बहुत कम ही ध्यान में रखी जाती है। परिवर्तन और सुधार के लक्ष्य के कारण चूंकि अत्यधिक विवादास्पद मुद्दों पर चर्चा होती है, यू.एस.ए. के द्वारा शुरू की गई कई पहलों से युवाओं का वर्जन उनके लिए नुकसानदेह हो सकता है। युवाओं को शामिल करने का यह लक्ष्य स्वयं में सकारात्मक है क्योंकि यह एन.जी.ओ. और यू.एन. ध्येयों के लिए भावी अधिवक्ताओं को तैयार करता है। युवा पीढ़ी कार्यकर्त्ताओं को उनके लक्ष्य ध्येय के लिए लड़ने के लिए जनता तक पहुँचने व उनमें जागरूकता बढ़ाने के लिए युवा नई तकनीकों के प्रयोग से भी उनकी मदद कर सकते हैं।

मार्च 2012 में मैंने एक DPI / NGO की ब्रिफिंग में भाग लिया जिसमें लैंगिक समानता को आगे बढ़ाने हेतु बुनियादी जल स्वच्छता को प्रयोग में लाने हेतु आयोजित पेनल चर्चा में एक फेलिशयन कॉलेज छात्र सम्मिलित थी। एक युवा की दुर्लभ उपस्थिति हालाँकि प्रेरणादायक थी, परन्तु जैसे ही उसने फेसबुक को इस्तेमाल करने की चेष्टा की, श्रोताओं का तत्काल विसंबंधन हो गया। सेल फोन को निकालने के उसके निर्देशों के प्रति श्रोता अनुत्तरदायी थे और एक बुजुर्ग महिला ने कहा, "मुझे तो टैक्सट करना भी नहीं आता हैं।" एक तरफ जहाँ युवा एन.जी.ओ. उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए एक तरीके के रूप में सामाजिक मीडिया के प्रयोग के लिए आश्वस्त हों, आज के सक्रिय कार्यकर्त्ता मुद्दों पर जागरूकता विकसित करने के आधुनिक तरीकों के साथ समान अंतरंगता नहीं रखते हैं।

युवाओं को यू.एन. आंदोलनों में शामिल होने के लिए प्रेरित करना महत्वपूर्ण है क्योंकि सोशल मीडिया और तकनीक को एन. जी. ओस अनगिनत तरीकों से लाभ पहुँचाने में काम में लिया जा सकता है। हालांकि, युवाओं को सफलतापूर्वक जोड़ने और हमारी दक्षता को काम में लाने के लिए, हमें मुद्दों के साथ सम्बद्ध होना आवश्यक है। पहला एन.जी.ओ. कार्यक्रम जिसमें मैंने भाग लिया बालकों के यौनीकरण पर चर्चा कर रहा था क्योंकि कुछ संगठन यौन शिक्षा को मानवाधिकार के रूप में स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं। जब प्राथमिक शिक्षा में समलैंगिकता और यौन शिक्षा के प्रति नकारात्मक मत प्रस्तुत किए गये तो मुझे यह अहसास हुआ कि यह ब्रीफ मेरी पीढ़ी का ध्यान शायद ही आकर्षित कर पायेगी। युवाओं की रूचि खत्म करने के दो तरीके हैं, हमें बोर करो या फिर भाषण दो।

एन.जी.ओ. कार्यकर्त्ताओं और उभरते युवा आंदोलनों के बीच की इस अदृश्य दीवार को ढहाने से यू.एन. को दोनों का श्रेष्ठ प्राप्त हो सकता है जो कि परिवर्तन और सुधार के लिए मानवीय प्रयासों को लाभ पहुँचा सकता है। ■

> वास्तविक बैडिक

एरिन स्नाईडर, टेम्पल विश्वविद्यालय, यूएसए

दृष्य सामाजशास्त्र के लिए **एरिन स्नाईडर** ने 2012 में राचेल टानूर मेमोरियल पुरुस्कार प्राप्त किया था। यह द्वैवार्षिक पुरुस्कार सोशल साइन्स रिसर्च काउन्सिल द्वारा मार्क फैमिली फंड के अनुदान से दिया जाता है। आईएसए की दृष्य सामाजशास्त्र के विषयात्मक समुह (TG 05) के सदस्य इस पुरस्कार के निर्णायक मण्डल के सदस्य होते हैं और टीजी 05 आईएसए की बैठकों में 2008 से इस पुरुस्कार वितरण समारोह की मेजबानी कर रही है। राचेल टानूर मेमोरियल पुरस्कार से सम्बन्धित अन्य जानकारियां http://www.racheltanurmemorialprize.org. पर देखी जा सकती हैं

दक्षिण पूर्वी सेनेगल की बैडिक महिलाएं प्रतिदिन चार से छः बार अपने समुदाय के लिए पास के कूए से पानी खींचती हैं। उनके पैरों ने उनके पहाडी गांव तक लाल धरती पर पगडंडी बना दी है तथा चटटानों को घिस कर समतल बना दिया है । एक गर्म दोपहर में इन्डर गांव की कुछ महिलाओं ने मुझे फोटो लेने के लिए आमंत्रित किया। उनके साथ चलते हुए जबकि वे आराम से बतियाते हुए चल रही थीं, मैने डेनिस और मैरी का यह चित्र लिया। यह चित्र बैडिक गांव के सांस्कृतिक पर्यटन पर एक वृहत मानवजाति विज्ञान सम्बन्धी परियोजना के हिस्से के रुप में लिया गया था। बैडिक अपनी संस्कृति का पर्यटकों के समक्ष प्रतिनिधित्व किस प्रकार करना चाहते हैं और वे अपनी बैडिक पहचान को किस प्रकार दिखाना चाहते हैं इस अन्वेषण के लिए सहयोगात्मक फोटोग्राफी की गई थी। ग्रामीणों नें मुझे सलाह दी कि बैडिक महिलाओं के चित्र उनके परम्परागत वस्त्रों तथा केशविन्यास में और परम्परागत कार्यों को करते हुए लिए जाऐं। इसलिए मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ कि डेनिस और मैरी का यह चित्र बैडिकों के द्वारा पसन्द किया गया। फिर भी मुझे कौतुहल हुआ जबकि ग्रामीणों ने दृढतापूर्वक घोषित किया कि ये महिलाऐं वास्तविक बैडिक "le vrai Bedik" हैं।

कितना भी अवास्तविक अथवा मायावी हो, यह चित्र इस बोध को स्वीकार करता है कि बैडिक गांव अभी भी वैश्वीकरण की ताकतों से बचे हुए इमानदार रहे हैं। इससे भी ज्यादा यह चित्र नारी श्रम की पूजा को दुहराता है, जिसमें मूलतः यह भाव है कि पनिहारिन महिलाऐं अफ्रीकन वास्तविकता को सूचित करती हैं। डेनिस और मैरी को वास्तविक बैडिक बतलानें के साथ ही बैडिक अपनी सांस्कृतिक विरासत की अपनी वास्तविकता को भी सुसंगत रुप से परिभाषित करते हैं जिसमें कि महिलाऐं सांस्कृतिक ज्ञान की आदरणीय मालिक हैं। कैमरे पर उनके शरीर का पीठ वाले हिस्से के दिखावे वाले चित्रों का दोहरान एक निश्चित गुमनामी निर्मित करती है; वे बैडिक महिलाओं की मजबूती को प्रदर्शित करते हैं, और अधिक विस्तार के साथ बैडिक संस्कृति की सहनशक्ति को भी। इस चित्र से पता चलता है कि बैडिक महिलाऐं लिगंभेद की प्रमाणिकता का वजन अपने कधों पर लिए हुए है, और वे ऐसा आदतन एवं कुशलता से कर रही हैं। ■